अब हम आज़ाद हैं

सडबरी वैली स्कूल

डेनियल ग्रीनबर्ग

अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

अब हम आज़ाद हैं

सडबरी वैली स्कूल

डेनियल ग्रीनबर्ग

अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एकलव्य का प्रकाशन

अब हम आज़ाद हैं – सडबरी वैली स्कूल
AB HUM AZAD HAIN - SUDBURY VALLEY SCHOOL
लेखकः डेनियल ग्रीनबर्ग
अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
फोटोः माइकल ग्रीनबर्ग, एंड्रयू ब्रिलियंट, कैरोल पामर व अन्य

© दिसम्बर 2013
इस किताब के किसी भी भाग का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से मुफ्त वितरण के लिए कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार की अनुमति के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

संस्करणः दिसम्बर 2013/ 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 70 gsm नेचुरल शेड और 300 gsm आर्ट कार्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट एवं नवजबाई
रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-93-81300-71-8
मूल्यः ₹ 100.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in/books@eklavya.in

मुद्रकः भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल - 462 016 (म.प्र.) फोनः 0755-2463769

हान्ना को

साथ मिलकर हमने कई सपनों को हकीकत में ढाला

1862

"सीखने में स्कूल के अहस्तक्षेप से क्या तात्पर्य है?... [इसका मतलब है] बच्चों को पूरी आज़ादी देना ताकि वे उस शिक्षा का लाभ उठा सकें जो उनकी ज़रूरतों को पूरा करती हो और जिसे वे चाहते हों, केवल उस हद तक जितनी उनकी ज़रूरत और इच्छा हो; और इसका मतलब है उन्हें वह सीखने पर बाध्य न करना जिसकी उन्हें ज़रूरत न हो या जो वे न चाहते हों...."

"मुझे शंका है कि [जिस प्रकार के स्कूल की मैं चर्चा कर रहा हूँ] वैसे स्कूल आगामी एक शताब्दी तक आम हो सकेंगे। यह सम्भव नहीं लगता...कि विद्यार्थियों की चयन की आज़ादी पर आधारित स्कूल आज से सौ सालों बाद भी स्थापित हो सकेंगे।"

काउंट लिओ तॉलस्तॉय, "शिक्षा एवं संस्कृति"

1968

"यह निगम इस उद्देश्य से गठित हुआ है कि समुदाय के सदस्यों को शिक्षा देने के लिए एक ऐसा स्कूल स्थापित व कायम किया जाए जो इस सिद्धान्त पर आधारित हो कि स्व-प्रेरणा, आत्म-नियमन तथा आत्मालोचना द्वारा बेहतर तरीके से सीखा जा सकता है...."

सडबरी वैली स्कूल का उप-नियम

अनुक्रम

भूमिका.. 7

प्राक्कथनः किसी को आवेदन करने की ज़रूरत नहीं है 14

भाग 1 : सीखना

1. और अंकगणित 18
2. कक्षाएँ... 22
3. लगन... 26
4. जादूगर का शागिर्द.. 30
5. पढ़ना, लिखना.. 35
6. मछली पकड़ना... 40
7. नूह की नाव.. 44
8. रसायनशास्त्र.. 48
9. हम शिकार को जाएँगे... 51
10. विशेष खर्चे... 55
11. नए शौक तथा फैशन.. 59
12. स्कूल के निगम.. 62
13. विवेकाधीन खाते.. 66
14. पाक कला... 69
15. आयु मिश्रण.. 73
16. खेल.. 79

17. पुस्तकालय.. 83
18. पर्याप्त समय.. 87
19. सीखना... 91
20. मूल्यांकन... 95
21. विद्युत-छड़.. 99

भाग 2 : स्कूली जीवन

22. स्कूल की बैठक.. 104
23. खतरे.. 108
24. निष्ठा प्रणाली... 112
25. खेलकूद परिदृश्य.. 117
26. शिविर... 121
27. समितियाँ तथा क्लर्क.. 125
28. साफ-सफाई... 129
29. चमत्कारिक बजट... 134
30. स्टाफ 139
31. नन्हे-मुन्ने.. 147
32. 'अच्छे बच्चे' और 'गड़बड़ करने वाले'.......................... 151
33. माता-पिता... 156
34. आगन्तुक.. 159
35. सबके लिए आज़ादी और न्याय.................................... 165
36. विषय का मर्म... 174
उपसंहारः खीर का प्रमाण.. 178

भूमिका

हरेक विचारशील शिक्षक उन बुनियादी सवालों से जूझता है जो इस पेशे की शुरुआत से ही लगातार बने रहे हैं: पढ़ाने या सीखने का सबसे बढ़िया तरीका क्या है? कौन से विषय बच्चों को सीखने चाहिए? बच्चे कितने ज़िम्मेदार होते हैं? वे जो कुछ करते हैं उसे तय करने में उनकी कितनी चलनी चाहिए? किसी लोकतांत्रिक समाज में स्कूल किस तरह चलाए जाने चाहिए? हममें से अधिकांश के लिए ये सवाल सैद्धान्तिक ही रह जाते हैं। एक शिक्षा प्रणाली हमें विरासत में मिलती है और हम अपनी कल्पनाओं को वास्तविक दुनिया में साकार नहीं कर सकते। हमारे पास जो कुछ मौजूद है उसके श्रेष्ठतम को बचाना चाहिए, और मौजूदा व्यवस्था में बिना सोचे-समझे हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

यदाकदा लोगों का कोई समूह, जो परम्परा से प्रभावित नहीं होता, ये प्रश्न पूछता है और उनके नए क्रान्तिकारी उत्तर इस ढंग से प्रस्तावित करता है कि उन्हें सब देख सकें। ऐसे प्रयोग स्वीकृत मतों को पूर्णतया नई दृष्टि से देखने और नए नियमों को लागू कर आज़माने में खास तौर से कीमती सिद्ध होते हैं।

1968 में फ्रेमिंग्हैम, मैसाच्युसेट्स में एक अनोखा प्रायोगिक स्कूल स्थापित किया गया। सडबरी वैली स्कूल ने, जो 4 से 19 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए खुला है, कई तरह के बेहद नवाचारी तौर-तरीकों को प्रारम्भ किया। इसके काम को व्यापक ख्याति मिली है और यह ऐसा पहला स्कूल बना जिसे पूर्ण रूप से अधिकृत मान्यता मिली हो।

सडबरी वैली का *सबसे* रोचक पक्ष है सीखने के प्रति उसका नज़रिया। स्कूल उस आधार-वाक्य से अपनी यात्रा शुरू करता है जिसकी घोषणा अरस्तू ने दो हज़ार से भी अधिक वर्ष पूर्व अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *मैटाफिज़िक्स* (तत्व मीमांसा) की शुरुआत में की थीः "इन्सान नैसर्गिक रूप से जिज्ञासु होता है।" इसका निहितार्थ यह है कि लोग निरन्तर, जीने के एक स्वाभाविक अंग के रूप में, सीखते हैं। इसका अर्थ यह भी है कि बच्चे अपने स्वाभाविक रुझानों का अनुपालन करते हुए पूरे दिन, और प्रत्येक दिन, अपने समय के साथ जैसा वे करना चाहते हैं करते हुए सीखेंगे। उनकी उम्र चाहे कुछ भी हो, जिस पल से विद्यार्थी स्कूल में प्रवेश करते हैं, वे स्वयं के भरोसे होते हैं, और इस तरह अपनी ज़िम्मेदारी स्वयं उठाने और अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने वाले तमाम कठिन निर्णय लेने पर बाध्य होते हैं। अपने शिक्षक समूह, भौतिक स्वरूप, उपकरणों तथा पुस्तकालय के साथ, स्कूल एक ऐसा संसाधन है जो चाहने-माँगने पर उपलब्ध होता है, पर ऐसा न किया जाए तो निष्क्रिय रहता है। यहाँ जो विचार है वह सरल हैः स्वाभाविक जिज्ञासा, जो कि मानव स्वभाव का सार-तत्व है, के प्रभाव में बच्चे अपने आसपास की दुनिया की पड़ताल करने और उसे पूरी तरह समझ लेने के भारी प्रयास करेंगे।

असल में होता क्या है? हरेक बच्चा बुनियादी चीज़ें सीख लेता है – पर अपनी गति से, अपने समय से और अपने ही तरीके से। कुछ बच्चे पाँच साल की उम्र में पढ़ना सीखते हैं, तो कुछ दस साल की उम्र में। कुछ शिक्षकों या दूसरे विद्यार्थियों से ज़्यादा अच्छी तरह सीख पाते हैं, तो दूसरे अपने आप ही सबसे अच्छी तरह सीखते हैं। किसी भी एक दिन हर उम्र के बच्चों को साथ-साथ सीखते, बातचीत करते, खेलते-बढ़ते देखा जा सकता है। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं उनमें अपनी अस्मिता और भविष्य के निश्चित लक्ष्यों की एक मज़बूत भावना विकसित होती जाती है। जब वे स्कूल छोड़कर जाते हैं तो वे विविध प्रकार की गतिविधियों से जुड़ते हैं – देश भर में फैले विभिन्न पेशों, धन्धों, व्यापारों और कॉलेजों से। यह सब उस शैक्षिक परिदृश्य में होता है जहाँ विद्यार्थी स्वयं ही तय करते हैं कि उन्हें क्या करना है और कैसे आगे बढ़ना है।

तमाम सम्मोहक नवाचारों में एक है व्यवस्थात्मक ढाँचा। स्कूल एक विशुद्ध लोकतंत्र के रूप में स्कूल बैठक द्वारा शासित होता है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी

तथा स्टाफ के सदस्य के पास एक वोट होता है। स्कूल का हरेक पक्ष, बिना किसी अपवाद के, इसी प्रकार संचालित होता हैः नियम, बजट, प्रशासन, नौकरी देना और बर्खास्त करना, तथा अनुशासन। इसका परिणाम है एक सुसंचालित संस्था जिसमें हरेक का दाँव है, एक ऐसा भौतिक संयंत्र जो तोड़फोड़ तथा दीवार पर लिखी इबारतों से मुक्त है, तथा खुलेपन व परस्पर विश्वास का ऐसा वातावरण जो किसी भी आकार के स्कूल में आज उपलब्ध नहीं है। इस सबके साथ यह स्कूल किसी भी सरकारी या न्यासी सहायता के बिना चलता है, ऐसे शुल्क पर जिसकी राशि सार्वजनिक स्कूलों में प्रति विद्यार्थी व्यय से लगभग आधी है और स्वतंत्र निजी स्कूलों से तो कहीं कम।

इस स्कूल के बारे में समझाने का सबसे आसान तरीका शायद यह समझाना हो कि हम किसी शैक्षणिक संस्था में क्या देखना चाहते थे और उसे हासिल करने के लिए हमने क्या किया। दरअसल हम कई भिन्न-भिन्न चीज़ें चाहते थे और हमने पाया कि वे सभी एक-दूसरे से मिलकर एक ही समग्र इकाई बनाती हैं।

जहाँ तक सीखने और सिखाने का सवाल था, हम यह चाहते थे कि लोग केवल वह सीख सकें जिसे सीखने को वे आतुर हों – जिसे सीखने की पहल वे स्वयं करें, जिसे सीखने पर वे आमादा हों, और जिसके लिए वे मेहनत करने को तैयार हों। हम चाहते थे कि वे अपनी सामग्रियों, और पुस्तकों, और शिक्षकों को चुनने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हों। हमने महसूस किया कि जीवन में वही सीखना महत्व रखता है जिसके लिए सीखने वाला स्वयं को किसी विषय में झोंक देता है, बिना किसी के उकसाए, बिना घूस या दबाव के। और हम आश्वस्त थे कि आतुर, संकल्पित व आग्रही विद्यार्थियों के साथ काम करने वाले शिक्षक असामान्य सन्तुष्टि अनुभव करेंगे। दरअसल हमने सोचा था कि ऐसा वातावरण विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों के लिए स्वर्ग ही होगा।

अपने प्रति ईमानदार बने रहने के लिए हमें पाठ्यचर्या या स्कूल-प्रेरित कार्यक्रम की किसी भी धारणा से दूर रहना था। सारा उत्साह विद्यार्थियों की ओर से आना था और स्कूल को उसके अनुकूल सहयोग देना था। हरेक व्यक्ति की गतिविधियों की पूरी ज़िम्मेदारी उसी व्यक्ति पर ही होनी थी, ना कि किसी ऐसे व्यक्ति पर जो सत्ता के पद पर हो। यही कारण था कि हमारे

पास किसी भी स्तर के लिए आवश्यक अध्ययन कभी भी नहीं रहा है। हमने यह समझ लिया कि स्कूल में उपलब्ध मदद से हरेक विद्यार्थी अपने आप यह पता लगा लेगा कि जीवन में वह जो पाना चाहता है उसके लिए क्या जानना आवश्यक है और क्या नहीं।

यह समझ उन चारित्रिक गुणों के साथ काफी निकटता से जुड़ी हुई थी जिन्हें हम पोषित करना चाहते थे। और किसी भी चीज़ से अधिक हम यह चाहते थे कि लोग ज़िम्मेदारी के समूचे अर्थ का अनुभव करें। हम चाहते थे कि वे यह बखूबी जान लें कि एक ज़िम्मेदार व्यक्ति होना दरअसल क्या होता है – केवल किताबों, या भाषणों, या उपदेशों से नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के अनुभवों से।

जिस तरीके से हमने इसे देखा, ज़िम्मेदारी का अर्थ है अपनी गठरी खुद ही उठाना। तुम्हें अकेले ही अपने निर्णय करने होंगे और उन निर्णयों के परिणाम भुगतने होंगे। कोई भी तुम्हारी ओर से नहीं सोचेगा और तुम्हें उन परिणामों से नहीं बचाएगा जो तुम्हारे व्यवहार से निकले होंगे। हमें लगा कि यदि आप स्वतंत्र, स्व-निदेशित और अपनी किस्मत के मालिक खुद बनना चाहते हैं तो यह अति आवश्यक है।

व्यक्तिगत दायित्व का अर्थ सभी लोगों में एक बुनियादी समानता स्वीकारना भी होता है। ऐसे में जो भी सत्ता अस्तित्व में हो वह सभी पक्षों की स्वतंत्र सहमति से होनी चाहिए। बेशक, यह नई बात नहीं है – हमारा देश (संयुक्त राज्य अमेरिका) भी इसी सिद्धान्त पर गढ़ा गया था। हमारे लिए तो यह सिद्धान्त रोज़मर्रा के कामकाज को दिशा देने के लिए था।

एक ज़िम्मेदार व्यक्ति की परिकल्पना में कई अवधारणाएँ शामिल होती हैं, और ये सभी अवधारणाएँ एक मुक्त व स्वतंत्र व्यक्ति बनने की कला सीखने से जुड़ी होती हैं। हमारे दिमाग में जिस स्कूल की परिकल्पना थी उसकी जड़ में यही विचार था। हरेक व्यक्ति की सम्पूर्ण व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी और जवाबदेही से कम में हमें सन्तुष्टि नहीं होने वाली थी, फिर चाहे उसकी आयु, या ज्ञान, या उपलब्धि चाहे कुछ भी क्यों न हो। हम जानते थे कि इस प्रकार लोग गलतियाँ करेंगे – पर उन्हें यह एहसास भी होगा कि उनके द्वारा की गई गलतियाँ उनकी अपनी हैं और इससे उनके सीखने की गुंजाइश बढ़ेगी। हमें लगा था कि स्वस्थ लोग अपनी असफलताओं से भी फायदा उठाने के उतने

ही तरीके तलाश लेंगे जितने अपनी सफलताओं से। हमारा विश्वास था कि लोग जो चाहें उसे आज़माने देना अच्छा है, चाहे उन्हें सफल होने का भरोसा हो या न हो, ताकि उनकी अप्रत्याशित चुनौतियों का सामना करने की या अप्रत्याशित अवसरों को थाम लेने की तैयारी रहे।

हम जिन चारित्रिक गुणों को पोषित करना चाहते थे वे स्कूल के सामान्य वातावरण में व्याप्त होंगे, ऐसी हमारी उम्मीद थी। और किसी भी चीज़ से अधिक हम एक ऐसा वातावरण बनाना चाहते थे जो खुला, ईमानदार, विश्वसनीय व भय-मुक्त हो। हमारा लक्ष्य था एक ऐसा स्कूल जहाँ कोई भी भयभीत न हो, कम से कम किसी ऐसी चीज़ से जो हमने की हो।

शक्ति और सत्ता का भय ही वह चीज़ थी जिसे हम स्कूल से दूर हटाना चाहते थे। हमारा सरोकार यह नहीं था कि लोगों के पास सत्ता है या नहीं। सत्ता अपने आप में अच्छी या बुरी, दोनों ही तरह की हो सकती है और यह कई बातों पर निर्भर होती है। कुछ परिस्थितियों में ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो सत्तावान हों – उदाहरण के लिए, जब कोई प्रशिक्षु सीखने जाता है, या किसी धन्धे-व्यवसाय में।

मुख्य प्रश्न यह है कि लोग अपनी सत्ता किस प्रकार पाते हैं, और हासिल हो जाने पर उसे किस प्रकार नियंत्रित किया जाता है। आप सत्ता के पद पर आसीन लोगों से नहीं डरते यदि आप यह समझते हों कि वे उस पद पर क्यों हैं, यदि उन्हें वहाँ पहुँचाने में आपका हाथ रहा हो, यदि आप उनके सभी क्रियाकलापों पर नज़र रखते हों। आपको जिससे भय लगता है वह है निरंकुश सत्ता, ऐसी सत्ता जो आपको भागीदारी करने से वंचित रखती है, ऐसी सत्ता जिस पर आपका कोई नियंत्रण न हो। हम संकल्पित थे कि स्कूल में किसी भी व्यक्ति के लिए, चाहे वह विद्यार्थी हो, शिक्षक हो, अभिभावक हो या मेहमान, स्कूल से सम्बन्धित किसी व्यक्ति की सत्ता से भयभीत होने का कोई कारण न हो। किसी भी दूसरी बात से अधिक, यह बात किसी व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति की आँखों में सीधा देखने की हिम्मत देगी फिर चाहे उसकी आयु या लिंग या पद या ज्ञान या पृष्ठभूमि कुछ भी क्यों न हो।

जहाँ तक हमारा सवाल था, हमें लगता था कि अपने कामों को संचालित करने का जो सबसे बढ़िया तरीका लोगों ने ईजाद किया है वह है लोकतांत्रिक सरकार। यह सभी लोगों को समान रूप से स्वतंत्र रहने की सर्वाधिक

सम्भावना उपलब्ध कराती है। जिन मसलों पर सामूहिक रूप से कदम उठाने की दरकार पड़े, वहाँ यह सबको निर्णय प्रक्रिया में पूरी भागीदारी का अवसर देती है। हमें लगा कि न्यू इंग्लैंड की नगर बैठकों में पिछले तीन सौ सालों से भी अधिक से जिस तरह का लोकतंत्र अभ्यास में रहा है, सरकार के उस उम्दा स्वरूप से बेहतर कुछ दूसरा नहीं हो सकता। जिस तरह के स्कूल की परिकल्पना हमारे मन में थी वह इसी नगर बैठक के मॉडल पर आधारित होनी थी। किसी को भी बाहर नहीं छोड़ा जाना था।

हमने सोचा कि जिस देश में सरकार के सभी रूप लोकतांत्रिक हों वहाँ एक स्कूल को लोकतांत्रिक विधि से संचालित करना अच्छा विचार है। छोटे से छोटे कस्बे से लेकर संघीय स्तर तक हमारी सभी संस्थाएँ किसी न किसी रूप में लोकतांत्रिक विधि से ही नियंत्रित होती हैं। हमने खुद से पूछा कि फिर स्कूल भी इसी तरह क्यों नहीं चलाए जा सकते? और जितना अधिक हमने इस विषय पर सोचा उतना ही हमें लगने लगा कि उन्हें भी ठीक ऐसे ही संचालित किया जाना चाहिए। एक लोकतांत्रिक स्कूल में समुदाय के वयस्क सदस्य नागरिकता के ठीक उन्हीं मानकों को लागू कर सकते हैं जो वे अपने बाहरी जीवन में करते हैं। और स्कूल के बच्चे उन सिद्धान्तों तथा कार्य प्रणालियों को सीखते हुए पल-बढ़ सकते हैं जो लोकतांत्रिक जीवनशैली बनाती हैं। ऐसे में जब तक वे वयस्क बनेंगे, ज़िम्मेदार सामुदायिक नागरिकता उनके लिए स्वाभाविक बन चुकी होगी क्योंकि वे उसके साथ लम्बा अर्सा गुज़ार चुके होंगे।

जब हमने उन सब विभिन्न चीज़ों का जायज़ा लिया जो हम अपने स्कूल में चाहते थे, तो हमने पाया कि वे सब दरअसल एक ही मूल विचार का हिस्सा हैं जो शेष सभी बातों को स्वाभाविक रूप से दिशा देता रहता है।

यह विचार एक ऐसे स्कूल का था जहाँ लोग अपने मामलों का प्रबन्धन बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के करते हों, और जहाँ वे अपने साझे मसले – यानी स्कूल का कामकाज – एक प्रकार की नगर बैठक के मार्फत संचालित करते हों।

तो बात इतनी सरल थी, और उसमें सीखने का वह विचार भी निहित था जिसे हम चाहते थे; उससे वे चारित्रिक गुण पुष्ट हो सकते थे जिन्हें हम

उभारना चाहते थे; इससे वह वातावरण साकार हो सकता था जिसकी परिकल्पना हमने की थी; और इसमें वह ढाँचा भी मौजूद था जो हमें वांछनीय लगता था।

1968 में जब यह स्कूल प्रारम्भ हुआ उससे पहले कई लोगों ने कहा कि हम कोरे सपने देखने वाले हैं, कि स्कूल की हमारी परिकल्पना अव्यावहारिक है। परन्तु अब यह सालों से अस्तित्व में है, सबकी नज़रों के सामने।

सडबरी वैली में आकर कैसा महसूस होता है? मुख्य इमारत पत्थरों से बना भवन है जो सैकड़ों साल पहले स्थानीय ग्रेनाइट पत्थरों से बनाया गया था। उसके इर्द-गिर्द दस एकड़ भूमि में लॉन, पेड़-पौधे व फूलों की झाड़ियाँ हैं। परिसर के एक छोर पर एक बड़ा खलिहान और अस्तबल है, जिसे स्कूल उपयोग के लिए बदल दिया गया है। दूसरे छोर पर पनचक्की-ताल के सम्मुख ग्रेनाइट का एक पनचक्की-भवन है। यह मिट्टी और पत्थरों से बने एक बाँध के पास है जिसके ऊपर एक पुराना ढका हुआ लकड़ी का पुल है। परिसर के चारों तरफ, जहाँ तक आँखों से दिखाई देता है, सैकड़ों एकड़ में स्टेट पार्क तथा संरक्षित भूमि, खेत, जंगल, दलदल और उठती-गिरती पहाड़ियाँ हैं। ये सभी चीज़ें साल की विभिन्न ऋतुओं के परिवर्तनशील रंगों और वनस्पति को प्रतिबिम्बित करती हैं।

यह जगह किसी स्कूल जैसी दिखती या लगती ही नहीं है। मानक 'स्कूल संकेतक' गायब हैं। यह जगह घर जैसी ज़्यादा लगती है जहाँ कई लोग विविध गतिविधियों में व्यस्त नज़र आते हैं। वे संकल्पित पर सहज लगते हैं। यहाँ का फर्नीचर, लोग और माहौल वैसा नहीं है जिसकी उम्मीद हो। आगन्तुक अक्सर बौखला जाते हैं; वे उस सब के लिए नज़र दौड़ाते हैं जो वे स्कूल में देखना चाहते हैं, पर वह उन्हें यहाँ नज़र नहीं आता।

यह पुस्तक ऐसा प्रयास है जिससे सभी को सडबरी वैली को 'देखने' में मदद मिले। इसमें स्कूल के प्रारम्भिक बीस वर्षों के जीवन से लिए गए व्यक्तिगत अनुभवों का खज़ाना है। यह पुस्तक शिक्षा दर्शन या आचार की पोथी नहीं है, न ही यह स्कूल का औपचारिक इतिहास है। वरन् यह शिक्षा के इतिहास में एक अनूठे प्रयोग की मानवीय कथा है।

सडबरी वैली स्कूल प्रेस

प्राक्कथन

किसी को आवेदन करने की ज़रूरत नहीं है

मुलाकातों का समय निकल चुका था।

दिसम्बर माह तक, जो कोई भी कनेक्टिकट के मिडलटाउन में स्थित वेसलेयन विश्वविद्यालय में अध्ययन करने की आशा रखता था, कब का अपना आवेदन भेज चुका था और प्रवेश साक्षात्कार की व्यवस्था भी कर चुका था। दिसम्बर तक आवेदन के लिए बहुत देर हो चुकी थी। निश्चित तौर पर इस वक्त किसी से भी मिलना सम्भव नहीं था।

पर इससे लीसा रुकी नहीं। हर सुबह नौ बजने के कुछ ही देर बाद वह फोन उठा वेसलेयन प्रवेश कार्यालय का नम्बर घुमाती। हर सुबह कोई सचिव उसका फोन लेती और कहती, "कोई खाली जगह नहीं है।" जल्दी ही प्रवेश कार्यालय के सभी लोग उसकी आवाज़ और सतत आग्रह से परिचित हो गए। वह उनसे गपशप करती, उन्हें मनाती, और विनती करती। हफ्ते दर हफ्ते।

उसने समय रहते आवेदन क्यों नहीं किया, वे पूछते। उसने किया था, उसका जवाब रहता – पर वेसलेयन में नहीं। उसके अन्य आवेदन वह कब के पूरे कर चुकी थी। पर बस अभी उसकी एक सहेली और शिक्षक ने उसे कहा था कि उसे वेसलेयन को भी देख लेना चाहिए, जो उसके लिए बिलकुल सही शाला थी। वह परिसर देख आई थी, वहाँ के लोगों से उसने बातचीत भी की थी, और उसने महसूस किया कि उसकी सहेली ने ठीक कहा था। वेसलेयन उसके लिए था। *उसे* यह पता था, और उसका आवेदन चाहे कितनी भी देर

से क्यों न पहुँचा हो, उसने तय कर लिया था कि वेसलेयन भी यह जान ले।

इसके लिए साक्षात्कार अत्यावश्यक था। प्रवेश देने से पूर्व उन्हें सीधे उसका मूल्यांकन करना था, उसकी आँखों में झाँकना था, देखना था कि वह दरअसल क्या और कौन है। बेशक उसने सब अपेक्षित आलेख और उत्तर छपे हुए प्रपत्र में लिखे थे। पर उसका आवेदन एक अर्थ में डरावने रूप से भिन्न था।

उसमें किसी प्रकार के ग्रेड, प्रतिलिपियाँ और लिखित मूल्यांकन नहीं थे। उसके इतने स्कूली वर्षों से एक भी नहीं।

लीसा सडबरी वैली स्कूल में पढ़ी थी। उसने वहाँ कई चीज़ें सीखी थीं। पर एक बात जो उसने इस सबके अलावा सीखी थी, वह थी अपने लिए सब कुछ खुद ही करना।

आठ जनवरी। "हमारे यहाँ एक जगह खाली हुई है। क्या आप आगामी मंगलवार को सुबह नौ बजे आ सकती हैं? प्रवेशों के डीन स्वयं आपसे मिलेंगे।" हर्षोन्माद। बेशक वह अगले मंगल को, किसी भी दिन, किसी भी समय आ सकती है।

वह वेसलेयन कार्यालय में पहुँचती है। सब उसे देखने मुड़ते हैं। तो यह है वह लड़की जिसने कभी फोन करना बन्द नहीं किया, जिसने कभी हार न मानी। वे मुस्कुराते हैं, गर्मजोशी से उसका स्वागत करते हैं। डीन जानते हैं।

वह डीन के कार्यालय में पन्द्रह मिनट की भेंट के लिए घुसती है। दूसरे आवेदनकर्ता अपने-अपने समयानुसार मुलाकात करने के लिए इन्तज़ार कर रहे हैं। चौथाई घण्टा अन्दर गुज़र जाता है। लीसा नहीं निकलती। आधा घण्टा। पौना घण्टा। वहाँ अन्दर आखिर हो क्या रहा है? आखिरकार एक घण्टे बाद डीन उसके साथ बाहर निकलते हैं, दोनों हँस रहे हैं। वे इन्तज़ार में बैठी लीसा की माँ के पास जाते हैं। डीन इतना ही कहते हैं, "आशा करता हूँ कि लीसा यहाँ आना तय करेगी। मुझे लगता है यह उसके लिए सही जगह है।"

आवेदन और साक्षात्कार कारगर सिद्ध होते हैं। बारह वर्ष की स्कूली शिक्षा शक्तिशाली सारतत्व में बदल गई, उसने वह हासिल कर लिया जो वह पाना

चाहती थी। उसे प्रवेश के लिए आमंत्रित किया जाता है। वह आमंत्रण स्वीकार कर लेती है।

सडबरी वैली का प्रत्येक वह स्नातक जिसने कॉलेज में प्रवेश लेने की इच्छा की, उसके पास कुछ ऐसी ही कहानी है। सभी को स्वीकार कर लिया गया, अधिकांश को अपने प्रथम विकल्प वाले कॉलेज में। कइयों को आमंत्रित किया गया। किसी के भी पास किसी भी प्रकार के पर्चे या मानक मूल्यांकन या अनुमोदन प्रपत्र नहीं थे।

उनके पास कुछ अधिक था। उनके पास उनकी आन्तरिक ताकत थी, अपना आत्मज्ञान था, अपना संकल्प था। और हर बार प्रत्येक कॉलेज कार्यालय में जहाँ उन्होंने आवेदन किया था, लोगों ने सोचा था, "यह भला कैसा स्कूल है जहाँ से ऐसे लोग निकलते हैं? सडबरी वैली भला है क्या?"

यह किताब एक ऐसे स्कूल की कहानी है जो पहले के किसी भी स्कूल जैसा नहीं है। इसने कई स्थानों का श्रेष्ठतम लिया, पर इसका नतीजा बहुत अलग रहा। वह प्राचीन और आधुनिक दोनों ही था, और चिर रहस्यमयी भी।

यह एक ऐसे स्कूल की झलक है जो कड़े व्यक्तिवाद, निजी आज़ादी तथा राजनैतिक लोकतंत्र का अड्डा है – एक ऐसा अड्डा जो न्यू इंग्लैंड के एक पुराने कस्बे में अमरीकी मूल्यों का लालन-पालन कर रहा है।

* * *

भाग 1

सीखना

1
और अंकगणित

मेरे सामने दर्जन भर लड़के और लड़कियाँ बैठे थे, उम्र थी नौ से बारह साल की। सप्ताह भर पहले उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं उन्हें अंकगणित सिखाऊँ। वे जोड़, घटा, गुणा, भाग और बाकी सब सीखना चाहते थे।

"तुम सच में यह सब करना नहीं चाहते हो," मैंने कहा, जब वे पहले-पहल मेरे पास आए थे।

"चाहते हैं, बेशक हम चाहते हैं," उनका उत्तर था।

"तुम सच में नहीं चाहते," मैं बात पर अड़ा रहा। "तुम्हारे महल्ले के दोस्त, तुम्हारे माता-पिता, तुम्हारे सगे-सम्बन्धी शायद यह चाहते हैं कि तुम सीखो, पर तुम लोग खुद तो खेलना या कुछ और करना चाहोगे।"

"हमें पता है कि हम क्या चाहते हैं और हम अंकगणित सीखना चाहते हैं। हमें सिखाइए और हम सिद्ध कर देंगे। हम सारा होमवर्क करेंगे और खूब मेहनत करेंगे।"

मुझे झुकना पड़ा, पर मैं शंकालु था। मैं जानता था कि नियमित स्कूलों में अंकगणित सिखाने में छह साल लगते हैं, और मुझे भरोसा था कि उनकी रुचि चन्द महीनों में कमज़ोर पड़ने लगेगी। पर मेरे पास विकल्प नहीं था। उन्होंने खूब ज़ोर डाला था और मैं घिर चुका था।

पर मुझे अचरज होने वाला था।

मेरी सबसे बड़ी समस्या थी एक पाठ्यपुस्तक जिसका मैं मार्गदर्शिका के रूप में उपयोग कर पाता। मैं 'नव गणित' को विकसित करने से जुड़ा रहा था और मुझे उससे नफरत हो चुकी थी। पर उस वक्त जब हम उस पर काम कर रहे थे – हम कैनेडी और उत्तर-स्पूतनिक युग के युवा अकादमिक थे – हमें कुछ भी शंकाएँ नहीं थीं। हम अमूर्त तार्किकता, समुच्च्य सिद्धान्त, संख्या सिद्धान्त और उन तमाम विलक्षण खेलों के सौन्दर्य से ओतप्रोत थे जिन्हें गणितज्ञ हज़ारों सालों से खेलते रहे हैं। सोचता हूँ कि अगर उस वक्त हम किसानों के लिए कोई कृषि पाठ्यक्रम बना रहे होते तो हम जैव रसायनशास्त्र, आनुवंशिकी तथा सूक्ष्म जीव विज्ञान से शुरुआत करते। यह दुनिया के भूखे लोगों का सौभाग्य ही था कि हमसे ऐसा करने को नहीं कहा गया।

मुझे 'नव गणित' के आडम्बर और जटिलता से नफरत हो गई थी। सौ में से एक शिक्षक और हज़ार में एक विद्यार्थी को यह पता न था कि वह सब किस बारे में था। लोगों को अंकगणित की दरकार गणना के लिए होती है; वे यह जानना चाहते हैं कि गणित के उपकरणों का कैसे उपयोग किया जाए। और यही मेरे विद्यार्थी अब जानना चाहते थे।

मुझे हमारे पुस्तकालय में एक किताब मिली जो इस काम के लिए बिलकुल सटीक थी। यह 1898 में लिखी एक गणित प्रवेशिका थी। छोटी और मोटी। उसमें हज़ारों अभ्यासों की भरमार थी जिनसे नन्हे मस्तिष्कों को बुनियादी काम सही तरीके से और तेज़ी से करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सके।

कक्षा प्रारम्भ हुई – सही समय पर। यह शर्त का ही हिस्सा था। "तुम लोग कह रहे हो कि तुम गम्भीर हो?" मैंने उन्हें चुनौती देते हुए पूछा था। "तब तुम लोग सही समय पर कक्षा में होगे – ठीक ग्यारह बजे, हर मंगल और गुरुवार को। अगर पाँच मिनट देर से आए, तो कोई कक्षा नहीं होगी। और अगर तुम दो कक्षाओं में गायब रहे – तो आगे पढ़ाना बन्द।" "बात पक्की हुई," उन्होंने कहा था; उनकी आँखों में खुशी की झलक थी।

साधारण जोड़ में दो कक्षाओं की ज़रूरत पड़ी। उन्होंने सब कुछ जोड़ना सीख लिया – लम्बे सँकरे स्तम्भ, छोटे चौड़े स्तम्भ, लम्बे चौड़े स्तम्भ। उन्होंने दर्जनों अभ्यास किए। घटाना सीखने में दो और कक्षाएँ लगीं। शायद एक से

ही काम चल जाता, पर 'उधार लेना' सिखाने में अतिरिक्त स्पष्टीकरण की ज़रूरत पड़ी।

तब हम गुणा और पहाड़ों की ओर बढ़े। सबको पहाड़े रटने थे। हरेक से कक्षा में बार-बार पहाड़े पूछे गए। तब उनके नियम। और तब अभ्यास।

सभी को नशा-सा था। वे बढ़ रहे थे। सभी तकनीकों और कलन विधियों पर महारत हासिल करते उन्हें महसूस हो रहा था कि सारी सामग्री उनकी हड्डियों में घुसे जा रही है। सैकड़ों अभ्यासों, प्रश्न-पहेलियों, मौखिक परीक्षाओं ने उनके दिमागों में सामग्री को घुसेड़ दिया।

वे फिर भी आते रहे, वे सभी। जब ज़रूरत पड़ती तो वे एक-दूसरे की मदद करते, ताकि कक्षा की रफ्तार बनी रहे। बारह साल वाले और नौ साल वाले, शेर और मेमने, शान्ति से सामंजस्यपूर्ण सहकार में बैठे – कोई छेड़छाड़ नहीं, कोई शर्मिन्दगी नहीं।

भाग, दीर्घ विभाजन। भिन्न। दशमलव। प्रतिशत। वर्गमूल।

वे ठीक ग्यारह बजे आते, आधा घण्टा रुकते, और होमवर्क के साथ चले जाते। वे अगली बार आते तो पूरा होमवर्क करके लाते। वे सभी।

बीस सप्ताह में, बीस सम्पर्क घण्टों के बाद, उन्होंने सब कुछ कर लिया था। छह सालों के बराबर काम। हरेक पूरी सामग्री को पूरी तरह जान चुका था।

हमने कक्षा की समाप्ति ज़ोरदार पार्टी से की। यह न तो पहली न ही अन्तिम बार था कि मैं हमारे चहेते सिद्धान्तों की सफलता पर चकित हुआ। वे यहाँ पूरी तरह कारगर सिद्ध हुए थे।

जो हुआ उसके लिए शायद मुझे तैयार रहना चाहिए था, क्योंकि मुझे तो वह चमत्कार ही लगा था। यह सब खत्म होने के सप्ताह भर बाद मैंने एलन व्हाइट से बात की। एलन सालों से सार्वजनिक स्कूलों में प्रारम्भिक गणित का विशेषज्ञ रहा था और वह नवीनतम व श्रेष्ठतम शिक्षण विधियों को जानता था।

मैंने उसको अपनी कक्षा की कहानी सुनाई।

उसे आश्चर्य नहीं हुआ।

"क्यों नहीं?" मैं उसकी प्रतिक्रिया से दंग था। मैं अपने "डर्टी डज़न" की गति और उनकी कार्य-कुशलता से अब तक चकराया हुआ था।

"क्योंकि सभी जानते हैं," उसने उत्तर दिया, "कि विषयवस्तु अपने आप में कठिन नहीं है। जो कठिन है, बल्कि लगभग असम्भव है, वह है उन बच्चों के दिमाग में उसे घुसाना जो इसके प्रत्येक कदम से घृणा करते हैं। इसमें सफल होने की क्षीण-सी सम्भावना का एकमात्र तरीका है हर दिन, सालों-साल तक थोड़ा-थोड़ा हथौड़ा चलाते जाना। और तब भी यह कारगर नहीं होता। छठी कक्षा के अधिकतर विद्यार्थी गणित में अनपढ़ होते हैं। मुझे ऐसा बच्चा दो जो सीखना चाहता है – बीस घण्टे, कमोबेश सही लगता है।"

मेरा खयाल है यह बात सच है। उसके बाद से इससे अधिक समय कभी नहीं लगा।

* * *

2
कक्षाएँ

हमें शब्दों के बारे में सावधानी बरतनी पड़ती है। यह चमत्कार ही है कि उनका अर्थ किन्हीं भी दो लोगों के लिए समान होता है। अक्सर ऐसा नहीं होता। 'प्रेम', 'शान्ति', 'विश्वास', 'लोकतंत्र' जैसे शब्द – प्रत्येक व्यक्ति इन शब्दों में अपने जीवन भर के अनुभव, एक विश्वदृष्टि जोड़ता है, और हम जानते ही हैं कि वे बिरले ही किसी दूसरे व्यक्ति के अनुभवों और विश्वदृष्टि के समान होते हैं।

'कक्षा' शब्द को ही लें। मुझे नहीं पता कि जिन संस्कृतियों में स्कूल नहीं होते वहाँ इसका क्या अर्थ होता है। सम्भव है कि उनके पास यह शब्द ही नहीं हो। जो पाठक यह पढ़ रहे हैं, उनके मन में यह शब्द कई बिम्ब जगाता हैः एक कमरा जिसमें 'शिक्षक' और 'विद्यार्थी' हों, विद्यार्थी डेस्क पर बैठे हों और उस शिक्षक से 'निर्देश' पा रहे हों जो उनके सामने बैठा या खड़ा हो। साथ ही यह शब्द अन्य अर्थ भी सम्प्रेषित करता हैः 'कक्षा का पीरियड,' वह तयशुदा समय जिसमें कक्षा लगती है; होमवर्क; पाठ्यपुस्तक, जो कक्षा के सब विद्यार्थियों के लिए एक समान सुस्पष्ट विषयवस्तु है।

इसके अलावा यह सम्प्रेषित करता हैः ऊब, कुण्ठा, अपमान, उपलब्धि, असफलता, स्पर्धा।

सडबरी वैली में इस शब्द का अर्थ बिलकुल भिन्न है।

सडबरी वैली में एक कक्षा दो पक्षों के बीच एक व्यवस्था है। इसकी शुरुआत एक या कई लोगों द्वारा यह तय करने के साथ होती है कि वे कुछ खास चीज़ सीखना चाहते हैं – जैसे बीजगणित, या फ्रांसीसी, या भौतिकशास्त्र, या वर्तनी, या मिट्टी के बरतन बनाना। कई बार तो वे खुद ही यह तलाश लेते हैं कि यह सीखना कैसे किया जाए। वे कोई किताब या कोई कम्प्यूटर प्रोग्राम ढूँढ निकालते हैं, या वे किसी दूसरे को करते देखते हैं। जब ऐसा होता है तो यह कक्षा नहीं होती। यह तो सीधे सीखना ही होता है।

पर ऐसा भी समय आता है जब उनसे अकेले यह नहीं हो पाता। वे मदद के लिए किसी को तलाशते हैं जो उन्हें ठीक वही देने को सहमत हो जाए जो वे चाहते हैं ताकि सीखना सम्भव हो सके। जब उन्हें ऐसा कोई मिल जाता है तो वे एक सौदा तय करते हैं: “हम यह और वह करेंगे, और तुम यह और वह करोगे – ठीक है?” अगर दोनों पक्षों को बात ठीक लगे तो उसी क्षण एक कक्षा बन जाती है।

जो लोग इस सौदे में पहल करते हैं वे ‘विद्यार्थी’ कहलाते हैं। अगर वे पहल नहीं करते तो कोई कक्षा नहीं होती। अधिकतर समय स्कूल के बच्चे खुद ही यह समझ लेते हैं कि उन्हें क्या सीखना है और वह सब खुद ब खुद कैसे

सीखना है। वे कक्षाओं का अधिक उपयोग नहीं करते।

जो व्यक्ति विद्यार्थियों के साथ सौदा करता है वह 'शिक्षक' कहलाता है। शिक्षक स्कूल के दूसरे विद्यार्थी भी हो सकते हैं। अमूमन ये वे लोग होते हैं जिन्हें इस काम को करने के लिए नियुक्त किया गया हो।

सडबरी वैली में शिक्षकों को सौदों के लिए तैयार रहना पड़ता है – ऐसे सौदे जो विद्यार्थियों की ज़रूरतों को पूरा करते हों। हमें ऐसे बहुत से लोग पत्र लिखते हैं जो स्कूल में शिक्षक के रूप में काम करना चाहते हैं। कई हमें विस्तार से बताते हैं कि बच्चों को 'देने' के लिए उनके पास कितना कुछ है। ऐसे लोग स्कूल में कुछ खास अच्छा नहीं कर पाते। हमारे लिए महत्वपूर्ण वह है जो विद्यार्थी पाना चाहते हैं, वह नहीं जो शिक्षक देना चाहते हैं। यह बात कई पेशेवर शिक्षकों को समझ नहीं आती।

कक्षा सौदे की कई तरह की शर्तें होती हैंः विषयवस्तु, समय, दोनों पक्षों के दायित्व। उदाहरण के लिए, एक सौदा करने के लिए शिक्षक को किन्हीं खास समयों पर विद्यार्थियों से मिलने को उपलब्ध होने के लिए सहमत होना पड़ता है। ये समय तयशुदा घण्टे हो सकते हैंः प्रत्येक मंगलवार सुबह 11 बजे आधा घण्टा। या वे लचीले भी हो सकते हैंः "जब भी हमारे पास सवाल हों, हम सोमवार सुबह 10 बजे उनका समाधान करने के लिए मिलेंगे। अगर सवाल न हों, तो अगले सप्ताह के लिए टाल देंगे।" कई बार सन्दर्भ बिन्दु के रूप में कोई पुस्तक चुन ली जाती है। विद्यार्थियों को भी सौदे की कुछ शर्तें पूरी करनी होती हैं, जो उन्हें निभानी पड़ती हैं। उदाहरण के लिए, समय पर आने पर सहमत होना।

कक्षाएँ तब खत्म हो जाती हैं जब किसी भी पक्ष को लगने लगता है कि अब काफी हो गया है। अगर शिक्षकों को लगने लगे कि उनसे बात नहीं बन पा रही तो वे पीछे हट सकते हैं – और विद्यार्थियों को अगर फिर भी कक्षा जारी रखनी हो तो उन्हें नया शिक्षक तलाशना पड़ता है। अगर विद्यार्थियों को लगे कि वे कक्षा को आगे जारी नहीं रखना चाहते, तो शिक्षक को उस तयशुदा वक्त में खुद को व्यस्त रखने का कोई दूसरा तरीका तलाशना पड़ता है।

स्कूल में एक दूसरी तरह की कक्षा भी समय-समय पर होती है। यह तब होता है जब लोगों को लगे कि उनके पास कहने को कुछ नया या अनोखा

है जो किताबों में मिल ही नहीं सकता, और उन्हें यह लगे कि दूसरों की भी इसमें रुचि हो सकती है। तब वे एक सूचना टाँगते हैं: "जिस किसी की रुचि फलाँ-फलाँ में हो वह मुझसे सेमिनार कक्ष में गुरुवार को 10:30 बजे मिल सकता है।" फिर वे इन्तज़ार करते हैं। अगर लोग आते हैं तो वे अपनी बात कहते हैं। अगर नहीं आते, तो चलता है। हो सकता है कि पहली मर्तबा लोग आ जाएँ, और अगर दूसरी बार हो तो वे न आना तय करें।

मैंने इस तरह की चीज़ कई बार की है। पहले सत्र में अमूमन काफी लोग आते हैं: "चलो देखें यह बन्दा क्या करने वाला है।" दूसरे सत्र में कम लोग आते हैं। अन्त में थोड़े-से लोग बचे रहते हैं जो वाकई यह जानने को उत्सुक होते हैं कि मैं अमुक विषय पर क्या कहने जा रहा हूँ। उनके लिए यह एक तरह का मनोरंजन होता है, परन्तु मेरे लिए तथा मेरे जैसे दूसरों के लिए यह लोगों को बताने का तरीका होता है कि हम क्या सोच रहे हैं।

* * *

3

लगन

फिर से शब्दों की समस्या है। मैंने जिस तरह से वर्णन किया उससे सीखना बिलकुल सहज, ढीला-ढाला और बिना मेहनत का काम लगता है। आसानी से आने और जाने वाला। निरुद्देश्य। अव्यवस्थित। अनुशासनहीन।

अक्सर लगता है कि काश यह सच होता।

जब पहले-पहल स्कूल खुला था, तेरह वर्षीय रिचर्ड का दाखिला हुआ और उसने खुद को जल्दी ही शास्त्रीय संगीत और तुरही में डूबा पाया। रिचर्ड को जल्दी ही लगने लगा कि उसने अपने जीवन की रुचि हासिल कर ली है। शिक्षक समूह के ट्रॉमबोन वादक यान की मदद से रिचर्ड ने खुद को अध्ययन में झोंक दिया।

रिचर्ड प्रतिदिन चार घण्टे तुरही का अभ्यास करता। हमें विश्वास ही नहीं होता था। हम दूसरी गतिविधियाँ सुझाते, पर सब सुझाव नाकाम रहे। रिचर्ड जो कुछ भी करता – और वह स्कूल में काफी कुछ करता था – वह अभ्यास के लिए हमेशा चार घण्टे ज़रूर निकाल लेता।

वह बॉस्टन से आता था, जो एक ओर सवा घण्टे का रास्ता था, और तब फ्रैमिंग्हैम बस अड्डे से पैदल आधा घण्टा चलता था। मुहावरे के डाकिए की तरह वह 'बरसात या धूप, अँधड़ या हिमवर्षा' के बावजूद स्कूल और हमारे कानों के परदे तक पहुँच जाता।

जल्दी ही तालाब के किनारे स्थित पुराने चक्की भवन के गुण हमें मालूम पड़ गए। ग्रेनाइट से निर्मित, स्लेट से बनी छत वाला यह ठौर परिसर के सुदूर कोने में था। वह पुरानी उपेक्षित इमारत अचानक हमारी नज़रों में सुन्दर बन गई। और रिचर्ड की नज़रों में भी। जल्दी ही उसे एक संगीत कक्ष बना दिया गया जहाँ रिचर्ड जी भरकर रियाज़ कर सकता था।

और उसने रियाज़ किया भी।

प्रतिदिन चार या उससे अधिक घण्टे, चार वर्षों तक।

स्कूल से स्नातक बनने और एक कंज़र्वेटरी में आगे अध्ययन करने के बाद रिचर्ड एक प्रमुख सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा में प्रथम हॉर्न वादक बना।

रिचर्ड के पदचिह्नों पर जल्दी ही फ्रेड चला, जिसको ढोलों से प्यार था। सुबह को ढोल, दोपहर को ढोल, रात को भी ढोल। आपातकालीन व्यवस्था ज़रूरी बन गई। हमने उसे तलघर में एक कमरा दे दिया और उसे स्कूल की चाबी भी दे दी ताकि वह सुबह जल्दी या रात देर तक या छुट्टियों में रियाज़ कर सके।

पर हमने पाया कि तलघर भवन के शेष हिस्से से उतना भी कटा हुआ नहीं था जितना हमने सोचा था। ऐसा लगता कि हम सब जंगल के किसी गाँव के पास रह रहे हैं, जहाँ पृष्ठभूमि में लगातार ढोल-नगाड़ों की ढमढम सुनाई देती हो।

दो वर्ष बाद, अठारह साल की आयु में फ्रेड स्कूल से निकला। हम उसे पसन्द करते थे। पर हममें से कई ने राहत की साँस लेकर उसे खुदाहाफिज़ कहा।

यह केवल संगीत ही नहीं जो हम सबके अन्तस में पैठे ढीठ आग्रह को बाहर ले आता है। प्रत्येक बच्चा जल्दी ही कोई एक या दो या और अधिक क्षेत्र ढूँढ लेता है, जिनके पीछे वह ढिठाई से लग जाता है।

अक्सर तो उस विषयवस्तु या सामग्री में भी उसे लुत्फ नहीं आता। साल दर साल, बड़े विद्यार्थी जो कॉलेज में प्रवेश लेने की ठान लेते हैं, प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी में भिड़ जाते हैं। अमूमन बच्चे स्टाफ के किसी सदस्य को ढूँढ लेते हैं ताकि मुश्किलातों को पार कर सकें। पर काम उनका अपना ही

होता है। मोटी-मोटी समीक्षा पुस्तकें एक से दूसरे कमरे में ढोई जाती हैं, उन्हें पढ़ा जाता है, पन्ने दर पन्ने उन पर काम किया जाता है। यह प्रक्रिया हमेशा ही तीव्र होती है। इसमें शुरुआत से आखिर तक बिरले ही चार से पाँच महीने लगते हैं, हालाँकि उनमें से कई पहली बार ही उस सामग्री को देख रहे होते हैं।

ऐसे लेखक भी हैं जो प्रतिदिन घण्टों लिखते हैं। ऐसे चित्रकार हैं जो चित्र बनाते हैं, कुम्हार हैं जो बरतन बनाते हैं, रसोइए हैं जो खाना बनाते हैं और खिलाड़ी हैं जो खेलते हैं।

ऐसे भी लोग हैं जिनकी रोज़मर्रा की साधारण रुचियाँ होती हैं। और ऐसे भी जिनकी रुचियाँ विलक्षण होती हैं।

ल्यूक अन्त्येष्टि व्यवस्थापक बनना चाहता था। एक पन्द्रह साल के लड़के के लिए यह इच्छा सामान्य बात नहीं थी। पर उसके पास कारण थे। अपने मन की आँखों में वह अपना अन्त्येष्टि गृह देख पाता था, जहाँ वह समुदाय की ज़रूरतों की पूर्ति करता हो और शोक सन्तप्त सम्बन्धियों को दिलासा बँधाता हो।

ल्यूक ने पूरे जोश से खुद को अध्ययन में झोंक दियाः विज्ञान, रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान, पशुशास्त्र। सोलहवें वर्ष में आते-आते वह गम्भीर काम के लिए तैयार था। हम उसे वास्तविक दुनिया में ले गए। एक प्रादेशिक अस्पताल के मुख्य रोग-विज्ञानी ने इस उत्सुक, मेहनती विद्यार्थी का अपनी प्रयोगशाला में बखुशी स्वागत किया। ल्यूक ने वहाँ दिन ब दिन तमाम अन्य प्रक्रियाएँ सीखीं, उन पर महारत हासिल की, और इस तरह अपने बॉस को प्रसन्न किया। साल भर के अन्दर वह अस्पताल में, अपने बॉस की निगरानी में, बिना किसी की मदद से शव-परीक्षण करने लगा। अस्पताल में यह पहली बार हुआ था।

पाँच साल में ल्यूक अन्त्येष्टि व्यवस्थापक बन गया। और अब कुछेक वर्षों बाद निजी अन्त्येष्टि गृह का उसका सपना पूरा हो गया है।

और फिर बॉब आया।

एक दिन बॉब मेरे पास आया और बोला, "क्या आप मुझे भौतिकशास्त्र सिखाएँगे?" शंकालु होने का मेरे पास कोई कारण नहीं था। बॉब पहले ही

इतनी सारी चीज़ें इतनी अच्छी तरह कर चुका था कि हम सब जानते थे कि वह कुछ शुरू करने पर उसे खत्म करके ही छोड़ता है। उसने स्कूल की प्रेस चलाई थी। उसने पूरी शोध कर स्कूल की न्यायिक व्यवस्था पर किताब लिखी थी और प्रकाशित करवाई थी। उसने असंख्य घण्टे पियानो सीखने में लगाए थे।

अतः मैं खुशी-खुशी मान गया। हमारा सौदा बड़ा सीधा-सा था। मैंने उसे प्रारम्भिक भौतिकी पर एक कॉलेज पाठ्यपुस्तक दी जो मोटी और भारी थी। मैं पहले अक्सर उसकी मदद से पढ़ा चुका था, और जब मैं खुद अध्ययन की शुरुआत कर रहा था, उस वक्त इस पुस्तक के एक पूर्व संस्करण का मैंने स्वयं भी उपयोग किया था। मुझे उसकी सारी बाधाएँ पता थीं। "किताब को पन्ना दर पन्ना पढ़ना और उसके सारे के सारे अभ्यास करना," मैंने बॉब से कहा, "और जैसे ही छोटी-सी भी समस्या आए, फौरन मेरे पास आना। इनको पहले ही सुलझाना ज़रूरी है, इससे पहले कि वे बड़ी अड़चनों में तब्दील हो जाएँ।" मेरा खयाल था कि मैं जानता हूँ कि बॉब पहली ठोकर कहाँ खाएगा।

कई सप्ताह गुज़र गए। महीनों। बॉब नहीं दिखा।

यह तो उसके स्वभाव के विपरीत था कि वह किसी चीज़ में घुसने के पहले – या बाद – उसे छोड़ दे। मैं सोचता रहा कि कहीं उसकी रुचि खत्म तो नहीं हो गई। पर मैंने अपना मुँह बन्द रखा और इन्तज़ार करता रहा।

शुरुआत करने के पाँच महीने बाद बॉब मुझसे मिला। "पृष्ठ 252 पर एक समस्या है।" मैंने कोशिश की कि मेरा अचरज दिखाई न दे। समस्या, जो छोटी-सी थी, को सुलझाने में पाँच मिनट लगे।

इसके बाद मैं बॉब से भौतिकी के बारे में कभी नहीं मिला। उसने पूरी पुस्तक अपने आप ही खत्म की। बीजगणित और कलन उसने मेरी मदद माँगे बिना खुद ही पढ़े। मेरा खयाल है कि उसे पता था कि ज़रूरत पड़ने पर मैं सहायता अवश्य करूँगा।

आज बॉब एक गणितज्ञ है।

* * *

4
जादूगर का शागिर्द

जब ल्यूक अस्पताल के रोग-विज्ञानी के साथ काम करने गया, वह आधिकारिक तौर पर सडबरी वैली का पहला बाहरी प्रशिक्षु बना।

यह सम्भव ही नहीं था कि हम परिसर में उसके लिए शव-परीक्षण की व्यवस्था कर पाते। परिसर की प्रयोगशाला व्यवस्थाएँ चाहे कितनी भी विस्तृत क्यों न होतीं, हम मानव शव की जाँच की व्यवस्था नहीं कर सकते थे।

पन्द्रह वर्ष की उम्र में ल्यूक दो दिशाओं में से किसी एक की ओर मुड़ सकता था। या तो वह छह-सात साल रुकता, जब तक वह कॉलेज खत्म न कर लेता, और तब अपने चुने हुए क्षेत्र में आगे बढ़ता; या फिर वह उस वक्त आगे बढ़ता जब उसकी तैयारी हो चुकी हो, जो इस समय थी।

हमें उसके रुकने का कोई कारण नज़र नहीं आया। हम एक-एक कर स्थानीय चिकित्सकों के पास गए और पूरा मामला उनके सामने रखा, जब तक कि हमें ऐसा व्यक्ति नहीं मिल गया जो हमारी तरह सोचता था। हमने उसके साथ एक करार किया, उसी तरह जिस तरह हम स्कूल में अपने पढ़ाई सम्बन्धी सौदे करते हैं: आपको ल्यूक के रूप में एक निःशुल्क सहायक मिलेगा, क्योंकि यह उसकी शिक्षा का ही हिस्सा है; बदले में आप ल्यूक को फलाँ-फलाँ तयशुदा प्रशिक्षण देंगे। इस प्रशिक्षण का विस्तार से खुलासा किया गया था। सभी पक्षों ने शर्तों का अनुमोदन किया, और इस तरह स्कूल का पहला प्रशिक्षु कार्यक्रम शुरू हुआ।

यह विचार सबको भाया। जब जिल की नाटक में रुचि जगी, वह जल्दी ही स्कूल के परे निकलने को तैयार थी। उसकी रुचि नाटक की व्यवस्थाओं में थी – मेकअप, वेशभूषा, दृश्य, प्रकाश। वह केम्ब्रिज के लोएब थिएटर में प्रशिक्षु बनी, और अधिक समय नहीं गुज़रा था कि उसे देश भर के पेशेवर थिएटरों में मदद के लिए काम मिल गया। उसके इस नए धन्धे ने उसे कॉलेज की पढ़ाई का खर्च वहन करने में मदद की। कॉलेज से थिएटर की डिग्री ने उसे अपने पेशे में आगे बढ़ाया।

कब स्कूल में बने रहना है और कब उसे छोड़ आगे बढ़ जाना है? इस बात का फैसला करना अक्सर कठिन रहा है। चौदह साल की उम्र में सॉल फोटोग्राफी में डूब गया। वह स्कूल के डार्करूम का उपयोग कर फोटो प्रयोगशाला की बारहखड़ी सीखने लगा। जल्दी ही वह स्कूल में उपलब्ध साधनों से असन्तुष्ट हो चला, परन्तु कोई अन्य स्थान तलाशने की बजाय उसने उपलब्ध संसाधनों को सुधारने का निर्णय लिया। धीमे-धीमे, मेहनत से उसने कारखाने में बढ़ईगिरी सीखी। उसने तकनीकी फोटोग्राफी मार्गदर्शिकाओं का अध्ययन किया। साल भर के परिश्रम से उसने फोटो प्रयोगशाला का कायाकल्प कर डाला। इसके लिए उसने ज़रूरत पड़ने पर काम में लिए गए उपकरण खरीदे। क्योंकि वह स्कूल का चौथा विद्यार्थी था जो फोटोग्राफी के प्रेम में पड़ा था और जिसने डार्करूम को पुनर्निर्मित कर दिया था, जब तक उसने अपना काम खत्म किया वह स्थान सच में उम्दा नज़र आने लगा था।

पर जब वह सोलह साल का हुआ तो यह भी उसके लिए नाकाफी था। उसे किसी उस्ताद से व्यावहारिक प्रशिक्षण की दरकार थी। हफ्ते दर हफ्ते सॉल बॉस्टन के गली-कूचों में किसी व्यावसायिक फोटोग्राफर की तलाश करता रहा जो उसे शागिर्द बना ले। प्रतिक्रिया उत्साहजनक नहीं थी। "कॉलेज में जाओ," एक ने कहा। "बड़ी प्रोसेसिंग प्रयोगशाला में काम करो," दूसरे ने कहा।

जब तक वह जो के पास पहुँचा वह यह सीख चुका था कि उसे अपनी बात कैसे रखनी है। जो की सारी आपत्तियाँ एक के बाद एक दूर कर दी गईं। पर जो किसी किशोर को प्रशिक्षित करने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। "किशोरों से पहले भी मेरा वास्ता पड़ चुका है," वह बोला, "और वे सब बेहद गैर-ज़िम्मेदार होते हैं। वे समय पर नहीं आते, वे गड़बड़ियाँ करते हैं, और काम

से जी चुराते हैं।" पर सॉल पीछे पड़ा रहा। स्कूल ने उसको समर्थन दिया और पक्का वादा किया। सप्ताह में दो दिन सॉल बॉस्टन की बस पकड़ता और जो के लिए काम करने जाता।

उसने शुरू से प्रारम्भ किया। साल भर के अन्दर उसकी प्रशिक्षु अवधि पूरी हुई। उसे कहा गया कि वह वहीं रहे और जो की प्रयोगशाला का संचालन करे।

आज सॉल कला फोटोग्राफर है और अपने क्षेत्र के व्यावसायिक पक्ष में दक्ष तकनीकी पेशेवर है।

अब तक केवल एक ही प्रशिक्षुता असफल रही है। यह तब हुआ जब उस्ताद इतना गैर-ज़िम्मेदार सिद्ध हुआ कि उसने सौदे की अपनी शर्तें नहीं निभाईं। कुछ समय बाद विद्यार्थी ने हाथ खड़े कर दिए और वह दूसरी जगह तलाशने लगा।

एक व्यक्ति है जिसने इतने सालों में किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण दिया है।

एलन व्हाइट एक सामान्य ठेकेदार हैं। जब हमारा स्कूल शुरू हुआ था वे एक पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य थे जो प्रशासनिक सोपान की दिशा में बढ़ रहे थे। एलन में सफल प्रशासक बनने के सभी आदर्श गुण हैं। वे खूब बुद्धिमान हैं, पर इसे कभी दर्शाते नहीं। उनका मिज़ाज सन्तुलित है और वे कभी आपा नहीं खोते। वे न्यायपूर्ण, मधुर, समझदार और व्यवस्थित हैं।

जब हमने स्कूल खोला एलन समूचे बॉस्टन महानगर क्षेत्र में एकमात्र पब्लिक स्कूल प्रशासक थे जिन्होंने हमारे काम को देखने का आमंत्रण स्वीकारा था। वे जिज्ञासु थे।

उनकी जिज्ञासा ने लगभग उनका काम ही तमाम कर दिया।

ज़्यादा वक्त न बीता होगा कि एलन, जो एक स्थानीय कस्बे के स्कूलों के निरीक्षक बन चुके थे, स्कूली सुधार में गहराई से जुट गए। सडबरी वैली उनकी रुचि का काम बन चुका था। जितना अधिक वे हमारे स्कूल को देखते, उतना ही पब्लिक स्कूलों में बदलाव लाने की दिशा में वे बढ़ते, फिर चाहे ये परिवर्तन कितने ही कम क्यों न रहे हों।

जल्द ही उनका कस्बा एक सघन विवाद का अखाड़ा बन गया। वैकल्पिक पब्लिक स्कूल का उनका मॉडल पन्द्रह वर्षों बाद भी उन तमाम लोगों को सस्नेह याद आता रहा जो वहाँ पढ़े थे या जिन्होंने वहाँ काम किया था। पर जल्दी ही उसे वापस ढर्रे पर लौट आने को बाध्य कर दिया गया।

एलन ने सार्वजनिक शिक्षा त्याग दी। उन्होंने अपनी नौकरी, बढ़ते सेवानिवृत्ति लाभ, अपनी तमाम सुविधाएँ त्याग दीं। वे अपने पुराने प्रेम, बढ़ईगिरी पर लौट आए, और जल्दी ही सामान्य ठेकेदार बन गए।

इन सालों में एलन ने कभी हमारा साथ नहीं छोड़ा। वे हमारी मदद करने, हमें सलाह और तसल्ली देने के लिए हमेशा मौजूद रहे। पहले वर्ष से ही वे साल दर साल स्कूल निगम के अध्यक्ष चुने जाते रहे।

और जब कभी स्कूल का कोई विद्यार्थी बढ़ईगिरी या निर्माण में रुचि लेने लगता तो वह स्वयं को एलन का प्रशिक्षु पाता। एलन के हाथों चार विद्यार्थी गुज़रे, उन्होंने पेशा सीखा और पेशेवरों के रूप में धन्धा करने लगे।

प्रशिक्षु कार्यक्रम ने एलन का सही मायनों में शिक्षा से जुड़ना सम्भव बनाया। और इसने कई लोगों को उत्साही तथा ऊर्जावान युवा शिक्षार्थियों का उस्ताद बनने का रोमांच भी दिया।

* * *

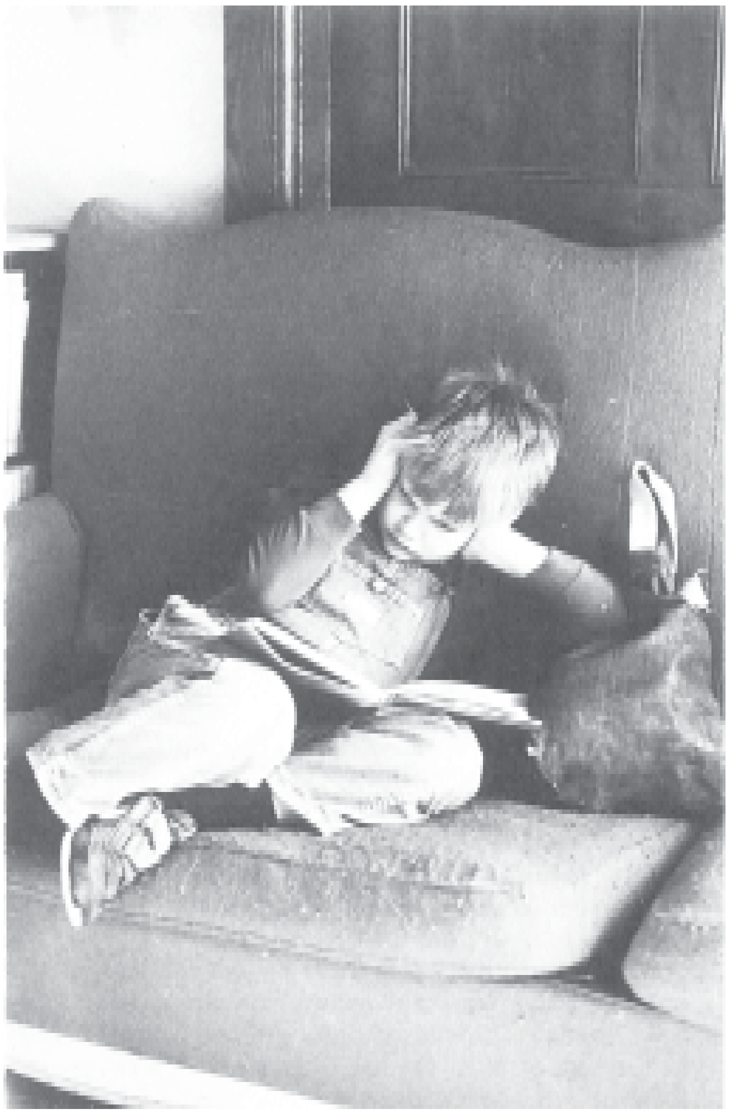

5

पढ़ना, लिखना

लगभग दो दशकों में सडबरी वैली में वाचनवैकल्य (dyslexia) नामक बीमारी का एक भी मामला सामने नहीं आया। कोई ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि ऐसा क्यों हुआ। वाचनवैकल्य के कारण, उसकी प्रकृति, एक कार्यात्मक गड़बड़ी के रूप में उसका अस्तित्व भारी विवाद का विषय है। कुछ विद्वानों का मानना है कि जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा इस तथाकथित रोग से ग्रस्त होता है।

पर तथ्य यह है कि हमने स्कूल में इसे देखा तक नहीं है। शायद इसका कारण यह हो कि हमने किसी को पढ़ना सीखने पर बाध्य नहीं किया है।

पढ़ना हमारी ज़बरदस्त परीक्षा लेता है। पर बाकी चीज़ों की तरह हमने यहाँ भी पहल बच्चों को ही करने दी है। हमारी ओर से उसे कतई उकसाया नहीं जाता। कोई यह नहीं कहता, "अब पढ़ना सीखो!" कोई यह नहीं पूछता, "क्या तुम अब पढ़ना सीखना नहीं चाहोगे?" और कोई भी नकली उत्साह से यह नहीं कहता, "पढ़ना कितना मज़ेदार लगेगा, है ना?" हमारा नारा है: विद्यार्थी की ओर से पहला कदम उठने तक इन्तज़ार करो।

अपने विश्वासों के अनुरूप जीना उस समय बड़ा आसान होता है जब चीज़ें वही शक्ल लेती जाती हैं जैसे उन्हें सब चाहते हैं। मेरे परिवार को ही लें। हमारा सबसे बड़ा बच्चा पाँच साल की उम्र में पढ़ने में रुचि लेने लगा। और

छह साल का होते-होते वह अपने आप ही पाठक बन गया। कोई समस्या नहीं हुई। सब कुछ सही 'हो' गया।

तब हमारी बिटिया आई जो ढाई साल छोटी थी। स्कूल के अन्य लोगों की ही तरह हमने इन्तज़ार किया कि वह कहे कि उसे पढ़ना सिखाया जाए – या वह खुद से सीखे। हमने इन्तज़ार किया। और इन्तज़ार किया। और इन्तज़ार किया।

छह साल की उम्र में उसे पढ़ना नहीं आया तो कोई मुश्किल नहीं, जहाँ तक समाज का प्रश्न था।

कि सात साल की उम्र में भी वह पढ़ नहीं रही थी, यह लोगों की नज़र में सही नहीं था। दादा-दादी, नाना-नानी, परिचित असहज होने लगे। वे हमें निशाना बनाकर संकेत देने लगे।

कि वह आठ साल की आयु में भी पढ़ नहीं रही थी, यह बात परिवार और मित्रों के लिए एक बड़ा काण्ड था। हमें गैर-ज़िम्मेदार माता-पिता के रूप में देखा जाने लगा। और स्कूल? वह स्कूल सही स्कूल हो ही नहीं सकता अगर वहाँ आठ साला बच्चे निरक्षर हों और उनके लिए कोई उपचारात्मक कदम उठाया न गया हो।

पर स्कूल में किसी का ध्यान इस पर नहीं गया। उसके अधिकांश आठ वर्षीय दोस्त पढ़ पाते थे। कुछ नहीं पढ़ पाते थे। खुद उसे कोई परवाह नहीं थी। स्कूल में उसके दिन व्यस्त व खुशनुमा थे।

नौ साल की होने पर उसने तय किया कि उसे पढ़ना है। मुझे पता नहीं कि उसने यह निर्णय उसी वक्त क्यों लिया, और उसे कुछ याद नहीं। साढ़े नौ की होते-होते वह पूर्ण पाठक बन चुकी थी। वह कुछ भी पढ़ सकती थी। अब वह किसी के लिए 'समस्या' नहीं रही। सच तो यह है कि वह कभी समस्या थी ही नहीं।

हमारे निजी अनुभव में लीक से हटकर कुछ भी नहीं था। स्कूल में कुछ बच्चे जल्दी पढ़ने लगते हैं, तो कुछ देर से। वे सभी तब पढ़ते हैं जब वे इसके लिए तैयार हों, उसके पल भर भी पहले नहीं। और सभी अन्ततः अच्छा-खासा पढ़ पाते हैं।

देर से पढ़ना शुरू करने वाले कुछ बच्चे किताबी कीड़ा बन जाते हैं। कुछ बच्चे जो जल्दी पढ़ना सीख लेते हैं, पहले इस कौशल पर काबिज़ होने के बाद बिरले ही किसी किताब को पूरा पढ़ते हैं।

हमारे स्कूल में एक भी प्रारम्भिक पठन पाठ्यपुस्तक नहीं है। न पहली कक्षा की और न दूसरी और तीसरी कक्षा की प्रवेशिकाएँ हैं। अक्सर सोचता हूँ कि पेशेवर शिक्षकों के अलावा कितने वयस्कों ने कभी प्रारम्भिक पुस्तिकाओं को देखा भी है। वे बेवकूफी की हद तक सरल, उबाऊ और अप्रासंगिक होती हैं। आधुनिक बच्चे, जो सड़क-छाप चतुराई से परिचित और टीवी द्वारा पोषित होते हैं, उनको ये किताबें केवल बेवकूफी भरी ही लग सकती हैं।

मैंने तो किसी बच्चे को ऐसी पुस्तिका को उठाकर मज़ा लेने के लिए पढ़ते नहीं देखा है।

सच तो यह है कि स्कूल में कोई भी पढ़ने को लेकर कभी खास चिन्ता नहीं करता। केवल कुछ ही बच्चे किसी से मदद माँगने आते हैं जब वे पढ़ने का निर्णय लेते हैं। लगता है प्रत्येक बच्चे का पढ़ना सीखने का अपना तरीका होता है। कुछ पढ़ना सुनने के साथ शुरुआत करते हैं, कहानियों को याद कर लेते हैं और अन्ततः उन्हें पढ़ने लगते हैं। कुछ नाश्ते के डिब्बों से, कुछ खेल के निर्देशों से, तो कुछ सड़क पर लगे मार्ग-सूचकों से पढ़ना सीखते हैं। कुछ खुद को अक्षरों की ध्वनियाँ सिखाते हैं, तो दूसरे अक्षर व मात्रा की संयुक्त ध्वनियाँ, और कुछ पूरे शब्द। ईमानदारी से कहूँ तो हमें बिरले ही यह पता चलता है कि वे पढ़ना सीखते कैसे हैं। और वे भी बिरले ही हमें बताते हैं। एक दिन मैंने एक ऐसे बच्चे से जो ताज़ा-ताज़ा पाठक बना था, पूछा, "तुमने पढ़ना भला कैसे सीखा?" उसका जवाब थाः "बड़ा आसान था। मैंने 'अन्दर' सीखा। मैंने 'बाहर' सीखा। और तब मुझे पढ़ना आ गया।"

मतलब यह है कि पढ़ना बच्चों के लिए बोलने के ही समान है। समाज बच्चों को बोलने की कक्षाओं में नहीं डालता। (शायद ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बच्चे लगभग हमेशा ही स्कूल की पकड़ में आने से पहले ही बोलना सीख लेते हैं। मेरा अनुमान है कि यदि एक साल के बच्चे स्कूल आ जाएँ तो वहाँ बोलने की कक्षाएँ भी शुरू हो जाएँगी, साथ ही बहुत-सी बोलने की गड़बड़ियाँ भी ढूँढ ली जाएँगी।) कुछ ही दुर्भाग्यशाली बच्चों में बोलने से

सम्बन्धित ऐसी गड़बड़ियाँ होती हैं जिनका उपचार आवश्यक होता है। अधिकांश बच्चे किसी तरह – और कोई नहीं जानता ठीक किस तरह – स्वयं को बोलना सिखा लेते हैं।

बच्चे बोलना क्यों सीखते हैं? सच यह है कि शिशु मनुष्यों की दुनिया से घिरे रहते हैं जो बोलकर सम्प्रेषण करते हैं। इस दुनिया पर महारत हासिल करने से अधिक और कुछ बच्चे नहीं चाहते। आप उन्हें रोकने की कोशिश तो करें! उनके संकल्प और लगन का महानतम उदाहरण है बोलना सीखने के लिए उनका संघर्ष।

ठीक यही सडबरी वैली में पढ़ने को लेकर होता है। जब बच्चों को स्वयं उनके भरोसे छोड़ दिया जाता है, वे अन्ततः खुद ब खुद यह देख लेते हैं कि हमारी दुनिया में लिखित शब्द ही ज्ञान की जादुई कुंजी है। जब जिज्ञासा उन्हें आखिरकार वह चाबी हासिल करने की इच्छा की ओर ले जाती है, तो वे उसके पीछे उसी उत्साह से पड़ जाते हैं जो वे अपने दूसरे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भी दर्शाते हैं।

और यह उनके लिए बोलना सीखने से कहीं अधिक आसान होता है। अब तक वे बड़े हो चुके होते हैं और नई चीज़ें सीखने में ज़्यादा अनुभवी भी। वे जानते हैं कि भाषा क्या है, वह कैसे काम करती है, शब्द क्या हैं। बोलने की तुलना में पढ़ना सीखने में काफी कम समय और प्रयास लगाना पड़ता है।

लिखना भी बिलकुल भिन्न है।

बहुत से बच्चे केवल लिखना ही नहीं, बल्कि अच्छी तरह से लिखना चाहते हैं। इसका सम्बन्ध सौन्दर्यबोध से है। सो वे किसी व्यक्ति के पास जाते हैं ताकि लेखन की कला को बाकायदा सीख सकें। लिखना चित्रकारी या कढ़ाई की तरह होता है।

लेखन को एक सौन्दर्य कौशल के रूप में देखना कई बार अजीब-सी घटनाओं की ओर ले जाता है। नन्हे बच्चों को घण्टों तक सुन्दर लेखन सीखते देखना असामान्य बात नहीं है। पर विचित्र यह तब लगता है जब उनमें से आधे पढ़ना जानते ही नहीं हैं!

"तुम सुलेख क्यों सीख रहे हो, यदि तुम्हें पढ़ना नहीं आता?" मैंने अक्सर पूछा है।

"क्योंकि यह सुन्दर है," जवाब मिलता है।

कुछ बच्चे हस्तलेखन को कला के रूप में सीखते हैं, और तब उसे भुलाकर किसी दूसरे काम में लग जाते हैं। कुछ सालों बाद वे पढ़ना सीखते हैं, और तब फिर से लिखना सीखते हैं!

मेरा खयाल है कि यह बात दोहराए जाने लायक है। सडबरी वैली में किसी भी बच्चे को पढ़ना सीखने के लिए कभी बाध्य नहीं किया गया, धकेला, उकसाया या फुसलाया नहीं गया, और न ही कभी घूस दी गई। हमारे यहाँ वाचनवैकल्य का एक भी मामला नहीं रहा है। हमारे स्नातकों में एक भी वास्तविक या कार्यात्मक रूप से निरक्षर नहीं रहा है। कुछ आठ साल के, कुछ दस साल के और यदाकदा बारह साल के बच्चे भी निरक्षर रहे हैं। पर जिस समय तक वे स्कूल छोड़ते हैं, उनमें अन्तर नहीं किया जा सकता। कोई भी जो हमारे बड़े बच्चों से मिलता है, यह अनुमान नहीं लगा सकता कि उन्होंने किस उम्र में पढ़ना या लिखना सीखा होगा।

* * *

6

मछली पकड़ना

हर साल जून के शुरू में जॉन स्कूल में अपने बच्चे के विषय में बातचीत करने आता। जॉन कोमल स्वभाव का बुद्धिमान व्यक्ति था जो स्कूल में अध्ययनरत अपने बेटे डैन को समर्थन देता था।

पर जॉन चिन्तित भी था। बस ज़रा-सा। इतना भर कि साल में एक बार स्कूल में आश्वासन के लिए आता।

उसकी बातचीत कुछ इस प्रकार चलती।

ज.फ.: "मैं स्कूल का दर्शन जानता हूँ और उसे समझता हूँ। पर मुझे आपसे बात करनी है। मैं चिन्तित हूँ।"

मैं: "क्या समस्या है?" (बेशक, मैं जानता हूँ, हम दोनों ही जानते हैं। यह एक रिवाज़ भर है, क्योंकि पिछले पाँच सालों से लगातार हम हर साल वही बात कहते हैं।)

ज.फ.: "स्कूल में डैन दिन भर सिर्फ मछली पकड़ता है।"

मैं: "समस्या क्या है?"

ज.फ.: "पूरे दिन, हर दिन, पतझड़, सर्दियाँ, बसन्त। वह केवल मछली ही पकड़ता है।"

मैं उसे देखता हूँ और अगले वाक्य का इन्तज़ार करता हूँ। वह वाक्य मेरे

लिए संकेत का काम करेगा।

ज.फ.: "मुझे चिन्ता है कि वह कुछ भी नहीं सीखेगा। वह पाएगा कि वह बड़ा हो चुका है और उसे एक भी चीज़ न आती होगी।"

इस बिन्दु पर मेरा एक छोटा-सा भाषण आता, जिसे वह सुनने आया था। सब ठीक है, मैं शुरुआत करता। डैन ने बहुत कुछ सीखा है। पहले तो वह मछली पकड़ने का विशेषज्ञ हो गया है। वह मछलियों के बारे में – उनकी प्रजातियों, उनके आवास स्थानों, उनके व्यवहार, उनकी जैविकी, और उनकी पसन्द और नापसन्द के बारे में किसी भी दूसरे व्यक्ति से, जिसे मैं जानता हूँ, कम से कम अपनी उम्र के किसी दूसरे लड़के से कहीं अधिक जानता है। हो सकता है वह एक महान मच्छीमार बने। हो सकता है बड़ा होने पर वह आगामी 'सम्पूर्ण मच्छीमार' नामक पुस्तक की रचना करे।

जब मैं अपने भाषण के इस बिन्दु पर पहुँचता जॉन कुछ असहज हो जाता। वह नकचढ़ा नहीं था। पर अपने पुत्र की मछली पकड़ने के प्रमुख विशेषज्ञ के रूप में छवि उसे विश्वसनीय नहीं लगती थी। पर मैं विषय में मज़ा लेता हुआ आगे बढ़ता।

ज़्यादातर तो मैं यह कहता कि डैन ने दूसरी चीज़ें भी सीखी हैं। उसने किसी विषय को पकड़ना और तब उसे न छोड़ना सीखा है। उसने अपनी वास्तविक रुचि का, जिस सघनता से भी वह चाहे, अनुपालन करने की आज़ादी का मूल्य सीखा है, वह रुचि उसे चाहे जहाँ भी ले जाए। और उसने खुश रहना सीखा है।

सच तो यह है कि डैन स्कूल का सबसे खुशमिज़ाज बच्चा था। उसके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती; और उसका दिल भी मुस्कुराता रहता। सभी छोटे और बड़े, लड़के और लड़कियाँ, डैन को पसन्द करते थे।

अब मेरी वार्ता समापन की ओर आती। "ये चीज़ें उससे कोई छीन नहीं सकता," मैं कहता। "किसी वर्ष, किसी दिन अगर मछली पकड़ने में उसकी रुचि जाती रहे तो वह ठीक वैसी ही कोशिश किसी दूसरे विषय में करेगा। फिक्र न करें।"

जॉन उठता, गर्मजोशी से मुझे धन्यवाद देता और चला जाता। अगले साल

तक के लिए। उसकी पत्नी डॉन कभी भी उसके साथ नहीं आती। वह सडबरी वैली से खुश थी क्योंकि उसका बच्चा आनन्द से दमक रहा होता था।

फिर एक साल जॉन हमारी बातचीत के लिए नहीं आया। डैन ने मछलियाँ पकड़ना बन्द कर दिया था।

पन्द्रह साल की आयु में वह कम्प्यूटरों के प्रेम में पड़ गया। सोलह साल की उम्र तक वह एक स्थानीय फर्म में सेवा-विशेषज्ञ के रूप में काम करने लगा। सत्रह के आसपास उसने और उसके दो दोस्तों ने कम्प्यूटर बेचने और सेवा देने की अपनी सफल कम्पनी की स्थापना की। अठारह की उम्र में उसने अपना स्कूली अध्ययन पूरा किया और कम्प्यूटर अध्ययन के लिए कॉलेज गया। कॉलेज की फीस और खर्चे के लिए उसने काफी पैसा जमा कर लिया था। कॉलेज के सालों के दौरान वह हनीवैल में लगातार एक लोकप्रिय विशेषज्ञ के रूप में काम करता रहा।

डैन ने इतने साल मछलियाँ पकड़ते-पकड़ते जो सीखा था उसे वह कभी नहीं भूला।

कई लोगों ने मछली पकड़ने के रोमांच और सौन्दर्य पर ग्रन्थ लिखे हैं। हमने स्कूल में स्वयं इसे देखा है। बच्चों को मछली पकड़ना बेहद पसन्द है। यह तनाव दूर करता है और चुनौतियाँ पेश करता है। यह गतिविधि बाहर होती है – बरसात हो या धूप हो। स्कूल के चक्की ताल के किनारे खड़े आप सरसराते पेड़ों, धूसर ग्रेनाइट के भवनों और चक्की बाँध के नीचे कलकल बहती नहर के पास होते हैं। मछलियाँ पकड़ने वाले अधिकतर बच्चे इस सौन्दर्य को देखते हैं। वे सभी उसे महसूस करते हैं।

मछली पकड़ना सामाजिक गतिविधि है। बच्चे दोस्तों के साथ मछली पकड़ते हैं, या अपने बड़ों से सीखते हैं। हर साल हम पाँच-छह साल के बच्चों की नई पीढ़ी को इस कौशल को सीखने के लिए जूझते देखते हैं।

मछली पकड़ना असामाजिक भी हो सकता है। आप चाहें तो अकेले भी हो सकते हैं। कोई आपको परेशान नहीं करेगा। नियम यही है। अक्सर कोई दिन भर के लिए बंसी और डोरी लिए निकल पड़ता है। अकेले होने, सोचने, ध्यान करने के लिए।

एक शान्त तरीके से मछली पकड़ना स्कूली जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि हम कितने खुशकिस्मत हैं कि हमें ऐसा परिसर मिला जिसमें ताल है।

डैन और जॉन के साथ मेरा अनुभव स्कूल के प्रारम्भिक दिनों में हुआ। इसने मुझे स्कूल के बारे में सोचने का अवसर दिया, और यह भी कि इस स्कूल का क्या अर्थ हो सकता है। अतः जब मेरे सबसे छोटे बेटे ने पूरे दिन मछलियाँ पकड़ना शुरू किया तो मैं इसे लेकर पूरी तरह सहज था। बिलकुल ऐसा लग रहा था जैसे यह सब पहले भी हो चुका है।

और मैं जानता था कि वह जानता है कि वह क्या कर रहा है।

* * *

7
नूह की नाव

हमने जब स्कूल भवन खरीदा था तो हमें यह अतिरिक्त फायदा लगा था कि उसमें अस्तबल और गाड़ियों का बाड़ा है। वे सुन्दर थे और उनमें पशुपालन की सम्भावना थी।

यह लगभग मासूमियत में ही शुरू हुआ। मॉली, जो इस क्षेत्र की नामी घुड़सवार थीं, ने जानना चाहा कि क्या वह हमारे अस्तबलों से घुड़सवारी सिखा सकती हैं। हम झिझके नहीं, हालाँकि विवेकपूर्ण शर्तों तक पहुँचने में हमें घण्टों चर्चा करनी पड़ी। जब 1 जुलाई 1968 को स्कूल खुला, हम छोटे से अतिरिक्त शुल्क पर घुड़सवारी सिखाने का विकल्प रख सके।

2 जुलाई को हमने पाया कि मॉली स्वयं साज़ो-सामान समेत गाड़ीघर में आ चुकी हैं। उनके पास रहने के लिए कोई दूसरी जगह ही नहीं थी। चूँकि वहाँ न गुसलखाना था न रसोई, हमारे मन में शंकाएँ उठने लगीं।

घोड़े अस्तबल में रखे गए थे। पर उसकी साफ-सफाई का कोई प्रावधान नहीं हुआ था। दिन ब दिन अस्तबल की बाहरी दीवार के पास लीद का पहाड़ जमने लगा। इस पर केवल यही आपत्ति नहीं थी। यह स्वास्थ्य व अग्नि अधिनियमों के भी विरुद्ध था।

शुरुआती दिनों में यह हमारी चिन्ताओं में सबसे गौण थी। शुक्र था कि ज़्यादातर बच्चे घोड़े और दरियाई घोड़े तक का फर्क नहीं जानते थे। मॉली

का गुज़ारा नहीं चला और वे जल्दी ही चली गईं।

पर उनकी विरासत ज़िन्दा रही।

"हम अस्तबल और खलिहान में बकरियाँ पालना चाहेंगे," विल्सन बच्चों ने कहा। वे स्कूल बैठक, जहाँ निर्णय लिए जाते हैं, के दौरान अपनी बात बलपूर्वक रख रहे थे। हमने सभी सम्भव आपत्तियाँ सोचकर रखने की चेष्टा की।

"सप्ताह के अन्त में और छुट्टियों के दौरान भी तुम्हें उनकी देखभाल करनी पड़ेगी," हमने कहा।

"कोई समस्या नहीं है," उनका जवाब था। वे चार थे – तीन लड़के और एक लड़की, और वे काम आपस में बाँट लेंगे।

"बकरियाँ पालने के बारे में तुम जानते ही नहीं हो," हमने तर्क किया।

"यह सच नहीं है। हमने खूब पढ़ा है और दूसरों की बकरियाँ पालने में मदद की है। अब हमें अपनी बकरियाँ पालना सीखना है। हमारी माँ मदद करेंगी।" उनकी माँ स्कूल में ही शिक्षिका थीं।

ओह, ठीक है, हमने सोचा। यह एक जायज़ शैक्षिक अनुरोध है।

इसमें कोई शक नहीं कि सीखना हुआ। पर साथ ही बहुत कुछ और भी हुआ। पहले तो हमारे सुन्दर मैदानों का उपयोग उतना सुखदाई न रहा क्योंकि बकरियाँ हर जगह हगती हैं। लगता था कि जब भी विल्सन बच्चे या उनसे जुड़े अनेक उत्साहित सहायकों में से कोई बकरियों को टहलाने ले जाता, वे नन्ही प्यारी बकरियाँ एक सदृश्य सुराग छोड़ती जातीं। बदबू नहीं आती, ध्यान रहे। पर आप दोस्ताना गपशप के लिए कहीं बैठना नहीं चाह सकते थे।

और फिर उनका भाग छूटना भी था। बकरियाँ जीवन्त, लचीली और संकल्पवान होती हैं। वे किसी न किसी तरह सप्ताह में करीब एक बार तो छूट ही लेती थीं। अब पलटकर सोचने पर मुझे पक्का भरोसा नहीं कि यह केवल संयोग ही होता था। उनके भाग छूटने पर स्कूल में मज़ेदार हड़कम्प मचता था। सभी उन्हें पकड़ने या किसी को पकड़ते देखने दौड़ जाते। शोरगुल, भागदौड़ और चीख-पुकार के साथ यह कार्य सम्पन्न होता। कभी-कभार

पड़ोसी की सम्पत्ति में घुसने का मामला भी जुड़ जाता। हमारी सार्वजनिक छवि में सुधार तो इससे नहीं ही होता था।

क्रमशः विल्सन बच्चे अपनी बकरियों से ऊब गए। पर हम सबके ऊबने के बहुत बाद।

और तब खरगोश आए।

"हम व्यावसायिक रूप से खरगोश पालना सीखना चाहते हैं," उन्होंने कहा। इस बार तीन विल्सन लड़के और उनका दोस्त एंडी था। वे 'विल्सन मण्डली' के नाम से जाने जाते थे।

बिना किसी उत्साह के हमने अपने पुराने एतराज़ पेश कर दिए। कोई फायदा नहीं हुआ। हम जानते थे कि हम हार गए थे।

वे यह सिद्ध कर चुके थे कि वे जानवरों की देखभाल कर सकते हैं। खरगोश पिंजरे में रहने वाले थे – भागने का मौका नहीं मिलेगा। हम जानते थे कि वे भागेंगे नहीं, क्योंकि खरगोश वापस पकड़ाई में बिरले ही आते हैं।

खलिहान खरगोश कारखाने में तब्दील कर दिया गया। जब तक विल्सन मण्डली उनसे उकता न गई।

विद्यार्थियों की पशु भक्ति कई बार महा-रोमांचक अनुभवों की दिशा में ले गई। जैसे 1975 के बर्फीले तूफान के दिन सड़कों पर यातायात बन्द था, स्कूल व धन्धे ठप्प थे। मार्ज किसी भी हाल में क्रिस और एमी को पशुओं की देखभाल के लिए अस्तबल तक पहुँचा नहीं सकती थी।

"माँ, प्लीज," उन्होंने चिरौरी की, "बकरियों को चारा-पानी की ज़रूरत है।"

"मैं तुम्हें ले जा ही नहीं सकती," उसने कहा। "गाड़ियों को सड़क पर उतारने की पाबन्दी है।"

आगे कहा-सुनी की बजाय वे दोनों तूफान में सात मील लम्बे रास्ते पर स्कूल के लिए निकल पड़े। बकरियों को प्यार से चारा-पानी दिया गया और छह घण्टे बाद एमी और क्रिस अपनी चिन्तित माँ के पास लौट आए।

तब से खलिहान का नवीनीकरण हो चुका है और पशुओं के दड़बे हटाए जा चुके हैं। पर अस्तबल अब भी मौजूद है। स्कूल में घोड़े पालना अब भी सम्भव है, और बीच-बीच में कुछ विद्यार्थी निश्चित रूप से इसमें अपना हाथ आज़माएँगे। जब तक कि बच्चों के लिए पशुओं का चलन बिलकुल समाप्त न हो जाए।

* * *

8

रसायनशास्त्र

आखिरकार चीज़ों का चलन खत्म होता ही रहता है।

जब मैं छोटा था उस वक्त महल्ले के 'जीनियस' हमेशा रसायनशास्त्री हुआ करते थे। घरों के तलघर में उनकी प्रयोगशालाएँ होती थीं, जहाँ वे अपना अधिकांश समय बिताते थे। कुछ-कुछ अन्तराल पर किसी युवा पागल वैज्ञानिक के गलत मिश्रण बनाने से आग लगने की वारदातें या धमाके भी होते थे।

छठे दशक के आखिर तक इस प्रकार की चीज़ आगे या केन्द्र में नहीं रही। हालाँकि हान्ना, एक अनुभवी रसायनविद्, हमारे साथ स्कूल में पढ़ाती थी, फिर भी इसकी कोई माँग नहीं थी।

हमने रसायन प्रयोगशाला के बिना स्कूल खोला। और सालों तक यही स्थिति रही।

तब एक दिन कई विद्यार्थियों को रसायनशास्त्र का कीड़ा लगा। कुछ करने की ज़रूरत आ पड़ी।

उस समय किसी भी काम के लिए पैसा नहीं था। सत्तर के दशक की शुरुआत थी और हम कड़ा संघर्ष कर रहे थे। प्रयोगशाला के उपकरणों की कीमतें हमारी कल्पना से परे थीं। अगर हम वह करने की कोशिश करते जो हरेक स्कूल करता था, तो हमें प्रयोगशाला पर उतना ही खर्च करना होता जितना हमने स्कूल शुरू होने से अब तक बाकी सभी चीज़ों पर किया था।

स्कूल से जुड़ने से पहले हान्ना एम.आई.टी. में जीव-रसायनशास्त्री के रूप में काम कर चुकी थी। वहाँ और अन्य विश्वविद्यालयों में अब भी उसके दोस्त थे। उसे याद था कि उसके पुराने अड्डों में काम किस तरह किया जाता था। हर साल लोग नई परियोजनाओं पर अपना काम चमचमाते नए उपकरणों के साथ प्रारम्भ करते थे। हर साल टनों पुराने उपकरणों और फर्नीचर को कबाड़ करार दिया जाता था।

उसने तय किया कि वह 'कबाड़' जुटाएगी जिसमें से ज़्यादातर नए जैसा ही बढ़िया होता था। बड़े धीरज से, अपनी सूची हाथ में थामे, हान्ना ने कई रसायन व जीवशास्त्र विभागों से सम्पर्क साधा। चन्द सप्ताहों में ही उसके पास सूची की हरेक चीज़ जुट गई।

ये उपकरण स्कूलों के लिए बनाई जाने वाली शैक्षिक सामग्री नहीं थे। हरेक उपकरण पेशेवर गुणवत्ता का थाः प्रयोगशाला की मेज़ें, एक सिंक, दराज़ों वाली अलमारियाँ, काँच का सामान, सूक्ष्मदर्शी, कुर्सियाँ, सब कुछ। हमें जो खरीदना पड़ा वह था एक अग्निशमन यंत्र, एक फायर ब्लैंकेट तथा कुछ लकड़ी, एक पंखा और एक अन्धड़ खिड़की ताकि हम एक छज्जा बना सकें। ऐसा नहीं था कि हमें छज्जा भी नहीं मिल सकता था; दरअसल सभी उपलब्ध छज्जे हमारे कमरे के लिए बहुत बड़े थे।

प्रयोगशाला को व्यवस्थित करने में कई महीने लगाए गए। जब स्थानीय निरीक्षकों ने उसे आशीर्वाद दे दिया तो वह उपयोग के लिए तैयार थी।

रसायनशास्त्र अभी भी बहुत लोकप्रिय नहीं है। हर साल बहुत थोड़ा-सा काम किया जाता है, पर उसे अन्दाज़ से किया जाता है।

सभी रासायनिक प्रयोग हमेशा प्रयोगशाला में ही नहीं किए जाते थे।

एक दिन स्कूल में प्रवेश करते ही मुझे कुछ अजीब-सी गन्ध आई। मैं उसे ठीक से पहचान नहीं पाया, क्योंकि ऐसी गन्ध से मेरा पहले कभी सामना नहीं हुआ था। गन्ध बिलकुल हल्की-सी थी और मुझे लगा कि वह तलघर से आ रही थी।

मैंने पूछताछ की। क्या किसी और को भी कोई अजीब-सी गन्ध आ रही है? नहीं, किसी को नहीं। पर कई लोग असहज थे। मैं रसोईघर में घुसा तो

विल्सन मण्डली वहीं थी; वे छत की ओर ताकते हुए अपनी मुस्कान छिपाने की कोशिश करने लगे।

मुझे पर्याप्त सुराग मिल गया। कोई नई खुराफात पक रही है, मैंने सोचा। और सच में बात पकने की ही निकली।

तलघर के पिछवाड़े, सबकी नज़रों से दूर, उन्होंने एक मीथेन संयंत्र बना लिया था!

यह समय सत्तर के दशक के मध्य का था। देश, दुनिया एक गम्भीर ऊर्जा संकट से गुज़र रहे थे। चारों ओर वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की चर्चा थीः जल ऊर्जा, सौर ऊर्जा, ज्वार-भाटे की ऊर्जा और कबाड़ से ऊर्जा। और कोई भी चीज़ ज्वनलशील गैस बनाने में उतनी प्रभावशाली नहीं थी जितना पशु-मल।

मैं हमेशा यह सोचा करता था कि विल्सन मण्डली खरगोश पालन के दौरान उनके मल से क्या करती होगी। अब मुझे पता चल गया। उन्होंने बड़े धैर्य से टुकड़ों-टुकड़ों में गैस संयंत्र बना लिया था। उसे जोड़ने में उन्हें कुछ सप्ताह लगे थे। खरगोशों का मल खमीरण टंकी में पकता था और उससे निकली मीथेन गैस टंकियों में इकट्ठी की जाती थी। सब कुछ बिलकुल सरल था। यह सब महीनों तक चलता रहता यदि खरगोशों के मल की हल्की गन्ध स्कूल में फैलने न लगी होती।

ऐसा नहीं था कि विल्सन मण्डली ने अपनी खुराफात किसी से छुपाई हो। उन्होंने डेविड से अनुमति ली थी। वह स्थानीय निरीक्षकों के साथ स्कूल के सम्बन्धों के लिए ज़िम्मेदार था। डेविड रसायनशास्त्री नहीं था। उन्होंने बड़ी सावधानी से उसे ठीक वही कहा था जो वे उसे बताना चाहते थे। हम डेविड को दोष नहीं दे सकते थे। क्या यह महज़ संयोग था कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण पाए हुए एक भी शिक्षक से परामर्श नहीं लिया गया था?

मीथेन संयंत्र हटा दिया गया, इससे पहले कि हमें यह जानने का मौका मिल पाता कि वह ऊर्जा का कितना सशक्त स्रोत हो सकता है।

* * *

9

हम शिकार को जाएँगे

मीथेन संयंत्र की सामग्री सडबरी कस्बे के कबाड़ स्थल से आई थी। ठीक उसी तरह जैसे वहाँ से चार घास-कटाई मशीनों की सामग्री सालों से आती रही थी। वहीं से साइकिलें, कारें, गोल्फ बग्घियाँ तथा शेष अटरम-शटरम सामान आता रहा था, जो उद्यमी लड़के इकट्ठा करते थे। हर सप्ताह विल्सन मण्डली और उनके दोस्त हान्ना को घेरकर कबाड़ स्थल तक ले जाते ताकि वह सामग्री की जाँच-परख कर ले।

यह विचार अतिवादी था, पर उसकी जड़ें सडबरी वैली की परम्परा में थीं। हमें कभी यह समझ ही नहीं आया कि स्कूल नई सामग्रियों पर इतना खर्च क्यों करते हैं, जब इतनी अच्छी काम में ली गई चीज़ें सस्ते में या मुफ्त में उपलब्ध हैं।

स्कूल प्रारम्भ करने से पहले हमें अपने भवनों को साज़ो-सामान से लैस करना था। हमें सबसे अधिक ज़रूरत फर्नीचर की थीः मेज़, कुर्सियाँ, सोफे, लैम्प, कालीन। हमारे पास सीमित राशि थी, सो हम इलाके की उन सारी दुकानों में घूमे जहाँ काम में लिया गया फर्नीचर मिलता था।

कई हताशाओं के बाद, एक दिन हम दक्षिण फ्रैमिंग्हैम स्थित लू की दुकान में पहुँचे। हमने उसे बताया कि हम कौन हैं और हमें क्या चाहिए।

"मुझे विश्वास नहीं हो रहा," वह बोला। "आपने वह मकान खरीदा, उसके

सिर्फ छह महीने पहले उसके पूर्व मालिक मेरे पास आए और कहा कि मैं वह ढेर-सा सुन्दर पुराना फर्नीचर खरीद लूँ जिससे लगभग पूरा खलिहान भरा हुआ था। वह कौड़ियों के मोल चला गया, और वह दस साल तक आपके काम में आ सकता था।" लू को हम पर रहम आया। हम दुखी थे। उस दिन से वह हमारा मुख्य सप्लायर बन गया। उसके गोदाम में जब भी कोई छुटपुट सामान आता, वह साल दर साल हम तक उसे पहुँचाता।

हमने जो कुछ इकट्‌ठा किया, उसमें से अधिकांश हमें मुफ्त में मिला। अभिभावक हमें इस्तेमाल किए सोफे व कालीन दे देते थे, जब वे अपने लिए नया सामान खरीदते थे। एक दिन एलन व्हाइट अपने निर्माण काम से आया, जहाँ वह एक अपार्टमेंट की लॉबी को पुनर्निर्मित कर रहा था। उसके पास एक कालीन था जो उसने उस परिसर से अभी-अभी हटाया था। वह बढ़िया हालत में था। हमारे सबसे बड़े कमरे का फर्श जल्दी ही वॉल टू वॉल कालीन से सज गया।

हमारी चीज़ों के रंग हमेशा एक-दूसरे से मेल नहीं खाते थे, पर हम कोशिश ज़रूर करते थे। सौन्दर्यबोध को बेहतर बनाने के लिए हम चीज़ें इधर-उधर हटाते-धरते थे। सच तो यह है कि सालों तक हमारे सबसे बड़े विवाद सजावट के बारे में ही रहे। विद्यार्थी और स्टाफ घण्टों रंग संयोजन या

फर्नीचर के स्थान के फायदे-नुकसान पर बहसबाज़ी कर सकते थे। यह आदान-प्रदान गर्म भी हो सकता था; आखिर मामला सौन्दर्यबोध के सिद्धान्त का जो था।

इस दौर में इन विवादों को सीमित करने के लिए हमने एक समिति बनाई जो इनसे निपटे। उसमें कोई भी शामिल हो सकता था। पहले-पहल इसका नामकरण हुआ 'रँगने और टाँगने वाली समिति', गतिविधियाँ जो शायद इस क्षेत्र को समेटती थीं! बाद में, समिति ने अधिक निरपेक्ष नाम अपनाया, 'सौन्दर्यबोध समिति'। इस समिति में जो निश्चित रूप से सुन्दर नहीं है वह है इसकी बहसों के दौरान होने वाली गरमागरमी और शोरगुल।

बहुत कुछ मुफ्त में आया था। उदाहरण के लिए, रासायनिक प्रयोगशाला। फिसलपट्टी और झूले का सेट जो हमारे एक परिवार ने पिता की मृत्यु पर दान दिया था। वह मृतक इंजीनियर था जिसने यह सेट अपने बच्चों के लिए डिज़ाइन किया और बनाया था, जो अब बड़े हो चुके थे। हमारे डार्करूम का अधिकतर सामान दान में मिला था, और पुस्तकालय की अधिकांश किताबें भी, और वह सच में उम्दा है। हमें कभी रेफ्रिजरेटर खरीदना नहीं पड़ा। हमारी शिविर यात्राओं के लिए कुछ अच्छे टैंट भी हमें मिले।

एक क्रिसमस की पूर्व संध्या को स्कूल में कोई घुसा और हमारे दो विद्युत आई.बी.एम. टाइपराइटर चोरी हो गए – ये ही दो चीज़ें वास्तव में कीमती थीं। दो बच्चों की साइकिलें और गिटार भी गए। और स्टीरियो सिस्टम भी। स्कूल के लिए वे छुट्टियाँ उदासी भरी थीं।

जनवरी की शुरुआत में एक अभिभावक ने अपना पुराना विद्युत रैमिंग्टन, जो अभी भी काम करता था, हमें दे दिया था। जब मैं स्थानीय टाइपराइटर दुकान पर इस्तेमालशुदा टाइपराइटरों की पूछताछ करने गया, तो हम बात करने लगे। बात खत्म हुई तब तक दुकान मालिक ने हमें एक और रैमिंग्टन सहानुभूतिपूर्वक दान कर दिया था! साल भर के अन्दर, जब तक दोनों पुराने रैमिंग्टन अन्धाधुन्ध उपयोग के चलते मृतप्राय हो गए थे, हमें एक और विद्युतचालित आई.बी.एम. व एक अधिक बड़ा रैमिंग्टन दान में मिल गया।

अक्सर हमें अपनी माँग से ज़्यादा ही मिलता। जब हमने पहले-पहल किताबें स्वीकारना प्रारम्भ किया, हम सब कुछ रख लेते थे। जल्दी ही हमारा

तलघर और अटारी ऐसी विलक्षण पुस्तकों से भर गए जो किसी आइवी लीग स्कूल के योग्य हों! सौभाग्य से उनकी ढुलाई का खर्च हमें वहन नहीं करना पड़ा। एक ऐसा पुस्तक विक्रेता उन्हें उठा ले गया, और कुछ पैसे भी दे गया, जो आजकल कम पाए जाते हैं।

और एक समय वह भी था जब हमारा स्कूल प्रयुक्त उपकरणों की एक दुकान-सा लगता था, क्योंकि कई फालतू रेफ्रिजरेटरों की एक कतार-सी लगी हुई थी।

या वह दिन जब हमें छह बड़ी व्यावसायिक बुनाई मशीनें देने का प्रस्ताव दिया गया। वे काम करती थीं, पर उनका चलन खत्म हो चुका था। दानकर्ता स्कूल के न्यासी थे, और एक बड़े बुनाई कारखाने के मालिक थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि हम उन मशीनों का उपयोग बुनाई सिखाने और स्वेटर उत्पादन के लिए कर सकेंगे, ताकि स्कूल को वित्तीय मदद मिल सके। वे हमारी आधी मंज़िल भर देतीं! बहुत मुश्किल से हम इस प्रस्ताव को मना कर सके, पर मुझे पक्का पता नहीं कि वे सज्जन इस भावना से कभी उबर सके या नहीं कि हम नखरे दिखा रहे हैं।

बसन्त की एक सुबह को जोन बदहवास-सी घुसी। “मुझे मार्ज को लेकर ठीक इसी पल बाहर जाना है,” उसने जल्दी दर्शाते हुए कहा।

दस मिनट बाद वे गर्व से फूली लौटीं। स्कूल आते समय जोन ने बेंत की चार कुर्सियाँ कूड़े के एक ढेर पर रखी देखी थीं, जो कोई मालिक सड़क पर छोड़ गया था ताकि वे सुबह उठा ली जाएँ। सफाई ट्रक चन्द मिनटों में ही आने वाला था, और जोन उससे पहले वहाँ पहुँचना चाहती थी। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ।

“ये तो कबाड़ लगती हैं,” मैंने कहा, “हमारे स्तर से भी।”

“रुको और देखो,” जोन और मार्ज ने जवाब दिया।

मैं रुका – और तब देखा। उनकी पारखी आँखों ने चार बढ़िया कुर्सियाँ ढूँढ ली थीं, जिन्हें बस थोड़ी-सी सफाई और छोटी-मोटी मरम्मत की दरकार थी। दो घण्टे बाद, स्कूल में लगभग नई-सी चमचमाती कुर्सियों का सेट था, जो हमारे पुनर्निर्मित संगीत कक्ष की शोभा बढ़ा रहा था।

यह सब रोज़मर्रा के काम का हिस्सा था।

* * *

10

विशेष खर्चे

बेशक, सब कुछ मुफ्त या काम में लिया हुआ और सस्ता नहीं है।

स्कूल भवन एक ऐसे चूल्हे के साथ मिला जो निश्चित तौर पर एक एन्टीक जैसा लगता था। हमने उसे जस का तस छोड़ दिया ताकि अगर कोई पकाना सीखना चाहे तो वह काम में आ जाए।

परन्तु किस्मत ने ऐसा मोड़ लिया कि साल दर साल ढेरों बच्चे पाक कला में रुचि लेने लगे और हमारे स्टाफ में एक बेहद उम्दा पाकशास्त्री थे। साथ ही कई उतने अच्छे तो नहीं, पर फिर भी अच्छे रसोइए थे। दूसरे शब्दों में, सडबरी वैली में पाक कला हमेशा महत्वपूर्ण रही। असल में, स्कूल में कुछ साल बिताने के बाद हमारी आवासीय 'मास्टर शेफ' मार्गरेट पार्रा ने एक कुकबुक प्रकाशित की जिसने उसका प्रयोग करने वाले हज़ारों लोगों को आनन्दित किया है। और हमारे कई स्नातक प्रशिक्षु बनकर या उच्चतर स्कूलों में जाकर स्वयं मास्टर शेफ बने हैं।

यह सब मुझे चूल्हे की ओर वापस लाता है। हमें यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि यह स्थिति चल नहीं सकेगी। चूल्हा केवल पुराना ही नहीं था। वह बिलकुल बेकार था। और इस्तेमाल किए गए चूल्हे का विचार किसी को पसन्द नहीं आया। आखिर हमारे पास वैसा एक चूल्हा था ही।

जिस चीज़ की साफ तौर पर ज़रूरत थी वह था 'विशेष व्यय', जैसा कि

ऐसा खर्च कहलाता है। चार बर्नर वाले दो बड़े चूल्हे खरीदना काफी था। मुश्किल सिर्फ यह थी कि हमारे नियमित बजट में ऐसा कोई प्रावधान रखा नहीं गया था, और उसे इधर-उधर से कटौती कर निकालने का कोई उपाय नहीं था।

विशेष खर्च के लिए विशेष उपाय करना ज़रूरी बन गया। सो पाक कला में रुचि रखने वाले सभी बच्चों और स्टाफ के सदस्यों ने 'बेक सेल' की एक ृंखला आयोजित की ताकि नए चूल्हों के लिए पैसा इकट्ठा किया जा सके।

शुरुआत 'थैंक्सगिविंग' बेक सेल के आयोजन से की गई। सभी अभिभावकों को सूचना भेजी गई जिसमें दर सूची और माँग प्रपत्र थे। प्रतिक्रिया अच्छी थी और इस काम में शामिल सभी लोगों ने बड़े पैमाने पर उत्पादन को सम्हालना सीखा।

फिर क्रिसमस अवकाश बेक सेल आया, जो स्थानीय सुपर मार्केट में आयोजित किया गया, जिसने हमें हमारे उदात्त काम के लिए जगह उपलब्ध करवाई। विद्यार्थियों के एक समूह ने पूरी रात मेरे घर बिताई और डबलरोटियाँ, केक, कुकी, रोल, टार्ट, मफिन, बिस्कुट आदि ढेरों लज़ीज़ पकवान बनाए। जब सुबह हुई तो हम में से कुछ स्वयं को घसीटकर बाज़ार पहुँचे और दुकान सजा दी। दोपहर एक बजे तक सब कुछ बिक चुका था।

पूरे साल छोटे-छोटे बेक सेल के माध्यम से, जो विद्यार्थियों और शिक्षकों को लक्षित थे, थोड़ी-बहुत नियमित आय होती रही। कभी-कभार सैंडविच, सलाद या गरमागरम भोजन की सेल भी की गई।

हमारा अन्तिम प्रयास ईस्टर में किया गया, एक बार फिर अभिभावकों के लिए। वह खत्म हुआ तो हमारे पास चूल्हों के लिए ज़रूरी पैसे जुट गए थे। और विशेष व्यय के लिए सडबरी वैली परम्परा भी स्थापित हो गई थी।

और यही व्यवस्था तब से रही है। जब भी कोई स्कूल बैठक में विशेष वित्त की माँग रखता है, प्रतिक्रिया यह होती हैः "अगर खर्च में इसकी ज़रूरत है, तो पैसे जुगाड़ने में तुम्हें मदद करनी होगी।" कभी स्कूल बैठक का आग्रह रहता है कि पूरी राशि आवेदनकर्ता ही एकत्रित करें; कभी केवल प्रतीक राशि चाही जाती है; पर अधिकतर समय स्कूल आधी भागीदारी करता है।

ऐसी व्यवस्था ने स्कूल के आसपास के लोगों को कई सालों से काफी बढ़िया भोजन उपलब्ध करवाया है, क्योंकि खाने-पीने की सामग्री की बिक्री तब ही सफल होती है जब पकाया गया खाना स्वादिष्ट हो। अन्य चीज़ों के साथ, खेल गतिविधियों के उपकरण, डार्करूम, चमड़े की कार्यशाला तथा कई स्टीरियो सिस्टम आदि भी एकत्रित की गई राशियों से खरीदे गए हैं। कभी-कभी पैसा जमा करने के लिए दूसरी गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती हैं, जैसे एक बार चार विद्यार्थियों ने स्कूल के मैदानों की घास-कटाई की ताकि लकड़ी से काम करने की कार्यशाला के लिए सामान जुटाया जा सके।

धन इकट्ठा करने का यह केन्द्रित तरीका इतना सफल रहा कि पूर्व विद्यार्थियों ने भी इससे जुड़ना तय किया। हर साल वे पूछते हैं कि स्कूल की कौन-सी विशेष आवश्यकता है जो सामान्य बजट के बाहर है। पहली आवश्यकता एक कम्प्यूटर की थी। बाद में एक प्रिंटर की तथा पुस्तकालय में अलमारियों की भी। फिर एक बड़े कालीन, फर्नीचर और खलिहान की मरम्मत और नवीनीकरण आदि की ज़रूरत भी पड़ी।

इन चीज़ों के खर्च के लिए पूर्व विद्यार्थियों ने फ्रेमिंग्हैम में यार्ड-सेल जैसा आयोजन किया। पर जो बड़े मज़ेदार आयोजन रहे वे स्कूल में नीलामी के थे, जिसमें विद्यार्थियों, अभिभावकों और पूर्व विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता, जिसमें काउंटर के दोनों ओर वे ही रहते थे। इसमें उनके द्वारा उपलब्ध कराई गई वस्तुओं और सेवाओं की नीलामी होती, और वे खुद ही उनके लिए बोलियाँ लगाते और उन्हें खरीदते। कुल मिलाकर, यह हमेशा ही एक उम्दा सामाजिक आयोजन होता है।

नीलामी में जो सेवाएँ पेश की जाती हैं वे एकदम असाधारण होती हैं, जो विविध प्रकार की स्थानीय प्रतिभा को सामने लाती हैं। कोई वकील वसीयतनामा बनाने की नीलामी के लिए अपनी सेवाएँ पेश करता है; कोई भवन निर्माता नए मकान बनाने या नवीनीकरण के लिए मदद प्रस्तुत करता है; कोई नौका मालिक परिवार को समुद्र की सैर करवाने का प्रस्ताव रखता है। विद्यार्थी दिन भर के लिए बाग-बगीचों की या बच्चों की देखभाल का प्रस्ताव रखते हैं।

और स्कूल के विशेष व्यय का खर्च निकल आता है।

यह तरीका उद्यमिता का है – और संक्रामक है। एक दिन तीन दस वर्षीय

लड़कों ने, जो मछली पकड़ने के शौकीन थे, तय किया कि उन्हें एक नाव चाहिए। मामला बड़ी राशि का था, और एक बार फिर स्कूल में होने वाले बेक सेल पैसा इकट्ठा करने की कारगर विधि सिद्ध हुए।

पर समस्या यह थी कि यह स्कूली व्यय नहीं था, निजी खर्च था।

तिकड़ी ने इस पर खूब सोच-विचार किया और स्कूल बैठक में अन्ततः यह सौदा रखाः "आप हमें निजी बेक सेल की छूट निश्चित शर्तों पर दें, और हम स्कूल को लाभ का 10 प्रतिशत देंगे।"

इस तरह स्कूल में निजी छूट का जन्म हुआ। बेशक, हमारे लिए यह बड़ा धन्धा नहीं था, पर यह उद्यमियों के दिलों के बेहद करीब था।

उन्होंने नाव खरीदने के लिए पैसे इकट्ठे किए। फिर एक ट्रेलर के लिए। और फिर एक मोटर के लिए।

और स्कूल में राशि जुगाड़ने की रंगीन परम्पराओं में एक और परम्परा आ जुड़ी।

* * *

11

नए शौक तथा फैशन

सडबरी वैली एक ‘मस्त’ स्कूल है।

यहाँ कोई तयशुदा पाठ्यक्रम या विभाग नहीं हैं। सब कुछ विद्यार्थियों की रुचियों से प्रारम्भ और समाप्त होता है। इसका मतलब यह है कि हम समय के साथ चल सकते हैं। आखिर तक।

सत्तर के दशक के मध्य में चमड़े के काम का भूत देश के एक से दूसरे छोर तक सवार था। जल्दी ही हमारे किशोर भी इसमें घुस गए। उन्हें प्रारम्भिक सहायता स्टाफ में लकड़ी के विशेषज्ञ जिम नैश से मिली, जो इत्तिफाक से चमड़े के कारीगर भी थे।

जल्दी ही बच्चे और जिम स्कूल बैठक से यह अनुमति लेने आए कि वे हमारे सामान्य उपयोग के कमरों में से एक में चर्म कारखाना बनाना चाहते हैं। वे दल-बल समेत आए, और उन्होंने अपने मामले की पैरवी की। इसके व्यावहारिक पक्ष की देखभाल के लिए चमड़े में रुचि रखने वालों का एक आधिकारिक समूह बनाया गया।

इन सब पर खूब शोध किया गया कि कैसे चीज़ें अच्छी तरह से व्यवस्थित की जाएँ और कहाँ से सबसे अच्छी दरों पर सामग्री मिलेगी। कुछ ही समय में स्कूल बैठक और कुछ वित्त उगाही की मदद से एक पूरी तरह लैस चमड़ा कारखाना बन गया और काम करने लगा।

रोज़मर्रा के खर्चों के लिए हमने एक नया तरीका विकसित किया जो बाद में बारम्बार उपयोगी रहा। मौजूदा खर्चों के लिए चमड़ा कारखाना एक छोटे व्यवसाय की तरह चलाया गया। बीज राशि स्कूल बैठक द्वारा ऋण के रूप में दी गई। इससे रोज़ की ज़रूरी सामग्री के लिए, जो मुख्यतः तरह-तरह का चमड़ा था, पर साथ ही बकलों, खटकों तथा बटनों जैसी तमाम चीज़ों के लिए भी पूँजी उपलब्ध हुई। सामग्री थोक के भाव बड़ी मात्रा में खरीदी जाती, और तब कारखाने में उपयोग करने वालों को थोड़ी-सी अतिरिक्त राशि पर बेची जाती। यह सब साख पर चलता था। अधिक समय बीता नहीं होगा कि लोग भारी मात्राओं में बेल्टें, बटुए, जूते, कड़े, पाज़ेबें तथा पैंट आदि बनाने लगे। चमड़ा उद्यम अपना कर्ज़ चुका पाया। अब इसे किसी दूसरी गतिविधि की बीज राशि की तरह उपयोग में लिया जा सकता था। बल्कि कुछ राशि बच भी गई जिससे कभी कोई नया और अनोखे किस्म का उपकरण खरीदा जा सके।

अपने शिखर पर चर्म कारखाना स्कूल के मुख्य केन्द्रों में एक था। वहाँ लगभग हर दिन एक दर्जन या उससे भी अधिक लोग घण्टों अपनी परियोजनाओं पर काम करते नज़र आते थे। क्रिसमस के पहले तो वहाँ सिर्फ खड़े रहने भर की जगह मिल पाती, क्योंकि लोग हड़बड़ी में अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए उपहार बना रहे होते थे।

और फिर जैसे यह लहर उठी थी, वैसे ही खत्म भी हो गई। यह शौक पहले शिखर पर चढ़ा और तब देश में, और स्कूल में, शिथिल पड़ गया। कुछ सालों की गहमागहमी के बाद कारखाना शान्त हो गया। कमरे का उपयोग लगभग ठप्प हो गया।

कुछ ही समय बाद उपकरण डिब्बों में बन्द हो गए, सामग्रियाँ बेच डाली गईं। कक्ष पुनः सामान्य उपयोग कक्ष में बदल गया। इस प्रक्रिया में कोई शोर-शराबा नहीं हुआ। सभी समझ गए थे कि मानव रुचियों के कुदरती चक्र के साथ किस तरह से पलटी खाना है।

चर्मकार्य की कहानी कई तरह के कामों में दोहराई गई है। कभी तो इसके केन्द्र में ऐसे शौक रहे जो देश भर में लोकप्रिय थे। बाकी लोगों की तरह हमें भी वीडियो-गेम्स, हैकी सैक, आइस स्केटिंग, प्राच्य धर्मों तथा जिमनास्टिक का शौक चर्राया। कई बार एक शौक आकर रुक गया और गहरी रुचि के

तौर पर विकसित हुआ। जब कम्प्यूटर आगे बढ़ दुनिया भर में प्रचलित हो गए, तब हमने भी एक कम्प्यूटर खरीदा। इसकी राशि नीलामी से एकत्रित की गई। साल दर साल इसने कम्प्यूटर बाज़ीगरों को इस माध्यम के तमाम गुर सिखाए। पाँच साल एक एपल-II के साथ बिताने के बाद, हमने एक बेहतर कम्प्यूटर खरीदा जो हमारा दफ्तर चलाता है और विशेषज्ञों के खेलने के लिए एक अधिक परिष्कृत उपकरण भी उपलब्ध करवाता है।

कभी-कभार समसामयिक घटनाएँ समूचे स्कूल समुदाय का ध्यान आकर्षित कर लेती हैं। जब वॉटरगेट सुनवाई, जिसके कारण आखिरकार राष्ट्रपति निक्सन को त्यागपत्र देना पड़ा, दिन-रात टीवी पर दिखाई जाने लगी तो हर ओर लोग घण्टों उसे ही देखते। कोई भी धारावाहिक इस सुनवाई जितना मोहक नहीं था। बड़े विद्यार्थियों ने 19 इंच का एक पुराना श्वेत-श्याम टीवी लाकर सबसे बड़े उपलब्ध कमरे में रखा और उसे देखने लगे। छोटे विद्यार्थी जल्दी ही वहाँ आ जुड़े और यदाकदा स्टाफ के सदस्य भी। सप्ताह दर सप्ताह ये सुनवाइयाँ राजनीति शास्त्र, अमरीकी इतिहास और समसामयिक घटनाओं के उच्चतर कोर्स के रूप में काम करती रहीं। विद्यार्थियों से रुचि के इससे अधिक ऊँचे स्तर की या अधिक ग्रहण शक्ति की कामना कोई रख ही नहीं सकता था।

याद है कि मुझे उस समय लगा थाः ऐसा और कहाँ हो सकता था? जिस समय देश भर के स्कूलों और कॉलेजों के शिक्षक व विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तकों और तयशुदा पाठ्यक्रम सामग्री से बँधे थे, हम खुद को बनते हुए इतिहास में आसानी से डुबा सके थे। सडबरी वैली में यह ज़रूरत नहीं थी कि हम तीन-चार साल इन्तज़ार करें कि यह सामग्री छनकर पाठ्यपुस्तकों में और विद्यार्थियों की रुचि के केन्द्र से बाहर पहुँचे।

जब सुनवाइयाँ समाप्त हुईं, जीवन अपने ढर्रे पर लौट आया। टीवी सेट का क्या करना है यह किसी को समझ ही नहीं आया। वह साल दो साल बेकार पड़ा रहा। एक दिन उसने काम करना ही बन्द कर दिया। हमें किसी दूसरे सेट को तब तक नहीं तलाशना पड़ा जब तक ईरानी बन्धकों का संकट पैदा नहीं हुआ।

* * *

12
स्कूल के निगम

जब एक जैसी रुचियाँ रखने वाले लोग साथ मिलते तो अक्सर स्वयं को संगठित करने के उपायों पर सोच-विचार करते। अपनी रोज़मर्रा की कार्रवाई को निरन्तरता और स्थायित्व देने के लिए उन्हें किसी तरह के ढाँचे की ज़रूरत थी। हमने इस आवश्यकता की पूर्ति का एक सरल उपाय तलाशा।

शेष स्कूलों में विशेष रुचियाँ विभागों या क्लबों के मार्फत होती थीं। हम जानते थे कि यह व्यवस्था हमें नहीं चाहिए। अपने-अपने क्षेत्रों की ईर्ष्यापूर्ण सुरक्षा करने वाली, लगभग शाश्वत विभागों की छवि हमें आकर्षक नहीं लगती थी। यह सडबरी वैली में सीखने और सिखाने के प्रवाह से मेल नहीं खाती थी। साठ के दशक की शुरुआत में मैंने 'सेवन सिस्टर कॉलेजों' में से एक के भौतिकशास्त्र विभाग में पढ़ाया था। पचास साल पहले वह विभाग कॉलेज का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा होगा। एक चार मंज़िला भवन में भौतिकशास्त्र विभाग एक मंज़िल के समूचे आधे भाग में पसरा था! जब तक मैं वहाँ पहुँचा, कॉलेज के 1000 से कहीं अधिक विद्यार्थियों में से केवल पाँच ऐसे विद्यार्थी थे जो भौतिकशास्त्र में विशेषज्ञता हासिल कर रहे थे। और वे भी सड़क पार स्थित सम्बद्ध कॉलेज में अध्ययन करते थे। इसके बावजूद विभाग एक मंज़िल के आधे भाग पर काबिज़ था जिसके कमरे अब लगभग खाली पड़े रहते थे। यह भी उस वक्त जब स्थान का इतना अभाव था कि कई नए भवन बनाए जा रहे थे। इसी तरह की विसंगतियाँ मैंने अनेकों बार दूसरी जगहों पर भी देखीं।

नहीं, धन्यवाद, हमें विभाग नहीं चाहिए। फिर क्या? हमें एक नई रचना का विचार सूझा, स्कूल निगम। निगम का गठन स्कूल बैठक की अनुमति द्वारा किसी परिभाषित उद्‌देश्य के लिए किया जाता था। निगम को स्वयं ही उसके लक्ष्यों की देखभाल करने का जनादेश दिया गया। वह स्कूल बैठक में तब ही लौटता जब उसे पैसे या सुविधाओं की आवश्यकता पड़ती। रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति निगम से जुड़ सकता था। निगम स्वयं को चलाता और प्रशासन सम्हालने के लिए एक कार्यकारी निदेशक को चुनता।

स्कूल निगम 'विभागीय कामकाज' करने का औपचारिक वाहन बन गया। इसकी कई अनोखी विशेषताएँ थीं: यह सबके लिए खुला था; उसका संचालन लोकतांत्रिक तरीके से होता था; और जब उसका मिशन अनावश्यक हो जाता तो वह सौम्यतापूर्वक विस्मृति में लुप्त हो सकता था।

जब स्कूल निगम का विचार पहले-पहल जन्मा और स्कूल बैठक द्वारा अनुमोदित हुआ, अचानक गहमागहमी बढ़ गई। सभी प्रकार के समूहों ने, जो अब तक रुचि क्षेत्रों को सम्हालते रहे थे, तय किया कि उन्हें भी आधिकारिक दर्जा पाना है। कुछ ही महीनों में कला और कला सम्बन्धी आपूर्तियों, मूर्तिशिल्प तथा कुम्हारी, संगीत, गायन, चर्मकारी, कैम्पिंग, हाईकिंग, रसायनशास्त्र, कक्षा गतिविधियों, बढ़ईगिरी, दृश्य-श्रव्य गतिविधियों, छायाचित्र आदि-आदि के लिए निगम बन गए। हम अपने पथ पर थे!

शुरुआत में लोगों ने सोचा कि निगम होने से अपनी पसन्दीदा परियोजनाओं के लिए वित्त पाने की सहूलियत होगी। जब लोग व्यक्तिगत स्तर पर पैसे की माँग करते तो स्कूल बैठक उनसे कड़ी पूछताछ करती और अक्सर उन्हें नाजायज़ मानकर खारिज कर देती। सो कई लोगों को लगा कि स्कूल निगम जैसी धाँसू लगने वाली इकाई के द्वारा रखा गया अनुरोध अधिक वज़नदार रहेगा। यह धारणा जल्दी ही निरस्त हो गई। वित्त के लिए प्रारम्भिक अनुरोधों को वही कड़ा बरताव मिला और उनमें से अधिकतर असफल रहीं।

कुछ समय बाद स्थिति व्यवस्थित हो गई और लोगों को निगमों में काम करने की आदत पड़ गई। कई निगमों की राह विगत वर्षों में काफी उतार-चढ़ाव की रही। दृश्य-श्रव्य निगम का जब पहले-पहल जन्म हुआ तो उसके बाद कुछ समय तक वह काफी कुछ सक्रिय रहा; फिल्मों, ध्वनि

उपकरणों, और खास तौर से स्कूल को अनुदान में मिले सचल टीवी कैमरा में कई बच्चों की रुचि थी। पर अन्ततः रुचि घट गई। वर्षों तक निगम में एक ही सदस्य रहा जो स्वयं को ही कार्यकारी निदेशक चुन लेता था। इसमें कोई गड़बड़ी नहीं थी क्योंकि निगम में न्यूनतम आवश्यक सदस्यों की संख्या का कोई नियम नहीं था। पर जब दृश्य-श्रव्य निगम स्कूल बैठक में कोई अनुरोध रखता तो हम सबको अपनी हँसी रोकने में काफी श्रम करना पड़ता क्योंकि अकेला सदस्य खुद को एक से अधिक तो बना ही नहीं सकता था। लम्बे अर्से तक चले इस सूखे के बाद लोगों की रुचि स्टीरियो उपकरणों में हुई और तब जाकर यह निगम पुनः सक्रिय हुआ।

कुछ निगमों में कई ऊर्जावान सदस्य होते हैं तो बाकियों में सिर्फ एक। चर्मकारी निगम के अच्छे दिनों में उसके तकरीबन पन्द्रह सक्रिय सदस्य थे; बढ़ईगिरी में आम तौर पर आधा दर्जन या कुछ अधिक सक्रिय सदस्य रहते हैं। फोटोग्राफी निगम में उतार-चढ़ाव होता रहता है, वह कभी तो रुचि की लहरों पर सवारी करता है और कभी उदासीनता के गड्ढों में गिर जाता है। पाक निगम में हमेशा एक बड़ा सक्रिय समूह मौजूद रहता है।

कुछ निगमों की प्रशासनिक ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। संसाधन निगम आवश्यकता पड़ने पर बाहरी शिक्षकों की व्यवस्था करता है ताकि शिक्षकों के रिक्त स्थान भरे जा सकें। कभी-कभार इस तरीके से स्कूल से जुड़ने वाला व्यक्ति रुक जाता है और स्कूल के नियमित स्टाफ का सदस्य बन जाता है। पुस्तकालय निगम स्कूल के पुस्तकालय को सम्हालता है तथा प्रेस निगम स्कूल प्रकाशनों को छापता और वितरित करता है।

रुचि कम होने के कारण कई निगमों की मौत हुई है और उन्हें दफना दिया गया है। चर्मकारी निगम का सबसे पहले अवसान हुआ। खेलकक्ष निगम कुछ साल चला और तब विघटित हो गया। काल कोठरी और ड्रैगन निगम लोकप्रियता की स्कूल की सबसे बड़ी लहर पर सवार होने के बाद अपनी आवृत्ति पूरी कर समाप्त हुआ। विभिन्न कला सम्बन्धी निगम अन्ततः एक कला एवं शिल्प निगम में समा गए।

और एक खेलकूद निगम है, जो बीच-बीच में मर जाता है पर फिर से अपनी राख में से उठ खड़ा होता है। इसकी शुरुआत उत्साही एथलीटों के एक बड़े

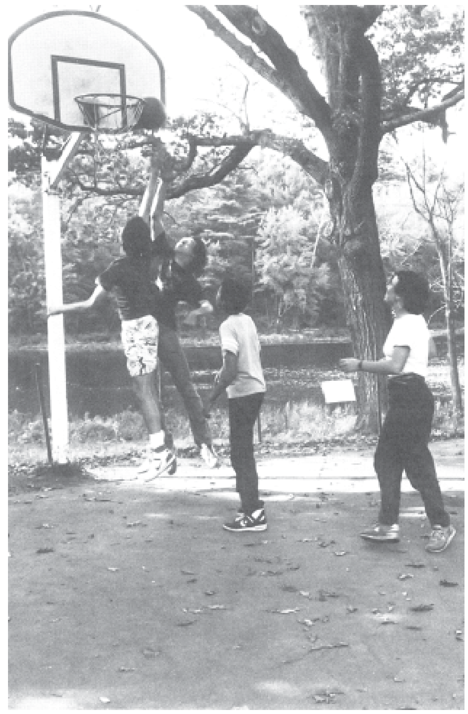

समूह ने की थी, जिन्हें जल्दी ही समझ आ गया कि किसी खेल को खेलना उसके उपकरणों की देखभाल करने, उनको खरीदने, उनकी फेहरिस्त बनाने आदि की तुलना में कहीं अधिक आसान है। खेलकूद निगम खत्म हुआ। तब एक नई पीढ़ी आई जिसने स्कूल बैठक से वादा किया कि वे सब कुछ सही तरीके से करेंगे। निगम का यह नया अवतार साल भर चला। तब खेलकूद निगम 2 समाप्त हुआ। कुछ सालों बाद एक नया समूह आया जो निश्चित रूप से, पूरी तरह से, और सकारात्मक रूप से व्यवस्थित होने और खेलकूद उपकरणों की पूरी ज़िम्मेदारी वहन करने को प्रस्तुत था। स्कूल बैठक ने नई सामग्रियों के लिए कुछ राशि दाँव पर लगाई और प्रतीक्षा की। साल भर बाद वे भी अपने पूर्वजों के रास्ते बढ़ चले। फिलहाल हम खेलकूद निगम 5 पर काम कर रहे हैं। आशा शाश्वत होती है। सम्भव है कि खुले मैदानों में कुछ ऐसा हो जो व्यवस्था और संगठन को मखौल में तब्दील कर देता हो।

* * *

13
विवेकाधीन खाते

सभी खर्चे सूमहों के लिए नहीं होते। अक्सर लोगों को कुछ चीज़ें खुद अपने लिए भी खरीदनी पड़ती हैं। जब कोई कुछ पकाता है, या चमड़े की कोई वस्तु बनाता है, या फिल्म बनाता है, या चक्के पर कुछ भाँड गढ़ता है, तो उसे इस्तेमाल की गई सामग्री का पैसा खुद चुकाना पड़ता है।

इसकी शुरुआत रसोईघर से हुई। पहले सभी अपना-अपना सामान लेकर आते। जल्दी ही समझ आया कि यह बेवकूफी है। इसमें हरेक व्यक्ति को बहुत-सा काम करना पड़ता और लोग कुछ सामग्रियाँ लाना भूल भी जाते। सो हर बार एक व्यक्ति सबके लिए खरीदारी करने लगा।

यह व्यवस्था सामग्री जुटाने के लिए तो कारगर थी। पर समस्या पैसों की भी होने लगी। चीज़ें लाना भूलने के बदले बच्चे पैसे लाना भूल जाते। और जब वे पैसे ले आते तो हमें लगता कि काश वे भूल गए होते, क्योंकि हमें नोटों और सिक्कों का हिसाब करना पड़ता और काफी राशि ढोनी पड़ती।

एक नए विचार की ज़रूरत थी।

यह विचार प्रत्येक विद्यार्थी और शिक्षक के लिए 'व्यक्तिगत विवेकाधीन खाते' के रूप में आया। हमने एक छोटा बैंक बनाना तय किया। हरेक व्यक्ति का अपना खाता खुला जिसमें वह पैसे जमा करवा सकता था – जैसे एक बार में 10 डॉलर।

तब हमने एक सप्लायर को तलाशा जो चैक की तरह दिखने वाली सस्ती रसीदें बेचता था। और लो! व्यक्तिगत खाते चैक खाते बन गए। चैक देकर उनसे पैसे निकाले जा सकते थे। सप्ताह में एक बार कोई इन आन्तरिक चैकों की जाँच करता और सभी खातों की बची राशि का हिसाब ठीक कर देता। स्कूल में नकदी की ज़रूरत अब न रही।

दरअसल इस दिशा में हमारा पहला प्रयास थोड़ा अलग था। हमने व्यवस्था की शुरुआत हर साल प्रत्येक व्यक्ति के खाते में 10 डॉलर जमा करने से की। हमने कहा, "यह पैसा स्कूल में खरीदी जाने वाली शैक्षणिक सामग्री के लिए है। क्योंकि हम बहुत ज़्यादा निःशुल्क सामग्री नहीं देते, हम आपकी फीस में से 10 डॉलर हर विद्यार्थी के व्यक्तिगत खाते में डाल रहे हैं। इसका उपयोग उन सामग्रियों को खरीदने के लिए होगा जिनकी ज़रूरत उन्हें साल भर के दौरान पड़ेगी। अगर उन्हें अधिक पैसों की ज़रूरत पड़े तो उन्हें शेष राशि स्वयं जमा करवानी होगी।"

यह सब बड़ा तर्कसंगत लगता था। पर समस्या यह थी कि वह कारगर नहीं रहा। जल्दी ही हमें 'मुफ्तखोरी' के मनोविज्ञान का सबक समझ में आ गया।

जैसे ही सबको पता चला कि उनके पास जेब से निकाले बिना खर्च करने के लिए 10 डॉलर हैं, वे उसे खर्चने के तरीके सोचने लगे। जिन बच्चों ने पहले जेब से धेला भी नहीं खर्चा था उनकी रुचि भी अचानक ऐसी चीज़ों में हो गई जिनकी कीमत लगती थी। पैसा महज़ इसलिए अछूता पड़ा रह जाए क्योंकि उससे किसी चीज़ को खरीदने का तरीका आपको सूझा न हो, बेवकूफी माना जाने लगा।

अपने दर्शन पर पूर्ण विश्वास के चलते हमने इन खर्चों के अनुमोदन की कोई व्यवस्था नहीं की थी। "अगर पैसा निजी विवेक के अनुसार खर्चा जाना है, तो वह वैसे ही खर्चा जाए," और "इसे तय करने में लोगों को अपने, सिर्फ अपने ही विवेक का उपयोग करना है।" बेशक हम यह गौर करने से बच नहीं सके कि लोग खरीद क्या रहे हैं। स्कूल के बही-खाते व फाइलें सबके लिए खुली रहती हैं।

मेरा खयाल है कि लोग उस समय शंकालु होने लगे जब पैसा रॉक संगीत

के रिकॉर्ड खरीदने पर खर्चा जाने लगा। हम में से कई लोगों को लगने लगा कि यह शैक्षणिक आवश्यकताओं के विचार के साथ कुछ ज़्यादा ही खींचतान है। कुछ ही समय बाद हमने ध्यान दिया कि स्कूली सामग्री में एक नई अवधारणा नियमित रूप से खरीद हिसाब में आ रही हैः पिज्ज़ा। लगता है कि इससे धीरज टूट गया। स्कूल बैठक सदस्यों में से अधिकांश ने तय किया कि स्कूल को लोगों को व्यक्तिगत उपहार देने के धन्धे में नहीं पड़ना चाहिए। 10 डॉलर के अप्रत्याशित लाभ को वापस ले लिया गया।

विवेकाधीन खाते सुचारू रूप से काम करते हैं। अक्सर स्कूल निगम सदस्यों के निजी उपयोग के लिए थोक में सामग्रियाँ खरीदते हैं। इनका भुगतान आन्तरिक चैकों से होता है। इससे हमें न केवल चीज़ें अच्छी दरों पर मिलती हैं, बल्कि यह भरोसा भी रहता है कि ज़रूरत की पूरी सामग्री उपलब्ध होगी।

और हाँ, हमारे यहाँ भी ऐसे खाते हैं जिनमें से जमा से अधिक राशि निकाली गई हो! और बीच-बीच में कोई चैक बैरंग लौट आता है। उसी तरह जैसे बाहरी दुनिया में।

* * *

14

पाक कला

तन्दूर में पक रही ताज़ा ब्रेड की खुशबू स्कूल में फैल रही थी। धीमे-धीमे लोग रसोईघर में आकर ब्रेड के तन्दूर से निकलने का इन्तज़ार करने लगे। चन्द मिनटों बाद मार्गरेट पार्रा सभी आगन्तुकों को मोटे गर्म टुकड़े काटकर बेचने लगी। आय पाक निगम को जानी थी। मक्खन कीमत में शामिल था।

विगत सालों में यह दृश्य अक्सर दोहराया गया। ब्रेड, पिज़्ज़ा, केक, पाई, कुकी, बिस्कुट व तमाम दूसरे व्यंजन मार्गरेट के पिटारे से निकल हमारे प्रशंसक पेटों तक पहुँचते।

पर सभी लोग पाने वाले नहीं होते थे। सहायकों की एक छोटी सेना हमेशा काम करने में मदद करती थी। कभी-कभार वे मार्गरेट से उनके साथ मिलकर कुछ खास पकाने को कहते; कभी वह खुद ही एक सूचना टाँग देती कि आगामी मंगलवार को वह फलाँ-फलाँ पकाने वाली है, और लोग उस पर हस्ताक्षर कर उसके साथ जुड़ते।

क्या दृश्य होता! किसी दिन सात, आठ या नौ साल के छुटके जमा होते। किसी दूसरे दिन किशोरों की भीड़ लगती। पर अधिकतर हर उम्र के बच्चे साथ-साथ काम करते। वहाँ 'मस्त' बच्चों के साथ 'पढ़ाकू' भी होते, कुशल-हस्त बच्चों के साथ अनगढ़ काम करने वाले, जानकार बच्चों के साथ नौसिखिया बच्चे। सबके मन में एक ही विचार होता – मार्गरेट के साथ काम

करना, पकाना-बनाना सीखना, और साथ ही कुछ और भी पाना। अगर वे सामग्री के पैसे चुका देते तो वे अपनी मेहनत के फल को घर ले जा सकते थे – उदाहरण के लिए पारिवारिक रात्रि भोजन के लिए पास्ता, या कोई बढ़िया मिष्ठान्न। अन्यथा शेष स्कूल खाने का काम करता और पाक निगम का खाता कुछ और बढ़ जाता।

मार्गरेट स्कूल के प्रथम सोलह वर्षों तक उसकी एक अनूठी संस्था रही, और तब सक्रिय जीवन से सेवानिवृत्त हुई। उम्दा रसोइया और श्रेष्ठ शिक्षिका मार्गरेट की विशेषता थी उसकी समझदारी। एक मध्यपश्चिमी फार्म में जन्मी और पली मार्गरेट एक अमरीकी नौसेना अधिकारी की पत्नी थी। तीसरे और चौथे दशकों में वह अपने पति के साथ दुनिया भर में घूमी। और यह उसे स्वयं अपने बूते करना पड़ा क्योंकि उन दिनों नौसेना परिवार को एक से दूसरे स्थान पहुँचाने में मदद नहीं देती थी। नौसेना के तमाम किस्सों और नौसेना की भाषा की विशेषज्ञता के साथ मार्गरेट ने लोगों की गहन समझ भी अर्जित की थी।

बच्चों को उसका साथ हमेशा कम लगता। सभी मार्गरेट को चाहते थे। सबसे कठोर किशोर भी उसे मित्र मान दिल के करीब रखते थे। वह धूम्रपान करती थी और उनकी बराबरी में घण्टों धुआँ उगलती थी। जब भी मार्गरेट को लगता कि वे हद पार कर रहे हैं, वह उन्हें डपटने से नहीं झिझकती थी। पर वह हमेशा उनका और उनके बीच अन्तरों का सम्मान करती थी। छह साल के नन्हों को भी ठीक वैसा आचरण मिलता था जितना युवा वयस्कों को। अगर उनमें से कोई सफाई में आलस करता तो उसे जल्दी ही मार्गरेट की ज़ोरदार आवाज़ में कोई फटकार सुनाई देती जो फौरन उसका होश दुरुस्त कर डालती।

मार्गरेट के लिए मिठाई का प्रमाण उसे खाने में ही था, फिर चाहे वह जीवन की बात हो या पाक कला की। और खाना भी कैसा! उसके बनाए अनूठे व्यंजनों का कोई अन्त ही न था। स्कूल में हर मौसम, हर साल पाक कला के केन्द्रीय गतिविधि बने रहने का कारण यह था कि उसके मार्गदर्शन में श्रेष्ठता, कड़ी मेहनत और दोस्ताना व्यवहार की एक परम्परा स्थापित हो सकी थी।

काम के दौरान मार्गरेट कोई बकवास बर्दाश्त नहीं करती थी। हरेक को,

चाहे उसकी उम्र कुछ भी क्यों न हो, अपना भार खुद उठाना पड़ता था। सभी को सेब छीलने पड़ते, सामग्रियों को नापना-तौलना और मिलाना होता, तन्दूर को देखना पड़ता, और बरतन-भाँडे और मेज़ साफ करने पड़ते। चीज़ें निकालने और बाद में उन्हें यथास्थान रखने में सभी मदद कर सकते थे। काम बेदाग रसोई में शुरू होता और उसके निरीक्षण में उसी हालत में समाप्त किया जाता।

मार्गरेट को आदर्श मानकर अन्य लोगों ने भी पाक गतिविधियाँ सिखाई और आयोजित की हैं। जिन बच्चों को पाक निगम अकेले काम करने के लिए प्रमाणित कर देता है, वे अक्सर अकेले या समूह में अपना काम करते हैं। स्टाफ के अच्छा पकाने वाले सदस्य भी अपने सहायकों के साथ वहाँ जुटते हैं। कई बार सम्बन्धित पाक कक्षाओं की ृंखला साल भर आयोजित की जाती हैः ब्रेड बनाना, चीनी व्यंजन और बुनियादी पाकशास्त्र इनमें से कुछ हैं।

कभी-कभार स्टाफ के वे सदस्य भी जो विलक्षण स्वादों से परिचित हैं, अपना हाथ आज़माते हैं। कई बार तो बिलकुल ही विलक्षण। उदाहरण के लिए, बारबरा को ही लें। वह एक समग्र पोषणविद् है जिसकी प्राकृतिक भोजन – बेहद, बेहद प्राकृतिक – में रुचि है। परन्तु उसकी रुचि महज़ शौकिया किस्म की नहीं है। यानी, ऐसा नहीं कि खाने में कभी-कभार कप भर चोकर समेत गेहूँ का आटा काम में लिया जाए या एक चम्मच शहद डालकर खाने को 'स्वस्थ' कह दिया जाए। बारबरा अतिरिक्त चीनी में विश्वास नहीं करती (या बिरले ही उसका उपयोग करती है)। इसी तरह, साबुत अन्न, ताज़ा फल, सब्ज़ी, और आँच पर कम से कम पकाने में ही उसकी आस्था है। उदाहरण के लिए, मैं कभी किसी दूसरे ऐसे इन्सान से नहीं मिला हूँ जो बिना चीनी डाले राइ (rye) के आटे से गाजर का केक बनाने की कल्पना तक करे।

बारबरा की हर उम्र के लोगों के साथ अच्छी बनती है। सो जब बारबरा सूचना लगाती है कि वह किसी दिन कुछ पकाने वाली है तो बच्चे सदा आ जुड़ते हैं। उन्हें उसके साथ होना पसन्द आता है। कभी वे पाते हैं कि पकाने का काम एक वास्तविक चुनौती है। एक दिन उसके सहायकों ने कुछ ऐसा बनाया जो देखने में चॉकलेट चिप कुकी सरीखा लगता था, पर वह जई/ओट/सूरजमुखी के बीज/सोया आटे से बनी करुबा चिप कुकी निकली, जिसमें न

बेकिंग पाउडर था, न चीनी, न शहद, और स्वाद में कतई चॉकलेट चिप कुकी-सी नहीं थी।

हर साल जून के महीने में पुरानी विधि से हाथ से घुमाई जाने वाली मशीनों से आइसक्रीम बनाने का एक खास दिन होता है। बेशक, यह परम्परा मार्गरेट ने डाली थी, जिसने अपने बचपन में फार्म पर इसे बनाना सीखा था। जैसे ही उसकी सामग्री – शुद्ध क्रीम, बर्फ, सेंधा नमक – मशीन में डाली जाती है, उत्तेजना तेज़ी से फैलती है। बच्चे बारी-बारी मशीन को घण्टों-घण्टों घुमाते हैं; बड़े बच्चे बाद में जुटते हैं जब उसका हत्था घुमाना कठिन हो जाता है। तब आइसक्रीम जमती है, और ढाई बजे तक रसोई से लेकर भवन के आर-पार लम्बी कतार लग जाती है। कम ही चीज़ें होंगी जो गर्मी के एक दिन 'इतनी मेहनत' से बनाई गई ताज़ा आइसक्रीम का मज़ा लेने के बराबर हों। रसोई को बाद में साफ करने की ज़रूरत भी इसका मज़ा कम नहीं करती।

* * *

15
आयु मिश्रण

आयु मिश्रण सडबरी वैली का खुफिया अस्त्र है।

मुझे आयु विभाजन का सिर-पैर कभी समझ में नहीं आया। वास्तविक दुनिया में लोग अपना जीवन, साल दर साल उम्र के हिसाब से अलग-अलग रहकर नहीं बिताते। सभी बच्चों की किसी खास उम्र में एक-सी रुचियाँ या क्षमताएँ भी नहीं होतीं।

बहरहाल, हमने जल्दी ही यह भी जान लिया कि बच्चे आपस में कैसे घुल-मिल जाते हैं जब उन्हें इकट्ठे छोड़ दिया जाए। वे घुल-मिल जाते हैं। उसी तरह जैसे असली लोग।

जब मैंने सैंडविच बनाने का सेमिनार किया तो मेरे पास बारह और अठारह साल के बच्चे थे, और साथ ही सभी दरमियाना आयु के भी। भोजन पकाते वक्त सभी सीमाएँ आसानी से पार हो जाती हैं। सालों बाद जब मैंने आधुनिक इतिहास पढ़ाया तो मेरे पास दस वर्षीय एड्रियन था जो सत्रह साल तक के लड़के-लड़कियों के साथ बैठा था।

सिद्धान्त हमेशा एक ही होता हैः अगर किसी को कुछ करना होता है तो वह उसे करता है। रुचि ही महत्वपूर्ण है। अगर गतिविधि का स्तर ऊँचा हो तो कौशल भी महत्वपूर्ण होता है। कई छोटे बच्चे कई चीज़ों में बड़े बच्चों से अधिक कुशल होते हैं।

मज़ा तब शुरू होता है जब कौशल और सीखने की गति समान स्तर के न हों। बच्चे एक-दूसरे की मदद करते हैं। उन्हें यह करना ही पड़ता है; क्योंकि अन्यथा पूरा समूह ही पिछड़ जाएगा। वे ऐसा करना भी चाहते हैं क्योंकि वे

अंकों या सुनहरे सितारों के लिए स्पर्धा नहीं कर रहे होते। उन्हें मदद करना पसन्द आता है, क्योंकि किसी दूसरे की मदद करना और उसमें सफल रहना बेहद सन्तोषप्रद होता है।

और यह देखना बेहद सुखदाई होता है। स्कूल में जहाँ कहीं मुड़ो, आपका सामना आयु मिश्रण से होता है।

और इसका एक भावनात्मक पक्ष भी है। कोई सोलह वर्षीय किशोरी या किशोर जब देर-दोपहर एक सोफे पर उससे सटे बैठे किसी छह साल के बच्चे के साथ शान्ति से पढ़ रहा होता है, तो उसकी मातृत्व या भ्रातृत्व की आवश्यकता की पूर्ति होती है – आवश्यकता जो वास्तविक होती है। और यह उस छह वर्षीय बच्चे में सुकून और सुरक्षा की गहन भावना उस दुनिया में जगाता है जहाँ वह हमेशा बड़े-बड़े लोगों से घिरा रहता हो। जब एक बारह वर्षीय लड़की धैर्य से किसी सोलह वर्षीय नौसिखिए को कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली के बारे में समझाती है तो उसमें आत्मगौरव पुष्ट होता है।

इसका एक सामाजिक पक्ष भी है। जब बच्चों ने पहले स्कूल-नृत्य का आयोजन किया तो मेरे मन में एक ऐसे कक्ष की छवि थी जिसमें चारों ओर भयभीत दीवार-फूल बने बच्चे खड़े हों। इसे प्रदर्शन कहते हैं। जूनियर हाई स्कूल में मेरा पहला स्कूल नृत्य ऐसा ही था; क्या सबका ही ऐसा नहीं था? शिक्षकों ने लड़कों को कमरे के एक ओर तथा लड़कियों को दूसरी ओर खड़ा कर दिया, और उसके बाद स्थितियाँ बद से बदतर होती गईं।

बच्चों ने हम सबको अचरज में डाल दिया। सभी आए और सभी साथ-साथ नाचे। दस साल के अन्तर वाले जोड़े थे, तो एक साल के अन्तर वाले भी। एक सात वर्षीय लड़का एक पन्द्रह साल की लड़की के साथ नाचा और उन्होंने प्रथम पुरस्कार जीता! सबके लिए यह आनन्द का समय रहा। साल गुज़रते गए और सबसे छोटे बच्चे सबसे बड़ों में तब्दील हुए, पर यह नमूना बरकरार रहा।

बड़े बच्चे अनुकरणीय मॉडल प्रस्तुत करते हैं, ऐसे आदर्श जो छोटों के लिए कई बार खुदा के समान होते हैं। और ठीक उसी तरह वे कई बार उलटा-आदर्श भी प्रस्तुत करते हैं। “मुझे खुशी है कि जब मैं सात साल का था तो मैं किशोरों की सोहबत में रहता था,” हमारे बेटे माइकल ने हमें अठारह साल की उम्र

में एक बार कहा। "मैंने साक्षात् देखकर यह सीखा कि मैं क्या नहीं करना चाहता, सो मुझे अपने स्वास्थ्य और जीवन के साल बरबाद कर वे सारे प्रयोग नहीं करने पड़े।"

छोटे बच्चे बड़े बच्चों के लिए परिवार का मॉडल प्रस्तुत करते हैं – छोटे भाई-बहनों या बच्चों की भूमिका में। जब शैरॉन पहले-पहल स्कूल में चार वर्ष की आयु में आई, वह कुछ ही समय पूर्व अपने माता-पिता को खो चुकी थी। अपने प्रथम वर्ष में वह सबकी 'बच्ची' बनी रही; उसे सभी पढ़कर सुनाते, उसके साथ खेलते, बातचीत करते, उसको लाड़-दुलार करते। जब पूर्व विद्यार्थी अपने शिशुओं या घुटनों पर चलने वाले नन्हों के साथ मिलने आते हैं, तो किशोर विद्यार्थी अक्सर उनके शिशुओं के साथ घण्टों खेलते देखे जा सकते हैं।

और सीखने का पक्ष भी है। बच्चों को दूसरे बच्चों से सीखना बेहद अच्छा लगता है। पहले तो, अक्सर यह अधिक आसान होता है; बाल शिक्षक वयस्कों की तुलना में विद्यार्थियों की कठिनाइयों के अधिक करीब होता है, क्योंकि कुछ वक्त पहले ही वह इनमें से गुज़रा होता है। उसके स्पष्टीकरण अमूमन अधिक सरल और बेहतर होते हैं। दबाव और गुण-दोष विवेचन कम होता है। और जल्द से जल्द सीखकर अपने पथप्रदर्शक के स्तर तक पहुँचने का ज़बरदस्त प्रोत्साहन भी रहता है।

बच्चों को एक-दूसरे को सिखाना भी बहुत अच्छा लगता है। यह उनमें आत्मगौरव और उपलब्धि का भाव जगाता है। और भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे वे जो पढ़ा रहे होते हैं, उसके बारे में उनकी अपनी समझ भी बढ़ती है। पहले उन्हें बात को ठीक से छाँटकर उसे समझना पड़ता है। अतः वे सामग्री से तब तक जूझते हैं जब तक वह उनके दिमाग में बिलकुल स्पष्ट न हो जाए, और जब तक वह उनके शिष्यों के लिए भी पूरी तरह स्पष्ट न हो जाए।

एक गुप्त हथियार के रूप में आयु मिश्रण अमोघ है। यह स्कूल में सीखने की शक्ति और सिखाने की शक्ति में भारी इज़ाफा करता है। यह ऐसा मानवीय वातावरण निर्मित करता है जो जीवन्त और वास्तविक होता है। स्कूल की तुलना अक्सर एक गाँव से की जाती है जहाँ सब मिलते-जुलते हैं, सब

सीखते और सिखाते हैं, एक-दूसरे के लिए आदर्श पेश करते हैं, मदद करते हैं और डाँट-डपट लगाते हैं – और जीवन में साझेदारी करते हैं। मुझे लगता है कि यह बिम्ब अच्छा है।

वयस्क भी बच्चों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। हान्ना ग्रीनबर्ग ने अपने लेख "बीच का वृक्ष" में इस बात का सबसे बढ़िया वर्णन किया है। यह रहा उनका लेखः

बीच का वृक्ष

इस पतझड़ की एक शानदार सुबह मैंने पहली बार बीच नाम का पेड़ 'देखा'। यह कथन उस व्यक्ति के मुँह से आश्चर्यजनक लग सकता है जो सडबरी वैली स्कूल में अठारह सालों से हो, पर यह सच है। बाकी सब की तरह मैंने भी इस वृक्ष को पतझड़ के मौसम में देखा है जब इसकी पत्तियाँ लाल हो जाती हैं और फिर झड़ जाती हैं, ताकि उसकी शाखाएँ सर्दी भर अपनी भव्य संरचना को दिखा सकें। मैंने बसन्त में उसे फिर से पनपते भी देखा है जब नन्ही कोपलें पेड़ पर गुलाबी आभामण्डल बनाती हैं और धीरे-धीरे गहरी हरी होती जाती हैं। साथ ही मैंने छोटे बच्चों की अनेक पीढ़ियों को इस विशाल पेड़ पर चढ़ना सीखते और अधिकाधिक ऊँचे चढ़ते भी देखा है, जो यदाकदा उसके शीर्ष तक पहुँच जाते हैं और घण्टों वहाँ बैठे रहते हैं। पर यह कुछ ही सप्ताह पहले था कि मैंने इस पेड़ को असल में 'देखा', उसे असल में समझा। एक वयस्क होने के कारण मैं पेड़ को वास्तव में अनुभव करना तब तक नहीं जानती थी जब तक एक नन्ही बालिका ने मुझे यह सिखा न दिया। जो हुआ वह यूँ है।

एक दिन शैरॉन ने दमकते चेहरे के साथ घोषणा की (जैसे कई अन्य नन्हे उसके पहले भी कर चुके थे) कि उसने आखिरकार अकेले ही बीच के पेड़ पर चढ़ना सीख लिया है। उसने कहा कि जॉयस ने उसे यह सिखाया, और अब वह मुझे सिखाएगी। मैं उसके साथ हो ली क्योंकि मैं उसकी खुशी साझा करना चाहती थी, और क्योंकि यह चमकीले रंगों वाली एक बेहद खूबसूरत सुबह थी जिसमें भरपूर धूप लाल और पीली पत्तियों की ओस पर झिलमिला रही थी। शैरॉन ने मुझे दिखाया कि वह कैसे चढ़ जाती है और फिर नीचे उतर

आती है, और तब उसने मुझे ठीक यही करने को कहा। मैं पहले दर्जनों बच्चों को पेड़ पर चढ़ने में और उनसे भी ज़्यादा बच्चों की अटक जाने पर नीचे उतरने में मदद कर चुकी थी, पर खुद पेड़ पर चढ़ने की कोशिश मैंने कभी नहीं की थी।

शैरॉन आसानी से 'ना' नहीं स्वीकारती, और मैं जानती थी कि अगर मुझे अपने प्रति उसके सम्मान को बनाए रखना है तो मुझे उसके लिए प्रदर्शन करना ही होगा! उसने बड़े धीरज और स्पष्टता से मुझे एक-एक कदम द्वारा पेड़ पर चढ़ना और उतरना सिखाया, और मैंने पहली बार ऐसा किया।

जब मैं पहले स्तर तक पहुँची तो मैं उस स्थान के सौन्दर्य को देख दंग रह गई। मैं उन विशाल शाखाओं, उस आरामदेह जगह और विस्मय की उस भावना का वर्णन नहीं कर सकती जिसने मुझे वशीभूत कर लिया। इतना कहना ही पर्याप्त है कि मुझे लगा कि मैंने पेड़ को पहली बार 'देखा' है। हम वयस्क खुद को बड़ा ज्ञानी मानते हैं और सोचते हैं कि बच्चों को सीखने और सिखाए जाने की ज़रूरत है, पर इस मामले में मैं शर्त लगा सकती हूँ कि सडबरी वैली स्कूल का कोई भी बच्चा उस भव्यता के प्रति हमारे अज्ञान और असंवेदनशीलता से हैरान हो जाएगा जो हमारे इर्द-गिर्द फैली है और जिसकी हम उपेक्षा करते हैं। शैरॉन अच्छी शिक्षिका थी और जो उसने मुझे सिखाया उसके लिए मैं सदा उसकी आभारी रहूँगी।

* * *

16
खेल

दिन ब दिन, माह दर माह, हमारी आँखों के समक्ष एक गाँव आकार ले रहा था। कला कक्ष से हथियाई गई बड़ी मेज़ पर प्लास्टिसीन का नमूना लगभग असली लगता था।

अक्सर, छह या अधिक बच्चे मेज़ के गिर्द घण्टों झुके रहते, लगातार बोलते, चहकते वे जिन भी वस्तुओं की कल्पना कर सकते थे उनकी नकल बनाते होते। घोड़े, पेड़, मोटर गाड़ियाँ, ट्रक, पशु, बाड़े, लोग – सब कुछ। ये नमूने सिर्फ नकल भर नहीं थे, बल्कि त्रुटिविहीन प्रतिकृतियाँ थीं। उदाहरण के लिए, कार के हटाए जा सकने वाले हुड के नीचे एक सम्पूर्ण 'मोटर' थी, और यह कार इतनी छोटी थी कि मेरी हथेली में समा जाए। उँगली भर लम्बे लोग कपड़े पहने हुए थे और उनके नाक-नक्श भी थे। छतों पर टाइलें थीं, दीवारों पर दरवाज़े, और कमरों के अन्दर मेज़-कुर्सियाँ।

सब कुछ प्लास्टिसीन का बना हुआ था, उसे गूँथ और बेलकर आकार देकर। यह एक बड़ा खेल था। यह खेल दो सालों तक चला।

किसी ने, उदाहरण के लिए, दूर-दूर तक यह नहीं सुझाया कि आठ से चौदह साल के ये बच्चे (अधिकांश लड़के) कला 'कर' रहे हैं। यह विचार उन्हें नाराज़ कर देता। स्टाफ के किसी सदस्य की मदद नहीं चाही गई, न ही वह दी गई। सहभागियों के लिए यह खेल था। गम्भीर, तन्मय खेल, असीम आनन्द।

स्कूल की प्रत्येक पीढ़ी के अपने गम्भीर 'क्लब' होते हैं। इसकी शुरुआत अमूमन नौ या दस साल के बच्चों के साथ होती है और प्रत्येक नए समूह के लिए साल दो साल जारी रहती है। कभी-कभार बड़े लड़कों पर आश्रित किसी छोटे लड़के को भी इनमें शामिल कर लिया जाता है और सहा जाता है। एक क्लब होता है, और बेशक उसके साथ एक क्लब हाउज़ भी। पहले यह जंगल में एक टूटी-फूटी झोंपड़ी थी, जब तक वह धराशायी न हो गई। बाद में क्लब हाउज़ अस्तबल के एक कमरे में रहा। और फिर मुख्य भवन की एक बड़ी कोठरी में। उसके भी बाद, जब अग्निशमन नियमों के कारण वह कोठरी वर्जित हो गई, क्लब हाउज़ किसी भी 'गुप्त' जगह में बन जाता और ज़रूरत पड़ने पर उसे काल्पनिक दीवारों और छत से घेर दिया जाता। उसके लिए फर्नीचर लुक-छिपकर लाना पड़ता – शायद कोई पुरानी दरी या कालीन; एक कुर्सी; एक मेज़। क्लब के नियम ईजाद किए जाते, योजनाएँ बनाई जातीं, जासूस भेजे जाते, चौकीदार तैनात किए जाते। साज़िशों की एक दुनिया रची जाती, जिसमें पेचीदगियों की भरमार हो। इससे जुड़े बच्चे हमेशा व्यस्त रहते, हमेशा पूरी तरह मग्न रहते।

स्कूल में खेलकूद गम्भीर मामला है। मुझे लगता है कि खेलना बच्चों के साथ उन वयस्कों के लिए भी गम्भीर मामला है जो खेलना भूले नहीं हैं। पेशेवर शिक्षक अक्सर खेल से काफी परेशान होते हैं, ज़्यादातर इसलिए क्योंकि बच्चे स्कूली काम में जितनी ऊर्जा और बुद्धिमानी लगाते हैं, उससे कहीं अधिक खेलकूद में। कभी-कभार स्थिति को अधिक स्वीकार्य बनाने के लिए शैक्षिक मनोवैज्ञानिक 'सीखने' में खेलकूद के मूल्य पर कुछ लिखते हैं – उदाहरण के लिए, संचालन कौशल, या रचनात्मक रूप से समस्या समाधान, या जायज़ लगने वाली कुछ दूसरी चीज़ें सीखने में।

सच तो यह है कि खेल सडबरी वैली के जीवन का एक बड़ा हिस्सा है। और यह यहाँ सीखने के प्रमुख घटकों में एक है। पर जो सीखा जाता है वह पाठ उससे भिन्न होता है जो आप सोच सकते हैं। जो सीखा जाता है वह है हाथ में उठाए गए काम पर अपनी सीमाओं की उपेक्षा कर एकाग्रता और ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता – कोई थकान नहीं, कोई जल्दबाज़ी नहीं, किसी गरमागरम विचार को कुछ दूसरा करने की विवशता में बीच में छोड़ देने की दरकार नहीं। यह 'पाठ' आजीवन बना रहता है।

स्कूल के अधिकांश बच्चे, खास तौर पर छोटे बच्चे, खेल में इतने मग्न रहते हैं कि वे दिन भर खाना-पीना या आराम करना तक भूल जाते हैं। दोपहर ढलने तक वे ढेर-सा खाने और रात को गहरी नींद के लिए तैयार होते हैं। वे देर तक मेहनत-मशक्कत जो कर चुके होते हैं।

जितना विस्तृत खेल होता है, उसके लिए आवश्यक साज़ो-सामान, कम करके कहें, तो सस्ता ही होता है।

जब हम स्कूल खोलने की तैयारी कर रहे थे, उस समय हमने घण्टों तक अपने छोटे-से बजट को हर तरह के 'आवश्यक' खेल उपकरणों, खासकर छोटे बच्चों के खेल उपकरणों के लिए आवंटित करने पर सोच-विचार किया। हमारे पास प्रारम्भ में वही सब था जो आप नर्सरियों, किंडरगार्टनों और बाल मनोरंजन केन्द्रों में अमूमन पाते हैं।

जब पहले कुछ बरस गुज़रने लगे, हम अविश्वास से भरे देखते रहे। वे उपकरण लगभग अनछुए पड़े रहे। यदि कुछ काम में लिया भी जाता तो उसका उपयोग भी उसके लिए तयशुदा कामों से बिलकुल भिन्न कामों के लिए किया जाता।

बच्चे जिन मुख्य उपकरणों का प्रयोग करते हैं वे हैं कुर्सियाँ, मेज़ें, कमरे, अलमारियाँ और बाहर के खुले स्थान, जहाँ जंगल, झाड़ियाँ, चट्टानें और गुप्त कोने होते हैं। और उनका प्रमुख औज़ार होता है उनकी कल्पना।

बारह वर्ष यों ही पड़े रहने और बीच-बीच में दान से बढ़ते रहने के बाद हमारे खेल-खिलौनों का तीन चौथाई हिस्सा डिब्बों में रखकर अटारी पर चढ़ा दिया गया। वह सब अब वहीं धरा है। अटारी सूखी जगह है, अतः शायद वह सब लम्बे अर्से तक वहाँ बचा रहेगा।

कुछ अपवाद भी हैं। बड़े बच्चे बोर्ड पर खेले जाने वाले खेल खेलते हैं जिन्हें वे घर से लाते हैंः 'मोनॉपली' वे दिनों-दिन खेलते हैं। 'रिस्क' का चलन चार वर्षों तक रहा और उसने खिलाड़ियों को भूगोलविद् और सैन्य रणनीतिज्ञ बना दिया। और बेशक 'डन्जन्स् एंड ड्रैगन्स्', जिसके लिए हरेक खिलाड़ी के पास सावधानी से बनाया गया सामग्री का भण्डार होता था और वह उसकी निजी सम्पत्ति होता था। लगता है कि 'डी एंड डी' नामक खेल बाहरी लोगों को

अधिक सहनीय लगता था क्योंकि इसमें लोग 'सीखते' थे – उदाहरण के लिए, मध्ययुगीन जीवन के बारे में।

यहाँ हम खेल को गम्भीरता से लेते हैं। उसमें हस्तक्षेप करने की बात हम सपने तक में नहीं सोच सकते। अतः यह हर आयु में पनपता है। और जो स्नातक स्कूल छोड़ बाहरी दुनिया में कूच करते हैं, वे यह जानते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं उसे अपना सर्वस्व कैसे दिया जाए। उन्हें याद रहता है कि कैसे जीवन को हँसते हुए गले लगाया जाए।

* * *

17

पुस्तकालय

मुझे लगा कि पीली टेप पर हाथापाई की नौबत आ जाएगी।

स्कूल पुस्तकालय को व्यवस्थित करने की लम्बी-लम्बी बैठकों की ृंखला में यह एक और बैठक थी। पाउला, जो हमारी लाइब्रेरियन बनने वाली थी, अपने पक्ष को गर्मजोशी से रख रही थी।

"छोटे बच्चों की किताबों को चिह्नित करना होगा। उन पर पीली टेप लगी होनी चाहिए ताकि वे आसानी से पहचानी जा सकें।" पाउला सार्वजनिक स्कूलों की अनुभवी लाइब्रेरियन थी और सोच रही थी कि उसे हमारे साथ कुछ भिन्न करना चाहिए। पर पुरानी आदतों से पिण्ड छुड़ाना कठिन होता है।

"हमें उसकी क्या ज़रूरत है?" मैं पूछता रहा। "क्या हमें यह लगता है कि बच्चे गलती से वयस्कों की कोई किताब उठा लेंगे?"

बहस चलती रही। पाउला को डर था कि बच्चे अगर संयोग से कोई ऐसी किताब उठा लेंगे जो उन्हें कठिन लगे तो वे हतोत्साहित हो जाएँगे। उसकी नज़र में वयस्कों की दुनिया छोटों के लिए डरावनी जगह है, और स्कूल को उन्हें उससे सामना होने पर होने वाली कुण्ठा और कष्ट से बचाना चाहिए।

हम में से अधिकांश के लिए पीली टेप इस बात का एक और प्रतीक था कि कैसे वयस्क बच्चों को अपना बड़प्पन दर्शाते हैं। इस बात का एक और उदाहरण कि कैसे वयस्क वास्तविक दुनिया के विषय में पारंगत होने और उसे

जीत लेने की बच्चों की दृढ़ इच्छा शक्ति को कितना गलत पढ़ लेते हैं।

महीनों की गुरु-गम्भीर बहसबाज़ी के बाद आखिरकार मत संग्रह किया गया। पीला बिल्ला हार गया। पाउला ने इसके फौरन बाद स्कूल खुलने से पहले ही त्यागपत्र दे दिया। उसने पुस्तकालय को क्रियाशील अवस्था में कभी देखा ही नहीं।

दरअसल 'क्रियाशील' नहीं। बल्कि कहना चाहिए कि 'निष्क्रिय'। हमारे लिए पुस्तकालय का विचार सरल हैः वह एक उम्दा निष्क्रिय संसाधन है, ज्ञान का ऐसा सागर जहाँ सभी ज्ञान पिपासु डुबकी लगा सकते हैं। (इस मामले में मानक मुहावरे पूरी तरह लागू होते हैं।)

हमने जो स्कूली पुस्तकालय देखे थे उनका सबसे दुखद पक्ष था उनकी असफलता। अव्वल तो हम यह ही नहीं चाहते थे कि सभी किताबें एक अलग कक्ष या हिस्से में हों जिसे 'पुस्तकालय' कहा जाए। उसमें 'मुर्दाघर' की ध्वनि थीः एक ऐसी अलग-थलग जगह जिसमें सबको बिना हिले-डुले बैठना और फुसफुसाना पड़ता है, जहाँ लोग सावधानी से चलते हैं और लाइब्रेरियन की पैनी नज़र से भयभीत रहते हैं। हम चाहते थे कि किताबें हर जगह हों, आरामदेह, सुखद, सुलभ, जिन्हें उलटा-पलटाकर देखा-पढ़ा जा सके, न कि सिर्फ 'ले जाया' जा सके।

हम चाहते थे कि बच्चे किताबों को ताकों पर से उठा लें। ढेरों किताबों को। हमें यह डर नहीं था कि पुस्तकालय अस्त-व्यस्त हो जाएगा।

पर हमारी प्रमुख इच्छा यह थी कि हमारे पास ढेरों अच्छी किताबें हों। ऐसी किताबें जिन्हें लोग पसन्द करें और जिनकी उन्हें परवाह हो।

इसके लिए हमें एक नई तरह की अधिग्रहण नीति बनानी पड़ी। सामान्य तरीका हमें सही नहीं लगा। हमें इस बात पर कभी पूरा विश्वास नहीं हुआ कि जिस व्यक्ति की पुस्तकों में रुचि हो वह ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में रोचक पुस्तकों को खुद ब खुद तलाश लेगा। हम चाहते थे कि प्रत्येक क्षेत्र से प्रेम करने वाले उस क्षेत्र के नायाब नगीने को पा सकें।

सो ऐसी ही व्यवस्था की गई। यह वाकई बड़ा आसान और सस्ता रहा। हमने लोगों से अनुरोध किया कि वे अपने व्यक्तिगत पुस्तकालयों का कुछ भाग

हमें दान दें। ये वे किताबें थीं जिन्हें लोगों ने खुद कई सालों के दौरान चुना था क्योंकि वे उन्हें पसन्द करते थे, क्योंकि वे रोचक व उपयोगी व खास थीं। सडबरी वैली का पुस्तकालय 'विशेषज्ञों' की फौज की मदद से गढ़ा गया, और अब भी गढ़ा जाता है।

बेशक, सभी किताबें अच्छी नहीं हैं। क्या किसी भी पुस्तकालय में होती हैं? किसी भी किताब को उठा लें, और जल्द ही आप उसकी अच्छाइयों पर उतनी ही गरमागरम बहस छेड़ सकते हैं जितनी पीली टेप को लेकर हमने की थी। परन्तु कम से कम हमारी किताबें उन लोगों द्वारा चुनी और पढ़ी गई थीं जिनके लिए वे मूल्यवान थीं।

जल्दी ही स्कूल भवन किताबों से भर गया। साल दर साल, कमरा दर कमरा हमारे नए अधिग्रहण को रखने के लिए नए ताक जुड़ते रहे।

दरअसल, यदाकदा हम किताबों के सागर में लगभग डूब ही जाते हैं। तब हम किताबों की बिक्री का आयोजन करते हैं।

कभी-कभार हमें कुछ ज़्यादा ही दान मिल जाता है, ऐसी पुस्तकें मिलती हैं जो कुछ अधिक ही रहस्यमयी होती हैं। जैसे मैसाच्यूसेट्स सामान्य कानूनों की पूरी ृंखला, जिसके साथ विस्तृत टीकाएँ भी थीं। पीली टेप सहित या उसके बिना भी यह हमारे लिए उलटने-पलटने की सामग्री नहीं थी (ना ही गम्भीर पठन सामग्री)। या फिर कई बेहद उम्दा तकनीकी वैज्ञानिक पत्रिकाएँ। हमें ऐसी पुस्तकों के निपटारे की व्यवस्था या तो उन्हें बेचकर या फिर किसी को देकर करनी होती है। पर ज़्यादातर, हम जो कुछ पाते हैं उसका अधिकांश हिस्सा ताकों पर रख देते हैं। और बच्चे उन्हें उलटते-पलटते रहते हैं।

बेशक, जब किसी को ऐसी किताबों की ज़रूरत पड़ती है जो हमारे पास न हों, तो हम उन्हें खरीदते भी हैं। ऐसा विशेष खर्च के तहत किया जाता है।

सातवें दशक के मध्य में हमें डाक से राज्य शिक्षा विभाग का एक पत्र मिला। उसमें एक चैक था। हुआ यह था कि सरकार ने शिक्षा की मदद की अपनी कई उदार कोशिशों में से एक में देश भर के स्कूलों को किताबें खरीदने के लिए आर्थिक मदद देने का निर्णय लिया। मेरा अनुमान है कि कांग्रेस (अमरीकी संसद) ने हिसाब लगाया होगा कि किताबें अच्छी चीज़ होती हैं और अगर स्कूलों की ताकों पर अधिक किताबें हों तो वे बेहतर हो सकेंगे। मुझे

लगता है कि प्रकाशकों ने, शर्तिया, इसका विरोध नहीं किया होगा।

जो भी हो, यह हमारे लिए स्वर्ग से आया अमृत था, फिर चाहे हमें उसकी ज़रूरत थी या नहीं। हमारी पहली प्रतिक्रिया यह थी कि चैक वापस लौटा दिया जाए, पर इसमें समझदारी नहीं थी। "दान में मिली बछिया के..." सो हमने इस राशि का उपयोग स्कूल बैठक में आने वाली पुस्तकों के विशेष व्यय के अनुरोधों के लिए किया।

राष्ट्रपति आते और जाते रहते हैं। राजनीति बाएँ-दाएँ, आगे-पीछे डोलती रहती है। पर चैक आते रहते हैं।

और पीली टेप का क्या हुआ?

हमें कुछ छूटों का उपयोग करना ही पड़ा। जो किताबें खास तौर पर छोटे बच्चों के लिए होने का दावा करती थीं उन्हें ताक पर सबसे ऊपर या सबसे दूर के कमरों में नहीं रखा गया। आखिरकार उन्हें छोटे बच्चों की पहुँच में ही रखा गया ताकि सीढ़ी की मदद से उन तक पहुँचने की ज़रूरत न हो।

पर टेपें नहीं लगाई गईं। ऐसी सम्भावना नहीं थी कि कोई वयस्क किसी नन्हे को बिना टेप लगी किताब पढ़ते देख सख्ती से कहे, "इसके साथ क्या कर रहे हो, बच्चे!"

और यह सम्भावना भी नहीं रही कि किसी बड़े विद्यार्थी को, जो 'बच्चों की किताब' को चोरी-छिपे देख रहा हो, किताब पर चिपकी टेप के कारण शर्मिन्दा होना पड़े।

* * *

18
पर्याप्त समय

सडबरी वैली में घण्टा नहीं बजता। कोई 'पीरियड' नहीं होते।

किसी भी गतिविधि में लगाया गया समय किसी भी भागीदार के अन्दर से ही उभरता है। यह हमेशा उतना होता है जितने की उसे इच्छा और आवश्यकता हो। यह हमेशा समय की सही मात्रा होती है।

स्कूल सुबह 8:30 बजे खुलता है और शाम 5 बजे बन्द होता है। यह असामान्य नहीं कि आप किसी को सुबह 9 बजे डार्करूम में घुसते देखें, और उसे समय का ध्यान ही न रहे, और वह काम पूरा कर 4 बजे बाहर निकले।

जेकब कुम्हार के चक्के के सामने बैठता है। वह तेरह साल का है। सुबह 10:30 का समय है। वह तैयारी करता है और भाण्ड बनाने लगता है। एक घण्टा गुज़रता है। दो घण्टे। उसके चारों ओर गतिविधियाँ चलती रहती हैं। उसके दोस्त उसके बिना ही फुटबॉल खेलना शुरू कर देते हैं। तीन घण्टे। 2:15 पर वह चक्के से उठता है। आज उसके पास अपनी मेहनत को दर्शाने

के लिए कुछ भी नहीं है। एक भी भाण्ड उसके मन-माफिक नहीं बन पाया है।

अगले दिन वह फिर से कोशिश करता है। इस बार वह 1 बजे उठता है, जब वह तीन ऐसे नमूने बना चुकता है जो उसे पसन्द आते हैं।

ग्यारह साल के थॉमस और नेथन, 'कालकोठरी और ड्रैगन' का खेल सुबह 9 बजे शुरू करते हैं। शाम 5 बजे तक भी उनका खेल समाप्त नहीं होता। ना ही अगले दिन शाम 5 बजे तक। तीसरे दिन दोपहर 2 बजे जाकर वे खेल खत्म करते हैं।

नौ वर्षीय शर्ली एक कुर्सी में गुड़मुड़ी होकर एक किताब पढ़ना शुरू करती है। घर पर भी वह पढ़ना जारी रखती है, और अगले तीन दिनों तक जब तक वह उसे खत्म नहीं कर देती।

नौ वर्षीय सिंडी और शैरॉन जंगल में सैर के लिए जाती हैं। बसन्त का सुहाना दिन है। वे चार घण्टे जंगल में ही रहती हैं।

डैन एक पतझड़ की सुबह पहली बार अपना काँटा तालाब में डालता है। तीन साल गुज़र जाते हैं, वह अब भी मछली ही पकड़ना जारी रखे है।

सडबरी वैली में समय कोई वस्तु नहीं है। उसका अच्छा या बुरा 'उपयोग' नहीं होता। उसे 'बरबाद' नहीं किया जाता या 'बचाया' नहीं जाता।

यहाँ जटिलताओं से भरे जीवन की आन्तरिक लय को ही समय नापता है। जैसे-जैसे घटनाओं की कोई एक लड़ी खुलती है, उस लड़ी के लिए उपयुक्त समय उसके साथ बीत जाता है।

दोपहर के खाने का कोई समय नहीं होता। या कहें हर समय खाने का समय है। साढ़े दस, बारह, ढाई, पाँच। विनी-द-पूह के पास एक दीवार घड़ी थी जो जाने कब से ग्यारह बजे पर अटककर रुक गई थी। उसके लिए, जो हमेशा भूखा रहता था, ग्यारह बजे का समय हमेशा ही "कुछ थोड़ा-बहुत खाने का" समय होता था, और कोई भी समय ग्यारह का समय हो सकता था।

साल दर साल स्कूल में मैंने प्रत्येक बच्चे के विकास को समय की उसकी निजी समझ से खुलते-खुलते बढ़ते देखा है। मैंने बच्चों को आगे कूदते, और तब घण्टों तक ठीक उसी स्थान पर जमे देखा है। मैंने लोगों को सपने देखते और फिर धीमे-धीमे धरती पर वापस लौटते देखा है।

अगर विद्यार्थियों को उससे अधिक समय की दरकार होती है जो हम उन्हें देते हैं, तो उन्हें स्कूल की चाबियाँ दे दी जाती हैं। कुछ सुबह जल्दी आते हैं, कुछ देर से जाते हैं, कुछ छुट्टियों और सप्ताहान्त में भी आते हैं।

स्कूल व्यक्तिगत लय के प्रति जो सम्मान दर्शाता है उसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। यह गारंटी देता है कि प्रत्येक विद्यार्थी 'देर-सबेर' अपने आत्म से सम्पर्क स्थापित कर लेगा। विद्यार्थी निजी समय के इस सम्मान के प्रति सचेत हैं। वे इस पर भरोसा करने लगते हैं, इसे कीमती मानने लगते हैं। ना जाने कितनी बार मैंने बड़े किशोरों को यह कहते सुना है, "किसी भी और चीज़ से अधिक स्कूल ने मुझे स्वयं को तलाशने का समय दिया।"

अगर गहनता से ध्यान केन्द्रित हो तो समय का एहसास पूरी तरह विस्मृत हो जाता है। जब मैंने पहले-पहल रॉन्टजेन के उस वक्त के आचरण के विषय में पढ़ा जब उसने बेधने वाली किरणों को आकस्मिक रूप से खोजा – जिन्हें बाद में 'एक्स-रे' का नाम दिया गया – तो मुझे विस्मय हुआ। उत्तेजना और आवेगपूर्ण जिज्ञासा से भरकर इस नीरस और सामान्य भौतिकशास्त्री ने खुद को अपनी प्रयोगशाला में बन्द कर लिया, वह अपना भोजन दरवाज़े के बाहर रखवाने लगा, और सात दिन गुज़र जाने के बाद दुनिया को हिला देने वाली अपनी रिपोर्ट के साथ ही बाहर निकला।

एक रचनात्मक जीनियस की छवि हमारी कहानियों और किंवदन्तियों में पूर्ण एकाग्रता और समय के प्रति सम्पूर्ण लापरवाही की छवि से जुड़ी होती है। "यह तो महान प्रतिभाएँ ही करती हैं," हम प्रशंसा के भाव से कहते हैं। परन्तु हम सब अपनी-अपनी तरह से रचनात्मक प्रतिभाएँ हैं। हम सब में आवेगपूर्ण लगन की सम्भावना होती है, बाहरी दुनिया की घड़ियों की अनदेखी कर अपनी आँखें अपनी अन्दरूनी घड़ी पर गड़ा लेने की आवश्यकता होती है।

स्कूल में सार्वजानिक समय की अनुपालना उतनी ही कठोर है जितनी निजी समय के लिए ढील। यह सम्मान का मसला है। जब कई लोग किसी तयशुदा स्थान और समय पर मिलना तय करते हैं, तब शिष्टाचार यह माँग करता है कि वे इस दायित्व को निभाएँ। उन्हें एक-दूसरे के समय का ध्यान रखकर समूह के लिए साझा समय निकालना पड़ता है।

स्कूल बैठक हर गुरुवार ठीक एक बजे प्रारम्भ होती है। वहाँ मौजूद न रहना

हो तो आने की ज़रूरत नहीं है, पर आना है तो समय से आओ। सभी कक्षाएँ निर्धारित समय पर होती हैं, अन्यथा नहीं होतीं। क्षेत्र भ्रमण तयशुदा समय पर शुरू हो जाते हैं, अन्यथा वे स्कूल में ही ठप्प पड़े रह जाते हैं। जो देर से आता है उसे पीछे छोड़ दिया जाता है। जब दूसरों के साथ कोई सौदा तय हो जाता है तो निजी लय के लिए कोई स्थान नहीं होता।

स्कूल में समयहीनता का एहसास ही वह मुख्य कारण है जिसके चलते विभिन्न आयु के लोग इतनी सहजता से घुलमिल जाते हैं। यह चिन्ता कतई अप्रासंगिक लगती है कि जब व्यक्ति पैदा हुआ उसके बाद से कितने दिन या साल गुज़र गए हैं। छह साल के नन्हे, किशोर, स्नातक, शिक्षक, और अभिभावक एक-दूसरे के सार तत्व से, जो आयु को कुछ मानता ही नहीं, पूरी आज़ादी व खुलेपन से जुड़ते हैं। वे उस विलक्षण वैज्ञानिक नील्स बोह्र का किस्सा बताते हैं जो दस साल बाद अपने सहकर्मी से मिलने पर उसी वार्तालाप को जारी रख सकता था जिसमें वे दस वर्ष पूर्व मशगूल थे। सडबरी वैली में यह किंवदन्ती सामान्य वास्तविकता है।

सडबरी वैली में सबके पास समय होता है।

* * *

19

सीखना

सडबरी वैली हमें और किसी भी बात से ज़्यादा एक बात सिखाती हैः विनम्रता। हर रोज़ हम अपने अज्ञान का सामना करते हैं, उससे जूझते हैं और उसे अपना सम्मान समर्पित करते हैं।

इस सबकी शुरुआत सीखने के बारे में सीखने से हुई थी। वर्षों पहले जब हमने शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखा तब हमारी सोच यह थी कि हम जानते हैं कि लोग कैसे सीखते हैं।

कॉलेज में अध्यापन का प्रारम्भिक अनुभव मुझे स्पष्ट रूप से याद है। मैं अपना विषय जानता था और मैंने शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान तथा विकास पर पोथियाँ पढ़ी थीं। मैं दुनिया के शीर्ष पर बैठा था – खूब 'ज्ञानी,' विद्यार्थियों को कितना कुछ देने में सक्षम...

असलियत छोटी खुराकों में आई। पहले तो मैंने पाया कि मेरे सामने बैठे वे आतुर, प्रसन्न नज़र आने वाले चेहरे भारी ऊब और उपेक्षा को छिपाए हुए हैं। फिर मुझे पता लगा कि मैं जो कुछ कह रहा था उसका अधिकांश उनके पल्ले पड़ता ही नहीं था। "महत्वपूर्ण बिन्दु यह है," मैं गुरु-गम्भीर बल देते हुए कहता, "और यह ऐसी अन्तर्दृष्टि देता है जो पाठ्यपुस्तकें नहीं देतीं।" पर अफसोस कि कोई फर्क न पड़ता। जब परीक्षा पुस्तिकाएँ वापस मिलतीं तो पाठ्यपुस्तकों का सावधानी से रटा-रटाया पाठ ही हमेशा मुझे नज़र आता।

मैंने और मेहनत की, और ज़्यादा पढ़ा; पर मेरी किस्मत नहीं बदली। मैंने पाया कि मेरे सहकर्मी भी, जिस हद तक वे परवाह करते हैं, इसी समस्या से जूझ रहे हैं। धीमे-धीमे मुझे समझ आया कि विद्यार्थी वह सब कतई नहीं सीखते जो वे सीखना चाहते ही न हों, चाहे मैं उनके सामने कितना ही क्यों न नाचूँ, उन्हें कितना ही फुसलाने या धमकाने का प्रयास क्यों न करूँ।

तब मुझे इस भयंकर सत्य का पता चला कि दरअसल हम यह जानते ही नहीं कि लोग सीखते कैसे हैं, और जो वे सीख रहे हैं उसमें उनकी रुचि है भी या नहीं।

कई बार मुझे लगता है हमारे इर्द-गिर्द जो स्कूल हैं वे सम्राट और उसके नए वस्त्रों की कथा के दुनिया के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। साल दर साल वे स्वयं को ज्ञान का भण्डारी, शिक्षा प्रदाता घोषित करते जाते हैं। और जब सारी युक्तियाँ असफल हो जाती हैं तो घावों पर पैसों का प्लास्तर चढ़ाया जाता है।

पर इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। हमारे श्रेष्ठतम प्रयासों के बावजूद बच्चे वही सीखते हैं जो वे सीखना चाहें, जब सीखना चाहें, और जैसे सीखना चाहें।

सडबरी वैली में मैं इस सच्चाई को हर समय काम करते देखता हूँ। इस रहस्य का खुलासा मैं अब तक नहीं कर पाया हूँ कि वे यह दरअसल कैसे करते हैं।

स्कूल के रूप में हम यह ढोंग नहीं करते कि हम वह जानते हैं जो हम दरअसल नहीं जानते। हमारी भूमिका प्रत्येक के साथ उस समय खड़े रहने की है जब वह अपना अलग रास्ता चुनता है। हम उसकी मदद तब करते हैं जब वह मदद माँगता है। जब वह नहीं माँगी जाती, हम रास्ते से हट जाते हैं।

और उनके उन खूबसूरत दिमागों में हमें कैसी विविधता मिलती है! पियाजे, अपने दिल को नोच डालो। सीखने के चरण? समझने के सार्वभौमिक कदम? ज्ञान अधिकरण के सामान्य नमूने? बकवास!

कोई भी दो बच्चे कभी भी एक-सा पथ नहीं पकड़ते। उनमें से कोई भी दूर-दूर तक एक-दूसरे के समान नहीं होते। प्रत्येक बच्चा इतना अनूठा, इस कदर असाधारण होता है कि हम आश्चर्य से देखते हैं और हमारा दम्भ टूट

जाता है।

सभी बच्चे सीख रहे होते हैं, हर समय। जीवन उनका सबसे बड़ा शिक्षक होता है। बी.ए., एम.ए., और पीएच.डी. धारी शिक्षक साधारण अभिनेता हैं।

बच्चे दूसरे बच्चों, पुस्तकों, उपकरणों तथा वयस्कों का अपनी समझ से उपयोग करते हैं। उनका मुख्य औज़ार है उनकी जिज्ञासा, जो उन्हें जानने, काबू पाने और समझने को प्रेरित करती है।

वे दुनिया को देखना सीखते हैं, क्योंकि वे देखते हैं, और उसमें ही रहते हैं। वे पूरा दिन कमरों में डिब्बाबन्द बैठे नहीं रहते।

वे लोगों से सम्बन्ध स्थापित करना सीखते हैं, क्योंकि वे दिन भर हर उम्र के लोगों के साथ होते हैं।

वे समस्याओं का समाधान करना सीखते हैं, क्योंकि उन्हें ऐसा करना ही पड़ता है। राष्ट्रपति ट्रूमैन की मेज़ पर एक इबारत थीः "बला से यहीं पर निपटना होगा।" और यह 'यहीं' प्रत्येक विद्यार्थी का निजी स्थान है। उनकी ज़िम्मेदारी उठाने को कोई दूसरा है ही नहीं।

बच्चों को देखना मुझे प्रतिदिन कुछ नया सिखाता है। उदाहरण के लिए ज़रा इस पर विचार करें। लोग कहते हैं, "बच्चों को अपनी गतिविधियाँ चुनने की आज़ादी दें, और वे हमेशा ऐसा रास्ता चुनेंगे जिसमें सबसे कम अवरोध हों। वे कठिनाइयों का सामना करने वाला चरित्र कभी विकसित नहीं कर पाएँगे।" जब लोग मुझसे यह कहते हैं, मैं हमेशा खुद से (और यदाकदा उनसे भी) कहता हूँ, "आपने हाल में किन बच्चों को देखा है?"

जो जीवन्त नमूने हैं उनमें तो ऐसा कतई नहीं होता। ज़्यादातर मौकों पर वे सर्वाधिक कठिनाइयों भरा पथ चुनते हैं। जी नहीं, यह टंकण की भूल नहीं है। मैंने लिखा, "सर्वाधिक कठिनाइयों भरा पथ," और यही मेरा मतलब था।

मैं सच में नहीं जानता कि ऐसा क्यों होता है, पर मैं इसे हर समय होते देखता हूँ। ऐसा लगता है मानो बच्चे अपने कमज़ोर बिन्दुओं को ऐसी चुनौती के रूप में देखते हैं जिसका सामना करना ही होगा।

सो, कमज़ोर बच्चा दिन भर खेल खेलता है। गणित के भय से त्रस्त बच्चा

दिन भर गणित और बीजगणित पढ़ता है। एकान्तप्रिय बच्चा मिलने-जुलने की कोशिश करता है; मिलनसार बच्चा अकेले रहना सीखता है। हरेक कहानी महासंघर्ष और लौह संकल्प की गाथा है।

और फिर बहुआयामी होने का मसला भी है। "आपको उन्हें कई चीज़ों के बारे में थोड़ा-थोड़ा सीखने पर बाध्य करना पड़ता है। बच्चों को स्कूल में सब विषयों में जानकारी देना आवश्यक है। अगर आप उन्हें उनके हाल पर छोड़ दें, तो वे बेहद संकीर्ण बन सकते हैं।"

इस शिकायत का एक भी पक्ष मुझे कभी समझ नहीं आया है। अव्वल तो इसमें अहंकार है, मानो आप या मैं या विशेषज्ञों का कोई समूह मानवीय ज्ञान के अथाह सागर में से बूँदों का कोई आदर्श मिश्रण चुन सकते हैं जिसे सबको पीने की ज़रूरत हो। फिर इसका बचकानापन है। मानो आज के इस देश के बच्चे जो मल्टीमीडिया के हमले के युग के हैं, दिन-रात उस सबसे अधिक जानकारी पाते न हों जिसकी हम कल्पना कर सकते। जो लोग संकीर्णता की शिकायत करते हैं ठीक वे ही अगले दिन अत्यधिक जानकारी, आवश्यकता से अधिक उद्दीपन की शिकायत करते मिलते हैं। और अन्त में यह धारणा भी है कि संकीर्ण जानकारी वाला होना बुरा है। किसके लिए बुरा? मोत्ज़ार्ट के लिए? आइंस्टाइन के लिए? विल्बर तथा ऑरविल राइट के लिए? हमारे महानतम राष्ट्रीय नायकों का गुणगान किसी न किसी मुद्दे पर उनके एकनिष्ठ समर्पण के कारण ही किया जाता है। क्या यह बहुआयामी होना है?

बात लौटकर विनम्रता पर आ जाती है। हममें से सबसे चतुर हम में से सबसे मूर्ख से कुछ ही कम बेवकूफ होता है। वे जितना सीखना हो उतना सीखेंगे, और उससे अधिक भी, बशर्ते कि हम हस्तक्षेप न करें, जब तक वे इसकी याचना हमसे न करें।

* * *

20

मूल्यांकन

एक दिन मैं एक छह वर्षीय बच्चे के साथ गेंद कैच करने का खेल खेल रहा था। हर बार जब वह गेंद फेंकता, और हर बार जब वह मेरी फेंकी गेंद पकड़ने की कोशिश करता, मैं उसे प्रोत्साहित करताः "बढ़िया रहा"; "बढ़िया फेंकी," "वाह, क्या कोशिश है।" अचानक उसने गेंद गुस्से से मेरी ओर फेंकी और चीखा, "मैं आपके साथ अब नहीं खेलूँगा। आप झूठ बोल रहे हैं। मैंने खराब गेंद फेंकी, बिलकुल बढ़िया नहीं थी, और आप बड़े झूठे हो।"

बेशक वह सही कह रहा था। और मैं गलत था। स्कूल में यह मेरे लिए एक और महत्वपूर्ण सबक था।

सडबरी वैली में अंक नहीं दिए जाते। विद्यार्थी खुद तय करते हैं कि वे अपनी प्रगति को कैसे आँकेंगे। आम तौर पर बाहरी दुनिया के श्रेष्ठतम आदर्शों से अपनी तुलना कर अपनी प्रगति को कठोरतम पैमानों से नापते हैं।

गणित के विद्यार्थी जानते हैं कि उन्होंने गुणा और भाग, और शेष गणितीय संक्रियाओं में कब श्रेष्ठता हासिल कर ली है; या तो वे सवालों के सही हल तक पहुँच जाते हैं या नहीं। अगर उन्हें कुछ समझ नहीं आता तो वे या तो खुद ब खुद उस गुत्थी को सुलझा लेते हैं या मदद माँगते हैं, जब तक उन्हें यह पता न चल जाए कि वे समझ गए हैं। मोटरगाड़ियों की मरम्मत करना सीखने वाला बच्चा जल्दी ही समझ जाता है कि वह एक चीज़ तो ठीक कर पाता है, पर दूसरी नहीं। जितने अधिक हिस्सों की मरम्मत वह कर पाता है, उतना

बेहतर मैकेनिक वह बनता है; पर उसे किसी बाहरी मदद की ज़रूरत नहीं पड़ती है जो उसे यह बताए कि वह अभी क्या-क्या नहीं कर सकता है।

यह प्रत्येक गतिविधि में होता है। कुम्हार ने हण्डियाँ देखी होती हैं, और चित्रकार ने कलाकृतियाँ, लेखक ने किताबें पढ़ी होती हैं, संगीतकार ने रिकॉर्ड या कंसर्ट सुने होते हैं। उनमें से हरेक के मन में श्रेष्ठता का एक पैमाना होता है, और प्रत्येक बिना कोई भ्रम पाले अपने लिए लक्ष्य तय कर सकता है।

श्रेष्ठता के समक्ष स्व-मूल्यांकन की प्रक्रिया अक्सर दुखद कुण्ठा से भरी होती है। जब उसकी कमियाँ सामने आती हैं तो दिनों और हफ्तों तक के काम को त्याग दिया जाता है। "तुम इस सुन्दर तस्वीर को फाड़ क्यों रहे हो?" एकाधिक विद्यार्थी से मैंने यह प्रश्न पूछा है। "क्योंकि यह भोंडी है।" अनिवार्य तौर पर यह जवाब आता है।

कुण्ठा से क्रोध, भयावह किस्म की बुरी मनोवृत्तियाँ तथा आत्मतिरस्कार पैदा हो सकते हैं।

इस बात का कोई फायदा नहीं होता कि कोई दूसरा कहे, "पर तुम तो इसमें बहुत अच्छे हो," जब वास्तव में हमारा मतलब होता है, "अपनी आयु और उपलब्धि स्तर के हिसाब से तुम बहुत बढ़िया हो।" इससे सन्तुष्टि नहीं मिलती। बच्चे प्रारम्भ करने से पहले ही यह तय कर चुके होते हैं कि वे किस तरह की श्रेष्ठता हासिल करना चाहते हैं, और आपके शब्द खोखले और झूठे लगते हैं।

इस निर्दयी स्व-मूल्यांकन से जन्मी कुण्ठा कई बार बच्चों को अपने उद्यम को त्यागने पर मजबूर कर देती है। आम तौर पर बच्चे फिर से शुरुआत कर भयपूर्ण एकनिष्ठ दृढ़ता से बार-बार कोशिश दोहराते हैं, और अन्ततः वे आकर आपसे यह कहते हैं, "यह अच्छा काम बन पड़ा है।"

कभी-कभार बच्चे अपने काम में महारत हासिल करने में सहायता पाने के लिए बाहरी आलोचना तलाशते हैं। वे एक आलोचक चाहते हैं और ईमानदारी और कुशलता की माँग करते हैं। हरेक प्रशिक्षु कार्यक्रम में यही तो होता हैः मूलतः शागिर्द प्रशिक्षण और सतत समालोचना के लिए ही उस्ताद से आवेदन करता है।

यह सब विद्यार्थी और विषय पर निर्भर करता है। कई बच्चे मेरे पास आकर यह कहते हैं, “क्या आप मेरा लेखन पढ़कर उसे सुधारने में मेरी मदद करेंगे?” जो बच्चे यह अनुरोध करते हैं वे पढ़े-लिखे और तेज़ होते हैं, पर उन्हें यह समझ नहीं आता कि वे भूल कहाँ कर रहे हैं।

जब मुझसे कहा जाता है तो मैं मदद करता हूँ। और मैं ऐसा करना बन्द कर देता हूँ जब विद्यार्थी मुझे कहते हैं कि उन्हें अब मेरे साथ काम नहीं करना है या उन्हें जो चाहिए था उसे वे पा चुके हैं। स्कूल के स्टाफ का प्रत्येक सदस्य इसी प्रकार करता है। यह स्कूल में रचा-बसा है।

सडबरी वैली के मर्म में यह नीति है कि हम लोगों का मूल्यांकन नहीं करते। हम एक-दूसरे से या हमारे द्वारा तय किए गए किसी मानक से उनकी तुलना नहीं करते। हमारे लिए ऐसा करना विद्यार्थी की निजता के और आत्म-निर्धारण के अधिकार का उल्लंघन है।

स्कूल कोई न्यायाधीश नहीं है। अगर कोई विद्यार्थी अपनी ओर से किसी को कोई अनुमोदन पत्र लिखने को कहता है तो यह सम्बन्धित पक्षों का एक निजी मामला है। अगर वह व्यक्ति ऐसा पत्र लिखने को सहमत हो जाए तो वह अपनी व्यक्तिगत लेखन सामग्री का उपयोग करता है, स्कूल की नहीं। जहाँ तक सडबरी वैली का प्रश्न है, हरेक विद्यार्थी ‘ठीक’ है।

यह नीति कई बार अजीबोगरीब समस्याएँ पैदा करती थी, और यदाकदा अब भी करती है। यह बार-बार होता है कि उच्चतर शिक्षण शालाओं और नौकरियों के लिए मानक आवेदन प्रपत्र हाई स्कूल की प्रतिलिपियाँ और अनुमोदन माँगते हैं। हम एक शिष्ट पत्र भेज देते हैं जो यह स्पष्ट करता है कि हम किस प्रकार संचालित होते हैं और हमारी नीति क्या है। हम यथासम्भव सहजता से यह जानकारी देते हैं कि हम कोई अंक नहीं देते और किसी प्रकार का मूल्यांकन जारी नहीं करते। दस में से नौ बार हमारी नीति स्वीकार ली जाती है और विद्यार्थियों को उन प्रवेश अधिकारियों या कार्मिक प्रबन्धकों के समक्ष, जहाँ वे आवेदन करते हैं, खुद अपना मामला प्रस्तुत करने की अनुमति मिल जाती है, जो वैसे भी सही तरीका है।

पर दस में से जो एक बार होता है वही जीवन को रोचक बनाता है। कुछ मौकों पर वे हमारे उत्तरों को अनदेखा कर – क्योंकि वे उनके कम्प्यूटर

प्रोग्रामों में फिट नहीं बैठते – कम्प्यूटरीकृत अनुरोध पर अनुरोध भेजते जाते हैं। जब ऐसा होता है तो एकमात्र कुंजी धीरज ही हैः हम कोशिश करते जाते हैं, जब तक हम आखिरकार उस इन्सान तक न पहुँच जाएँ जो निर्णय ले सकता है। कई बार हमारे पास किसी का फोन आता है, जो कहता है, "क्या आप हमें कुछ भी नहीं दे सकते, जैसे फोन पर एक मौखिक मूल्यांकन ही जिसे कोई दूसरा नहीं देखेगा?" हम धैर्यपूर्वक समझाते हैं कि यह सम्भव नहीं है।

जहाँ तक हम जानते हैं, हमारी मूल्यांकन नीति ने हमारे किसी विद्यार्थी के स्कूल से बाहर निकलने के बाद के जीवन में नुकसान नहीं पहुँचाया है। बेशक, यह नीति उनके लिए स्थितियों को कुछ कठिन ज़रूर बना देती है। पर ठीक ऐसी ही कठिनाइयों के बारे में ही यह स्कूल हैः अपना रास्ता खुद बनाना, अपने मानक स्वयं तय करना, अपने लक्ष्य स्वयं हासिल करना सीखना। हमारी अंक न देने, मूल्यांकन न करने की नीति के बोनस के रूप में हमें जो मिलता है वह है वयस्कों का अनुमोदन पाने के लिए विद्यार्थियों के बीच संघर्ष-स्पर्धा से मुक्त वातावरण। सडबरी वैली में लोग हमेशा एक-दूसरे की मदद करते हैं। ऐसा न करने का कोई कारण उनके पास नहीं है।

* * *

21

विद्युत-छड़

मार्क ट्वेन की एक अद्‌भुत कहानी एक ऐसे विद्युत-छड़ विक्रेता के बारे में है जो एक ग्राहक को फुसलाकर आँधी-तूफान से घर के हरेक कोने की रक्षा के लिए कई छड़ें बेच डालता है। इसके बाद जब पहला तूफान आता है तो ग्राहक अपने घर में कैद हो जाता हैः विद्युत-छड़ें मीलों तक आकाश में बिखरी बिजली को आकर्षित कर लेती हैं और घर बिजली की मज़बूत दीवार से घिर जाता है।

यह क्रूर हास्य कथा हमारे लिए तब एक भयावह वास्तविकता में तब्दील हो गई जब हमारा स्कूल पहले-पहल खुला। पता यह चला कि सडबरी वैली साठ के दशक के अन्तिम वर्षों में शिक्षा के तूफानी आकाश के लिए एक विशाल विद्युत-छड़ है।

यह समय अमरीकी समाज के लिए उथल-पुथल का समय था। प्रमुख राजनीतिक टकरावों की एक ृंखला ने देश को विभाजित, क्रोधी और हिंसक बना डाला था। स्कूलों को भी बख्शा नहीं गया।

हर जगह नए स्कूल नज़र आने लगे जिनकी स्थापना असन्तुष्ट शिक्षकों या सक्रिय पालकों या राजनैतिक गुटों या यदाकदा विद्रोही बड़े विद्यार्थियों ने की थी। इनमें से कई पर 'मुक्त शालाओं' का ठप्पा चस्पाँ था। कुछ समय बाद ये सब 'वैकल्पिक स्कूलों' के शीर्षक के तहत आ गए जिसका उपयोग आज तक मुख्यधारा के बाहर के किसी भी स्कूल के लिए किया जाता है।

सडबरी वैली ठीक उसी साँचे में नहीं ढाला गया था जिसमें ये तमाम नए स्कूल ढाले गए थे। हमने अपना दर्शन और लक्ष्य इतिहास की विस्तृत पृष्ठभूमि, सीखने के सिद्धान्त और अनूठे अमरीकी अनुभव को ध्यान में रखकर गढ़े थे। यह भाग्य का खेल ही था कि हम 1968 के उथल-पुथल पूर्ण वर्ष में खुलने को तैयार थे। भाग्य के एक अन्य खेल के चलते हम पूर्वी मैसाच्युसेट्स में एकमात्र वैकल्पिक स्कूल के रूप में थे जो किशोरों के लिए उपलब्ध था और जो उन मुट्ठी भर स्कूलों में से एक था जो छोटे बच्चों के लिए उपलब्ध थे।

कई लोगों के लिए बाल की खाल निकालने का समय नहीं था। हम 'वैकल्पिक' विद्युत-छड़ थे। चारों ओर से लोग अपने बच्चों का दाखिला करवाने आ जुटे, अपने कार्यक्रम के बारे में हम जो बता रहे थे उसे ठीक से सुने-समझे बिना ही। नतीजा एक विपदा ही हो सकती थी। पता यह चला कि अधिकांश किसी प्रकार के प्रगतिशील स्कूल की तलाश में थे। उन्हें कोई ऐसी जगह चाहिए थी जो उनके बच्चों के लिए सघन मार्गदर्शन, परामर्श और हस्तक्षेप उपलब्ध करवाए। यह इच्छा हम जो कर रहे थे उससे कतई मेल नहीं खाती थी।

उन्होंने कुछ समय इन्तज़ार किया। ठीक वैसे जैसे विद्यार्थियों ने भी किया। उन्हें भरोसा था कि चयन की जो आज़ादी हम बच्चों को दे रहे थे वह उन्हें लुभाने, उन्हें सहज महसूस करवाने, मुक्त महसूस करने का छलावा भर है। उन्हें विश्वास था कि कुछ सप्ताहों के अ-निर्देशन के बाद स्टाफ के सदस्य आखिरकार अपनी निष्क्रिय भूमिका से बाहर निकलेंगे और गरमाहट से भर अपनी बाँहें बच्चों के कन्धों के गिर्द लपेटकर कोमलता से कहेंगे, "ठीक है, जॉनी, तुम्हें खेलने और मस्ती करने के लिए कई सप्ताह मिले; क्या तुम्हें नहीं लगता कि अब व्यवस्थित हो कुछ उत्पादक काम करना चाहिए? क्या तुम नहीं चाहोगे कि हम तुम्हारी मदद करें?"

पर वह दिन कभी नहीं आया। हम अपनी बात पर अड़े रहे। तब जाकर सबको यह समझ में आया कि हमारा आशय वास्तव में वही है जो हमने बताया था। बच्चे सच में स्वयं चुनने को आज़ाद होंगे।

खूब खलबली मची। आधे माता-पिता उसी कटुता से स्कूल के विरुद्ध उठ

खड़े हुए जो राजनीति के अखाड़े में व्याप्त थी। एक माह की घनघोर लड़ाइयों के बाद स्कूल की हत्या कर दी गई। हम अपना काम करते रहे।

स्कूल को लेकर उसके जन्म काल में हुए युद्ध ने सारी विद्युत-छड़ें उखाड़ दीं। अब लोग हमारे पास जो हम हैं उसी के लिए आते हैं। ज़्यादातर। अब वे पहले की तरह हमें वो नहीं मान लेते जो हम नहीं हैं।

एक दोस्त ने एक बार कहा, "मुझे तुम्हारे और प्रगतिशील 'मुक्त' स्कूलों में सही अन्तर मालूम है।"

"तो वह क्या है भला?" मैंने पूछा। मुझे सन्देह था कि बात किसी जुमले में रखी जा सकती है।

"तुम्हारे स्कूल में तुम्हें वही करना पड़ता है जो तुम्हें पसन्द हो; दूसरों में, तुम्हें वह पसन्द करना पड़ता है जो तुम कर रहे हो।"

यह बात की सुन्दर अभिव्यक्ति थी।

हमने अपना मिशन अपने विद्यार्थियों का मनोरंजन करना, उन्हें 'प्रेरित' करना, उन्हें वह सब सीखने को फुसलाना जो उन्हें सीखना 'चाहिए' कभी नहीं माना। हमने खुशमिज़ाजी और प्रसन्नता को अपनी प्राथमिकता सूची के शीर्ष पर कभी नहीं रखा। हमारे लिए सडबरी वैली में वास्तविकता से परिचय अधिक महत्वपूर्ण है। सीखने और बढ़ने के लिए रोज़मर्रा के संघर्ष, निराशाएँ, कुण्ठाएँ और असफलताएँ उतनी ही आवश्यक हैं – बल्कि उससे ज़्यादा आवश्यक हैं – जितनी प्रसन्नता और सन्तोष जिनको अन्य स्कूल तलाशते हैं।

ये मसले अब प्रश्न के घेरे में नहीं हैं, और सालों से नहीं रहे हैं। हम हर ओर बच्चों को स्वयं अपने जीवन की दिशा तलाशने देने की आज़ादी के लाभ उठाते देखते हैं।

हम अब एक अलग किस्म की विद्युत-छड़ हैं; या यह कहना बेहतर होगा कि हम प्रकाश की मशाल हैं जो उन लोगों को आकर्षित करती है जो अपने बच्चों को वह आज़ादी देने की इच्छा रखते हैं जो हम उपलब्ध करवाते हैं।

* * *

भाग 2

स्कूली जीवन

22
स्कूल की बैठक

प्रत्येक गुरुवार दोपहर ठीक एक बजे स्कूल सभा बैठक के सभापति बैठक प्रारम्भ करते हैं। उसका एक और सत्र प्रारम्भ होने वाला होता है।

स्कूल का दिल यही बैठक है। सडबरी वैली को यही संचालित करती है। स्कूल की रोज़मर्रा ज़िन्दगी को संचालित करने वाली सत्ता इसी बैठक में से आती है। छोटे और बड़े सभी मसले इस बैठक में निपटाए जाते हैं। स्कूली जीवन के कुछ बेहद निर्णायक मुद्दों का समाधान यहीं किया गया था।

स्कूल की न्याय व्यवस्था 1968 में छह घण्टे से भी अधिक समय तक एक के बाद एक चली बैठकों में बनाई गई थी। ग्यारह वर्ष बाद, लम्बे विवादों के बाद व्यवस्था को पुनर्गठित किया गया, और छह वर्ष बाद फिर एक बदलाव लागू किया गया। इन मसलों पर घण्टों सोच-विचार किया गया और उन पर तर्क-बहसें हुईं।

अपराधों की सभी कठोर सज़ाओं के फैसले वहीं लिए जाते हैं। सभी न्यायिक मामलों की समीक्षा होती है।

स्कूल के नियम स्कूल बैठक में प्रस्तावित होते हैं और उसी के द्वारा पारित किए जाते हैं। उन्हें स्कूल की कानून की किताब में जोड़ दिया जाता है।

संहिता में समय-समय पर कुछ विचित्र किस्म के नियम भी घुस आते हैं। पहले-पहल लोग पूरे परिसर में कागज़ और कचरा बिखेरा करते थे और हम

उसे साफ रखने का कोई उपाय तलाशने में जूझा करते थे। बहस जारी रही और यह साफ हो गया कि इस समस्या से कुछ लोग शेष लोगों से कहीं अधिक परेशान थे। ऐसा कोई ज़ाहिर-सा तरीका नहीं था कि बेपरवाह लोगों को सौन्दर्यबोध के प्रति सचेत लोगों की रुचि का सम्मान करने पर बाध्य किया जा सके। आखिरकार जैक ने एक समाधान सुझायाः "जो कचरा फेंकते हैं उन्हें फेंकने दो और जो उसे उठाते हैं उन्हें उठाने दो।" यह अबाध स्वातंत्र्य की नीति की हद थी। एक थकी-उकताई बैठक ने यह सूक्ति अपना ली और यह नियम किताबों में दो वर्ष तक रहा, जब तक आलसी लोग बाज़ न आ गए।

स्कूल निगमों का गठन स्कूल बैठक में होता है। स्टाफ के सदस्यों के अनुबन्धों का सौदा भी इसी के द्वारा किया जाता है। विशेष व्यय इसी के द्वारा स्वीकृत किए जाते हैं। निजी छूटें बैठक के मंच से ही पारित की जाती हैं या वापस ली जाती हैं।

आपको यह पता नहीं होता है कि कौन-सा मुद्दा अचानक अन्तहीन बहस में तब्दील हो जाएगा। कई निर्णायक मुद्दे पन्द्रह मिनट में ही पारित हो जाते हैं। अन्य मुआमले, जिन्हें आप गौण मानकर चले हों, बैठक का ध्यान घण्टों तक उलझाए रखते हैं।

जब डेनिस यह छूट चाहता था कि वह सीसे की पेंसिलें प्रति पेंसिल एक डाइम की कीमत पर बेचे (और स्कूल को लाभ का हमेशा की तरह 10 प्रतिशत दिया जाए), तो अचानक एक विवाद उठ खड़ा हुआ। स्कूल के पास एक पेंसिल वितरण मशीन थी जो 25 सेंट प्रति पेंसिल की दर से पेंसिलें उपलब्ध करवाती थी। और हमारे पास पाँच वर्षों की पेंसिलें पहले से मौजूद थीं। स्कूल बैठक ऐसी छूट कैसे देती जो स्वयं उसी के साथ स्पर्धा करे?

बड़े सिद्धान्तों को याद किया गया। मुद्दे के समाधान के पूर्व मुक्त व्यापार, संरक्षणवाद, स्कूल की पेंसिल वितरण मशीन का पूरा इतिहास, सब पर बारीकी से सोच-विचार किया गया। किसी को अन्दाज़ा नहीं था कि इस मसले पर कोई चर्चा होगी भी!

बैठक में आयु सीमा के बिना, प्रत्येक विद्यार्थी का एक मत होता है। यही बात स्टाफ के सदस्यों पर भी लागू है। क्योंकि विद्यार्थियों की संख्या स्टाफ

के सदस्यों से सात गुना या उससे भी अधिक होती है, स्कूल का प्रभावी नियंत्रण उन्हीं के हाथों में होता है।

जब हमने पहले-पहल स्कूल खोला था, स्कूल बैठक को कानूनी ढाँचे में रखने में हमें समस्या आई थी। मैसाच्युसेट्स के कानून के तहत नाबालिगों को वयस्कों के बराबर सत्ता नहीं दी जा सकती थी। मुझे अब तक अपने दो सहायी, हमदर्द और प्रतिष्ठित वकीलों की याद है; दोनों का ही जन सेवा का लम्बा रिकॉर्ड रहा था। वे बड़बड़ाते हुए आगे-पीछे चक्कर लगा रहे थे। "आपके यहाँ चार साल के, आठ साल के और बारह साल के बच्चे होंगे जो उन्हीं मुद्दों पर मतदान करेंगे जिन पर वयस्क करेंगे?" बात उनको बेतुकी लग रही थी। पर उनके रचनात्मक दिमागों ने ऐसा कर पाने का उपाय तलाश लिया।

प्रत्येक व्यक्ति मतदान करता है, बशर्ते कि वह बैठक में आए। उपस्थिति स्वैच्छिक है। ऐवज़ी मान्य नहीं है। सो स्कूल में जो कुछ होता है वह वही है जो एक मुक्त लोकतंत्र में हर जगह होता हैः जब कोई मुद्दा किसी के दिल के करीब हो तो वह उपस्थित होता है। अन्यथा सामान्यतः वे परवाह नहीं करते।

कुछ समय बाद आप उपस्थित लोगों को देखकर अनुमान लगा सकते हैं कि बैठक की कार्यसूची क्या होगी। जब कसरती किशोरों का झुण्ड अचानक सदल-बल हाज़िर हो जाता है तो शर्त लगाई जा सकती है कि वे किसी खेल उपकरण को खरीदने के लिए विशेष व्यय की माँग रखेंगे। जब तीन बारह वर्षीय लड़के अचानक मौजूद होते हैं तो हवा में किसी छूट के आवेदन का संकेत तैरता है। बेशक कुछ नियमित रूप से उपस्थित होने वाले भी होते हैं, जो हर उम्र के होते हैं, जिनकी रुचि स्कूल संचालन में होती है, उसी तरह जैसे हरेक कस्बे-नगर में भी ऐसे लोग होते हैं।

वैसे उपस्थित लोगों को देखकर कार्यसूची का अन्दाज़ा लगाने की ज़रूरत नहीं होती। वह प्रति सप्ताह पहले ही छाप दी जाती है। इसी तरह स्कूल बैठक के रिकॉर्ड को भी छापा जाता है। यह परिपाटी स्कूल प्रारम्भ होने के बाद से ही रही है। इससे सभी पहले से ही आगाह हो जाते हैं कि होने क्या वाला है।

स्कूल बैठक प्रक्रिया के औपचारिक नियमों के अनुसार संचालित होती है।

बैठक-अध्यक्ष इन नियमों को सीख लेता है और बैठक में उपस्थित नौसिखिए ज़रूरत पड़ने पर उसकी मदद करते हैं। लोग तब ही बोलते हैं जब अध्यक्ष अनुमति देता है; वे अध्यक्ष को सम्बोधित करते हैं; बैठक में पूरी खामोशी और शिष्टाचार बरता जाता है (ऐसा न होने पर अध्यक्ष हस्तक्षेप करता है)। लगभग सभी निर्णय सामान्य बहुमत से होते हैं। प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रस्ताव को एक के बाद एक होने वाली कम से कम दो बैठकों में प्रस्तुत किया तथा पढ़ा जाता है, ताकि लोगों को उस पर सोच-विचार करने का समय मिले।

शुरुआती दो वर्षों के बाद से अध्यक्ष हमेशा ही कोई विद्यार्थी रहा है जिसे स्कूल वर्ष की प्रारम्भिक बैठकों में एक वर्ष की अवधि के लिए चुना जाता है।

स्कूल बैठक सुचारू रूप से चलती है और थोड़े-से समय में ही आश्चर्यजनक संख्या में कामों को निपटा लेती है। बैठकें बिरले ही दो घण्टों से लम्बी खिंचती हैं। यह स्कूल चलाने के लिए प्रति सप्ताह लगाई गई अवधि के रूप में अधिक नहीं है। जब स्कूल खुला ही था तो बाहरी लोग अक्सर बैठकों की कठोर औपचारिकता के मसले पर हमें बुरी तरह डाँटते थे। "उनमें अधिक सौहार्द्र, अधिक आदान-प्रदान होना चाहिए, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर पाने का अधिक मौका मिलना चाहिए।" कुछ लोग बहुमत के नियम से नाराज़ होते थे; उन्हें लगता था कि भावनात्मक जुड़ाव के सत्र के बाद सब कुछ सहमति से होना चाहिए।

सडबरी वैली को उन लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को अपनाने के निर्णय पर अड़े रहने पर कभी अफसोस नहीं हुआ जो प्राचीन यूनानी काल से चली आई हैं। हमारे लिए, यहाँ जो व्यावहारिक लोकतंत्र लागू है वही सही है, और हमें इस पर गर्व है।

* * *

23
खतरे

पहली बार जब एक बारह वर्षीय बच्चा बीच वृक्ष के शीर्ष तक चढ़ा तो हमारे दिल थम गए। वहाँ सत्तर फीट की ऊँचाई से, पत्तियों के बीच मुश्किल से दिखाई देता, वह गर्व से पुकार रहा था। और हम यहाँ नीचे धरती पर खड़े थे और हमारे मन में हादसे की छवियाँ तैर रही थीं।

बीच के वृक्ष ने परिसर में खतरों पर कई लम्बी चर्चाओं को प्रारम्भ किया। जितना हम इस विषय पर सोचते उतने अधिक जोखिम हमें पता चलते। जिन्हें पहचानने में हम चूक जाते उन्हें बच्चे तलाश लेते।

हरेक बच्चा जहाँ चाहे, और जब चाहे, जा सकता है। हमारा परिसर खुला परिसर है। हमारी किस्मत में चिन्ता करना ही लिखा है।

शुरू में हम अनाड़ी और भोले थे। "हमारा परिसर खुला परिसर है," हमने कहा, यह समझते हुए कि इसका मतलब है कि बच्चे जब चाहें परिसर से बाहर निकल सकते हैं। हम जब छोटे थे तो स्कूल की जेल जैसी बन्दिशों से हमें कितनी नफरत थी! जहाँ तक हमारा सरोकार था स्कूल और जेलखाने में कोई समानता नहीं थी। सडबरी वैली में हमने सारे दरवाज़े खोल दिए और चाबियाँ फेंक दीं।

कुछ महीनों हम खुश रहे। तब एक रोज़ हमने दो आठ वर्षीय बच्चों को सड़क पर चलते तथा मील भर दूर नॉबस्कॉट कॉर्नर पर स्थित पिज्ज़रिया की

ओर जाते पाया। आठ वर्षीय बच्चे चलती सड़क पर! हम भय से काठ हो गए।

पुलिस को भी हमारी आदत डालने में कुछ साल लग गए। हमारे पास रोज़मर्रा पुलिस अधिकारियों के फोन आते कि उन्हें हमारे 'भगोड़े' मिले हैं।

तब 'चट्टानों' की बारी आई – परिसर का वह बेहद सुन्दर कोना जहाँ प्रकृति ने विशाल चट्टानें छितराई थीं। कितनी खूबसूरत लगती थीं वे – जब तक पाँच और छह साल के नन्हों ने चट्टानों पर चढ़ना तय न कर लिया। अचानक वे भयावह लगने लगीं!

इसके बाद नदी ने अपनी ओर हमारा ध्यान खींचा। चक्की वाले बाँध से निकल वह नन्ही और उथली नदी हमारी ज़मीन से मुड़ती-बलखाती निकलती थी। उसे 'बेटिंग ब्रुक' कहा जाता, एक ठेठ ग्रामीण छोटी नदी, खूबसूरत और लुभावनी।

हमें इल्म ही नहीं था कि यह निर्दोष-सी नन्ही नदी किस-किस तरह से खतरनाक हो सकती है। जो पत्थर उसके तल पर बिछे थे वे फिसलन भरे और अस्थिर थे। इधर-उधर छिपे छोटे गड्ढे थे, जिनमें से कुछ लगभग दो फीट गहरे थे, जहाँ कोई चार साल का बच्चा गले तक गीला हो सकता था।

सच तो यह है कि जल्दी ही हमें समझ आ गया कि सही दृष्टिकोण से देखें तो वातावरण में मौजूद कुछ भी खतरनाक हो सकता है। पेड़, चट्टानें, दालान, सड़कें, नदी-नहरें। यहाँ तक कि हमारे खूबसूरत दिखने वाले लॉन में भी छिपे हुए गड्ढे थे जिनको न देखने पर चलने वाले का पैर मुड़ सकता था।

हमें पता था कि इन खतरों के बारे में हमें क्या महसूस होता था, पर हमें समय-समय पर खुद को याद दिलाते रहना पड़ता था। स्कूल का केन्द्रीय विचार यह था कि बच्चे समझदार फैसले करना तब सीखते हैं जब उन्हें असली दुनिया की समस्याओं से जूझना-निपटना पड़ता है। हमें लगता है कि बच्चे ज़िम्मेदार व्यक्ति तब ही बन सकते हैं जब वे अपनी भलाई, अपनी शिक्षा, अपनी नियति के लिए स्वयं ज़िम्मेदार हों।

परिसर के खतरों के माध्यम से हरेक उच्च सिद्धान्त की तरह इस विचार की भी जल्दी ही परीक्षा हुई।

हमने इन मसलों पर घण्टों-घण्टों चर्चा की है, हालाँकि हम जानते हैं कि हमें अपने सिद्धान्तों पर डटे रहना है। मुख्य मसला यह है कि स्कूल के बड़े साँत्वना के लिए एक-दूसरे का हाथ पकड़े रहें।

अब होता यह है कि दैनिक खतरे बच्चों के लिए चुनौतियाँ हैं जिनका सामना वे धैर्यभरी दृढ़ता, एकाग्रता और, सबसे बड़ी बात, सावधानी के साथ करते हैं। लोग स्वभावतः अपने हित की रक्षा करते हैं, वे आत्म-विनाशकारी नहीं होते। वास्तविक खतरा लोगों के चारों तरफ पाबन्दियाँ लगाने में है। पाबन्दियाँ अपने-आप में चुनौती बन जाती हैं, और उन्हें तोड़ना इतनी बड़ी प्राथमिकता बन जाती है कि व्यक्तिगत सुरक्षा को अनदेखा किया जा सकता है।

सो हम चीज़ों को होने देते हैं। हमारे यहाँ छोटे-मोटे घाव और चोटें लगने की घटनाएँ ज़रूर घटी हैं। कुछ को धो-पोंछकर बैंड-एड चिपका दी जाती है, और बच्चे फौरन ही जहाँ वे थे वहाँ वापस जाकर फिर से कोशिश करने में जुट जाते हैं। पर उनमें से ज़्यादातर तो देखी भी नहीं जातीं। वे रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के शारीरिक निशान होते हैं, और बच्चे इतने व्यस्त होते हैं कि उन पर ध्यान ही नहीं देते। हमारी सबसे गम्भीर दुर्घटना तब हुई जब आठ साल की एक बच्ची फिसलपट्टी से गलत तरीके से फिसली और उसके कन्धे में ज़ोर की चोट लगी।

हम एक लक्ष्मणरेखा ज़रूर खींचते हैं, जो अदृश्य रहती है और जो उन मामलों से सम्बन्धित है जिनमें सामुदायिक और सार्वजनिक कानून भी रेखा खींचता हैः तालाब के किनारे। जल स्त्रोत सब लोगों द्वारा सार्वजनिक जोखिम माने जाते हैं। उनके खतरे अमूमन गुप्त होते हैं और अपनी गलती से सीखने का बिरले ही अवसर मिलता है। एक व्यावहारिक मसले के रूप में, न तो सामान्य बुद्धि और न ही हमारा बीमा तालाब तक पहुँचने की खुली छूट को सहन करेंगे।

अतः स्कूल बैठक ने एक कठोर नियम पारित किया जिसने किसी को भी तालाब में घुसने, यहाँ तक कि उसमें पैर की उँगलियाँ तक डुबोने से मना कर दिया। इस नियम के अनुसार केवल नियंत्रित स्थितियों में ही ऐसा किया जा सकता था।

इस मसले को हवा दी गई, उस पर बहस हुई, और सर्वसम्मति से उसे स्वीकारा गया। तालाब पर लगी पाबन्दी को न तो स्कूल बैठक में और न व्यवहार में ही कभी चुनौती दी गई। इतने सालों में मुट्ठी भर नन्हों को ही अपने पैर गीले करते देखा गया है। पर बिना अनुमति के कोई भी पानी में नहीं घुसा है, न बर्फ पर चढ़ा है।

तालाब के चारों तरफ कोई बाड़ नहीं है।

बीच का वृक्ष अब भी प्रति वर्ष विद्यार्थियों की एक नई पीढ़ी को आकर्षित करता है। हर साल उसके शिखर पर एक नया समूह विजय पाता है और सफलता के राज़ को आगामी आगन्तुओं को सौंप देता है।

नॉबस्कॉट पिज्ज़ा को पुलिस की तरह ही हमारे नन्हों के प्रकट होने की आदत पड़ चुकी है। पड़ोसी हर उम्र के बच्चों को आते-जाते देखने के आदी हो चुके हैं।

बच्चे यहाँ जो सीखते हैं, रोज़मर्रा के खतरों से निपटना उसका अहम हिस्सा है। सडबरी वैली में वे बिना बन्दिशों की एक वास्तविक दुनिया में जीते हैं।

* * *

24

निष्ठा प्रणाली

विद्यार्थी अपनी उपस्थिति का हिसाब टँगी हुई सूचियों में स्वयं दर्ज करते हैं।

अकेला तालाब ही स्कूल का वह हिस्सा नहीं है जो निष्ठा पर टिकी इस व्यवस्था के अनुसार चलता है। समूचा स्कूल ही इससे संचालित होता है।

उदाहरण के लिए, ताले को ही लें। सडबरी वैली में हमें तालों से चिढ़ है। यह परम्परा स्कूल के प्रारम्भिक दिनों से रही है कि हम स्कूल में कहीं भी ताले नहीं लगाते।

हरेक की अपनी निजी दराज़ है जिसमें वे स्कूल में अपनी चीज़ें रखते हैं। दराज़ें व्यक्तिगत घोंसलों के समान हैं जिनमें कई प्रकार के खज़ाने छिपाए जाते हैं। दराज़ें मालिकों के अलावा सबके लिए वर्जित हैं। उन पर ताले नहीं होते।

बिरले ही किसी दराज़ से कुछ गायब होता है। यदाकदा कोई किसी दूसरे की दराज़ में झाँकता पकड़ा जाता है, और उसे न्याय समिति के समक्ष पेश किया जाता है।

व्यक्तिगत दराज़ों की निजता का सम्मान कई बार रोचक द्वन्द्व उपजाता है। एक नियम यह है कि कोई भी दराज़ों में ताज़ा खाना न रखे। पर कई बार ऐसा हुआ है कि हमारी नाकों ने हमें साफ बताया है कि इस नियम का उल्लंघन किया जा रहा है। एक बार ऐसा तब हुआ जब दराज़ मालिक बाहर गया हुआ था।

क्या किया जाए? भारी आत्म-मंथन हुआ। क्या हम दराज़ खोलकर खाना निकाल लें? कई दिनों तक बहस जारी रही, जब तक कि हमारी नाकों और चूहों के डर ने मामला तय न कर दिया। दराज़ खोला गया और खाने का सामान हटाया गया।

विश्वास करने की यह व्यवस्था इस कदर आत्मसात हो चुकी है कि अब इसके बारे में कोई सोचता तक नहीं है। पर्स, बटुए, कीमती चीज़ें नियमित रूप से खुली छोड़ी जाती हैं। बिरले ही कोई उन्हें छूता है।

जब भी कोई नियम तोड़ता है, तुरन्त प्रतिक्रिया होती है। उल्लंघन करने वाले को पता चल जाता है कि ऐसे आचरण की हर ओर निन्दा होती है।

विश्वास और सम्मान की यह भावना उससे कहीं गहरे चली गई है जैसा हमने सोचा था, और हरेक इसे स्वीकारता है। कभी-कभार ऐसे बच्चे भी होते हैं जो चोरी के बाद परिवीक्षा में हों, या किशोर जो दो-एक कानून तोड़ चुके हों; पर वे भी स्कूल के सम्मान की सख्ती से रक्षा करते हैं। एक बार हमारे यहाँ एक सत्रह वर्षीय लड़का था जो वाहन चोरी के जुर्म में सज़ा पा चुका था। पता यह चला कि स्कूल में उससे अधिक भरोसेमन्द कोई दूसरा था ही नहीं।

परन्तु विश्वास करने की इस प्रणाली का हृदय है प्रमाणीकरण का विचार, जो सैकड़ों गतिविधियों के पीछे है।

स्कूल ऐसे औज़ारों और उपकरणों से अटा पड़ा है जिनके उपयोग के लिए विशेष प्रशिक्षण की दरकार पड़ती है। डार्क रूम में, दफ्तर में, कम्प्यूटर कक्ष में, रसोई में, कार्यशाला में, कला तथा हस्तशिल्प कक्षों में, हर जगह। स्कूल बैठक का इन सबके लिए एक ही सरल-सा नियम हैः कोई भी उपकरण का उपयोग कर सकता है बशर्ते कि उसने यह सीख लिया हो कि उपयोग कैसे करना है। एक बार जब उन्हें सम्बन्धित उपकरण के लिए 'प्रमाणित' कर दिया जाता है, फिर वे उसका उपयोग जब जी चाहे कर सकते हैं।

प्रमाणीकरण का काम विशेषज्ञ करते हैं और वे अन्य विशेषज्ञों को भी प्रमाणित करते हैं। प्रमाणित व्यक्तियों की सूची सबके देखने के लिए टाँग दी जाती है। यह प्रणाली सबसे खतरनाक औज़ारों पर भी लागू होती है। जितना अधिक जोखिम भरा वह उपकरण होता है उतनी ही कठोर प्रमाणीकरण की

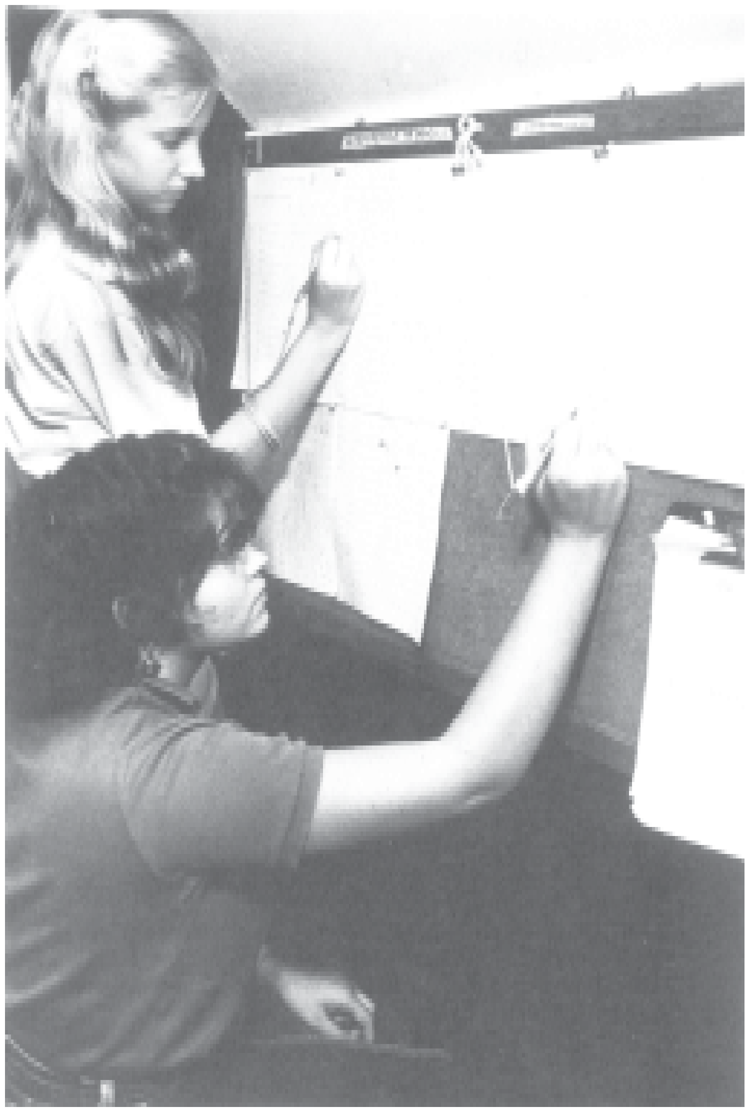

प्रक्रिया होती है। पर यह प्रक्रिया सबके लिए समान होती है, फिर चाहे व्यक्ति की उम्र कुछ भी क्यों न हो।

इसका मतलब यह होता है कि कुछ काफी छोटी उम्र के लोग कुछ बेहद जटिल उपकरणों का उपयोग करते दिखते हैं। जैसे डार्क रूम में अकेले काम करता ग्यारह साल का बच्चा। या कार्यशाला में कोई बारह साल का बच्चा। या रसोई में कोई नौ साल का बच्चा। इन छुटकों से अधिक सावधानी कोई दूसरा बरत ही नहीं सकता, जो यह सिद्ध करने को आमादा रहते हैं कि वे वयस्कों के खेलों में उनकी बराबरी कर सकते हैं। और क्योंकि सब कुछ प्रमाणीकरण के लिए खुला है, इसलिए किसी को चोरी-छुपे 'वर्जित फल' चखने का लालच भी नहीं रहता।

पर कभी-कभार हम भारी दुविधा में फँस जाते हैं।

जब हमें हमारा कम्प्यूटर मिला तो हमारी नज़रों में वह एक बेहद नाज़ुक स्थिति में था। कोई उसे आधी रात को उठा ले जाए और हम बेबस से ताकते रह जाएँ, यह कल्पना ही असहनीय थी। एकमात्र उपाय यह सूझ रहा था कि रात को उसे किसी अलमारी में बन्द रखा जाए। यानी स्कूल में एक ताला!

जो चर्चा हुई वह किसी भी रहस्यविद् के दिल को खुश कर देती। स्कूल रात में बन्द किया ही जाता है, है ना? स्कूल के दरवाज़ों पर लगे ताले स्कूल के *अन्दर* ताले नहीं हैं, वे तो बाहरी दुनिया के लिए जड़े जाते हैं जिसका हमसे कोई वास्ता ही नहीं है। कम्प्यूटर अलमारी का ताला भी दरअसल स्कूल में ताला नहीं है; वह तो बस ऐसा लगता भर है। वह तो दरअसल... एक अन्दरूनी ताला है जो बाहरी लोगों के विरुद्ध है।

हमने ताला लगवा दिया। जो भी पास से गुज़रता तिलमिला जाता। उसकी चाबी तक स्कूल में कम्प्यूटर के लिए प्रमाणित प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच थी।

कुछ महीनों बाद सबको यह असहनीय लगने लगा। भारी बहुमत से स्कूल बैठक ने अपनी कीमती धनराशि में से कुछेक सौ डॉलर एक सुरक्षा व्यवस्था के लिए आवंटित किए ताकि कम्प्यूटर को उसकी मेज़ पर सुरक्षित जमाया जा सके।

अलमारी पर लगा ताला भारी उल्लास के साथ हटा दिया गया।

बीते वर्षों में बहुत कम चोरियाँ, बहुत कम तोड़फोड़ और बहुत कम आन्तरिक अनादर हुआ है। सौ साल पुराना हमारा भवन जो दुरुपयोग से आसानी से नष्ट हो सकता था, आज उस वक्त से कहीं बेहतर लगता है जब स्कूल पहले-पहल खुला था।

और सार्वजनिक निष्ठा प्रणाली विश्वास और व्यक्तिगत आत्मसम्मान के उस वातावरण को कायम रखने में मदद करती है जो स्कूल में चहुँओर व्याप्त है।

* * *

25

खेलकूद परिदृश्य

सितम्बर का धूप से रोशन दिन है। स्कूल भवन लगभग सूना पड़ा है।

मैं सिलाई कक्ष के विशाल द्वार की खिड़कियों से बाहर देखता हूँ। सभी लोग लॉन में इकट्‌ठा हैं जहाँ पताका छीनने का बड़ा-सा खेल चल रहा है। चीख-पुकार और खिलखिलाहट के साथ बच्चे मैदान में आगे-पीछे भाग-दौड़ रहे हैं।

एक घण्टे बाद खेल समाप्त होता है। एक, दो और तीन की टोलियों में खिलाड़ी टहलते हुए भवन में लौटते हैं। वे भूखे, प्यासे और ऊर्जा से भरे हैं।

खेल की प्रमुख घटनाओं को जीवन्त वार्तालाप में फिर से जिया जाता है। लगता यह है कि कोई भी हारा नहीं है। यह ऐसा खेल लगता है जिसमें दोनों दल जीते हैं।

यह दृश्य वर्ष भर बार-बार खुद को दोहराता है। पतझड़ की शुरुआत से सर्दियों, बसन्त और गर्मियों के प्रारम्भ तक फुटबॉल, सॉकर, स्लेजिंग, आइस हॉकी, बास्केटबॉल तथा बेसबॉल मैदान में अपनी-अपनी बारी लेते हैं। जब खेल के उपकरण पूरे न हों, जैसे गोल पोस्ट, वहाँ कोई जुगाड़ बिठाकर काम चला लिया जाता है।

खेल का नाम चाहे जो भी हो, उसका बुनियादी नियम हमेशा समान रहता हैः जो कोई भी खेलना चाहे वह खेल में शामिल हो सकता है। उम्र, योग्यता या संख्या आड़े नहीं आती।

बेसबॉल टीम में पाँच या फिर पन्द्रह खिलाड़ी भी हो सकते हैं। छह साल के बच्चे सोलह वर्षीय किशोरों के साथ खेल सकते हैं। लड़के और लड़कियाँ दोनों को योग्य माना जाता है।

गौर से देखें, और आपको कुछ विलक्षण दृश्य नज़र आएँगे।

एक अनाड़ी आठ वर्षीय बच्चा बल्लेबाज़ी के लिए आता है। बेस पर लोग हैं। उसकी टोली के सदस्य होम प्लेट के चारों ओर बिखरे हुए हैं और उसका जोश बढ़ाने के लिए चीखते हैं। वह बल्ला घुमाता है। गेंद गेंदबाज़ और तीसरे बेस की दिशा में लुढ़कती है। वह दौड़ता है, उठाकर फेंकी गई गेंद से बचता हुआ सुरक्षित प्रथम बेस पर पहुँच जाता है। महा-उल्लास।

अगला बल्लेबाज़ टोली का सितारा है, एक भारी-भरकम अठारह वर्षीय किशोर। वह गेंद को भीड़ भरे बाहरी मैदान की दिशा में उड़ा देता है। गेंद एक बारह वर्षीय लड़के की ओर जा रही है। वह उसे लपकने को तैयार होकर इन्तज़ार करता है – और गेंद उसके हाथों से छूट जाती है। कोई एक शब्द तक नहीं कहता। दो रन बन चुके हैं।

खेल जारी रहता है, पारी दर पारी। बच्चे गेंद को उछालते हैं, उसे ज़ोर से मारते हैं, गलतियाँ करते हैं, बहुत बढ़िया पैंतरे दिखाते हैं। उनके हावभाव से आपको कोई फर्क समझ नहीं आ सकता। और स्कोर? केवल दो लोग ही उसका हिसाब रख रहे हैं। वह 10-1 जैसा कुछ है।

डेढ़ घण्टे बाद सबकी आम सहमति से खेल खत्म होता है। कोई उदासी में डूबा नहीं लगता। कोई तकरार नहीं होती।

तब एक भारी सत्य अचानक उद्घाटित होता हैः लोग *मस्ती कर रहे हैं*। वे खेल का लुत्फ उठा रहे हैं।

और लुत्फ वे सब उठाते हैं, लड़के और लड़कियाँ, बड़े और छोटे, किशोर और नन्हे, अच्छे और बुरे।

हवा में भारी उत्तेजना है, ज़ोरदार गतिविधि, जीवन है। साथ ही हमेशा, हमेशा हँसी और खिलखिलाहट।

बेशक, केवल बेसबॉल में नहीं। प्रतिस्पर्धा वाले सभी खेलों में। लक्ष्य होते हैं शारीरिक गतिविधि, बाहर रहना तथा मौज-मस्ती करना।

पतझड़ के एक दिन मिम्सी, जो स्कूल के संस्थापक स्टाफ सदस्यों में से एक है, को अचानक खयाल आया कि पिछले पन्द्रह वर्षों से टैकल फुटबॉल बिना रक्षात्मक उपकरणों के खेला जा रहा है। उसे भारी सदमा पहुँचा और वह परेशान हो गई। उसे महसूस हुआ कि यह भारी गैर-ज़िम्मेदाराना आचरण रहा है। हर साल अखबारों में हाई स्कूल फुटबॉल खेलों में बच्चों को आई भारी चोटों की खबरें छपती थीं। कुछ पब्लिक स्कूलों में तो यह खेल बन्द कर दिया गया था।

मिम्सी ने स्कूल बैठक के समक्ष एक प्रस्ताव रख स्कूल में टैकल फुटबॉल वर्जित करने की माँग की।

स्कूल के इतिहास में इस बैठक की उपस्थिति सर्वश्रेष्ठ रही। विवाद संजीदा, सावधानी से विचारा हुआ रहा। अधिकतर वे लोग ही बोले जो दरअसल फुटबॉल खेलते थे। क्रमशः खेल मैदान में जो कुछ घटता है उस पर हम सबका ध्यान केन्द्रित हुआ।

"सडबरी वैली में कॉन्टैक्ट खेलों में कभी कोई घायल नहीं हुआ है," एक भारी-भरकम किशोर ने कहा, "क्योंकि हम सावधानी बरतते हैं कि किसी को चोट न लगे। यह खेल का हिस्सा है। हम हमेशा सजग रहते हैं। चोट पहुँचाने का काम किया ही नहीं जाता।"

"टैकल फुटबॉल का खेल," दूसरे ने कहा, "स्टेट पार्क की सड़क पर चलने से कम खतरनाक है।"

बिना अपवाद, सभी छोटे बच्चे भी सहमत थे। उनमें से एक की भी कभी रगड़ाई नहीं हुई थी।

प्रस्ताव को दो बार पढ़ा गया, दो बार उस पर चर्चा हुई, जैसा दूसरे महत्वपूर्ण प्रस्तावों में भी किया जाता है। वह भारी बहुमत से हारा। मुझे तो इस बात पर भी पक्का भरोसा नहीं कि आखिरकार जब मतदान हुआ तो खुद मिम्सी तक ने उसके पक्ष में मत दिया था या नहीं।

अगले दिन मैंने बास्केटबॉल के खेल को ध्यान से देखा, जितने ध्यान से पहले कभी नहीं देखा होगा। छह फुटे और छुटके बौने मैदान में साथ-साथ खेल रहे थे। यह मैदान पहले पार्किंग स्थल था जो तारकोल से बास्केटबॉल

के खेल स्थल में बदल दिया गया था। बास्केटबॉल भी शारीरिक खेल है। यह खेल भी था, पर स्कूल के अपने ठेठ तरीके हैं।

बड़े बच्चे दूसरे बड़े बच्चों को छकिया रहे थे, पर छोटों को हाथ तक नहीं लगा रहे थे। और नन्हे एक-दूसरे के साथ धक्का-मुक्की कर रहे थे, और बड़ों को धकेलकर उनके बीच से निकलने की पूरी कोशिश कर रहे थे, मानो हाथी को मक्खियाँ। इन मक्खियों को किसी ने मसला नहीं। कभी नहीं।

सडबरी वैली में खेलना ही महत्व रखता है। और हरेक हमेशा जीतता है।

* * *

26
शिविर

बाहर फैला विशाल खुला स्थान हमेशा से कम से कम उतना महत्वपूर्ण तो रहा ही है जितना स्कूल का आन्तरिक स्थान। यूँ ही आ पहुँचा कोई मेहमान भी यह बात बच्चों के चेहरों, उनके शरीरों, उनकी चाल-ढाल और उनकी भौतिक आज़ादी में देख सकता है।

कई वर्ष पहले एक पतझड़ के दिन हम में से कुछ ने सोचा, "क्यों न अगला कदम उठाया जाए? न्यू हैम्पशायर के श्वेत पर्वतों में एक शिविर यात्रा करें तो कैसा रहे, जहाँ हम पूरा समय बाहर बिता सकें?" हमने बुलेटिन बोर्ड पर एक सूचना लगा दी। रुचि रखने वालों से हस्ताक्षर कर शामिल होने को कहा गया।

जल्दी ही तीस बच्चों की सूची तैयार थी। हमने कुछ बड़े तम्बू उधार लिए, स्टाफ की गाड़ियों का काफिला तैयार किया और यात्रा की व्यवस्था की। साथ ले जाने वाले सामान की सूचियाँ सबको बाँट दी गईं। समूह के खर्च में से प्रति व्यक्ति व्यय का अनुमान लगा लिया गया।

10 अक्तूबर को हम फ्रैंकोनिया पार्क के लिए निकल पड़े। सबके मन प्रफुल्लित थे। जब हम पहुँचे हमें शिविर स्थल खाली मिला। अक्तूबर में सप्ताह के मध्य में शिविर के लिए जाना खास लोकप्रिय जो नहीं है।

हमने अपने तम्बू लगाए और एक छोटी पहाड़ी के शिखर की ओर चढ़ने

लगे। दृश्य अद्‌भुत था। नीचे उतरकर हमने आग जलाई, खाना पकाया, भुतहा कहानियाँ सुनाईं और आखिरकार थककर प्रसन्न मन सो गए।

उस रात बर्फ गिरी। और बर्फ गिरी। और-और बर्फ गिरी। तूफान स्थानीय था जो पहाड़ों के कुछ ही स्थानों को प्रभावित कर रहा था। हमारा शिविर स्थल भी उनमें से एक था।

सुबह तीन बजे तक चारों ओर चार इंच बर्फ का कम्बल बिछ गया था। इस बीच एक तम्बू शिविरार्थियों पर ही गिर गया। भारी भगदड़ मची। सबको हटाकर दूसरे स्थान ले जाने और फिर से व्यवस्थित करने में हमें घण्टा भर लग गया। हम सब ठण्ड में अकड़ चुके थे।

उस सुबह शिविर स्थल के मुख्य भवन में एक अस्तव्यस्त समूह अलाव ताप रहा था। नाश्ता ठण्डा था, सब कुछ गीला और जमा हुआ था।

हमने जल्दी-जल्दी सामान समेटा और वापस घर का रुख किया। इस घटना के दस साल बाद ही हमने डरते-डरते पतझड़ के मौसम में एक और शिविर यात्रा की योजना बनाई। इस बार हमने माउंट मोनाड्नॉक जाने की योजना बनाई जो अधिक पास था और जहाँ से घर लौटना आसान था। यात्रा सिर्फ एक रात की रही।

इस अशुभ शुरुआत से क्या स्कूल के बाहर रहना पसन्द करने वाले विचलित नहीं हुए? कतई नहीं! पूरी बात मौसम की जो थी। उस बसन्त एक और शिविर यात्रा का आन्दोलन जल्दी शुरू हुआ, इस बार चार दिन लम्बी यात्रा के लिए। लगा मानो फ्रैंकोनिया की स्मृतियों पर तब तक गुलाबी रंगत चढ़ गई थी। "वह भारी साहसिक यात्रा थी," बच्चों ने शंकित स्टाफ से कहा।

सो हमने एक और यात्रा की योजना बनाई – जून के आखिर में, दक्षिण की ओर केप कॉड की। हमारा लक्ष्य था निकरसन स्टेट पार्क। वहाँ जून में कोई बर्फ नहीं पड़ती, कभी भी।

यात्रा बेहद सफल रही। हम झील में तैरे, जंगलों में घूमे, समुद्र तट पर गए। हमने रेत के टीलों को देखा, और हम प्रॉविंसटाउन घूमे।

स्कूल में एक नई परम्परा स्थापित हुई। प्रतिवर्ष जून में एक सप्ताह अब केप कॉड में गुज़रता है। जो भी आना चाहता है उसका स्वागत होता है बशर्ते

वह घर से दूर तम्बुओं में रहने को और खुद अपनी देखभाल करने को तैयार है। बरसात हो या चमचमाती धूप, हम ज़रूर जाते हैं क्योंकि बरसात पड़े तो भी कोई बुरा नहीं मानता। हमारी तैरने की पोशाकें ज़रा जल्दी गीली हो जाती हैं और धूप में जलने का खतरा भी नहीं रहता।

प्रारम्भ में ही एक कैम्पिंग और टूरिंग निगम की स्थापना कर दी गई थी ताकि शिविर व अन्य यात्राओं के बारे में सोचा जा सके। बहसबाज़ी तो बेशक होनी ही थी। खासकर शिविर यात्राओं के बारे में।

बहसबाज़ी केप कॉड की पहली यात्रा के बाद शुरू हुई। "आप इसे कैम्पिंग कहते हैं?" मार्ज ने आहत स्वर में पूछा। "यह तो किसी शानदार रिसॉर्ट होटल में रहने जैसा था। यह मियामी बीच भी हो सकता था। तैरना, घूमना-फिरना, गर्म पानी के फव्वारों में नहाना, कई तरह के गरमागरम पकवान खाना, बैठे रहना। इस सबमें 'कैम्पिंग' क्या है?"

पता चला कि शुरू से ही ज़्यादातर लोगों का मतलब वास्तव में 'कैम्पिंग' था ही नहीं। उनके दिमाग में एक बढ़िया-सी खुले में बिताई गई छुट्टी का विचार था।

शुद्धतावादी बेहद नाराज़ और अपमानित महसूस करने लगे। पर अगले साल पुनर्विचार कर उन्होंने फिर भी साथ चलने का फैसला ही किया। शायद इसमें मज़ा ही आए। इस बार भी यात्रा वैसी ही रही जैसी वह पहले होती थी।

यात्राएँ पहले जैसी ही रहीं और उनकी संख्या बढ़ती गई। जब हम फ्रैंकोनिया से उबरे तो मोनाड्नॉक की यात्रा का एक और संस्करण पतझड़ में भी आयोजित किया गया ताकि स्कूली वर्ष सही तरह से प्रारम्भ हो। और इसके कई वर्षों बाद शीतकाल में एक सप्ताह तक स्कीईंग करने के लिए वरमॉन्ट स्थित किलिंग्टन की यात्रा अस्तित्व में आई। खुली जगहों को पसन्द करने वाले बलिष्ठ लोगों के लिए छोटी यात्राएँ भी जुड़ीं। बेशक ये अनियमित थीं। पर वे जहाँ उनकी मर्ज़ी होती जाते। जब भी वे निकल जाने की व्यवस्था कर पाते।

मार्ज को नियमित यात्राओं से समझौता करने में अधिक समय नहीं लगा। आखिर नियमित यात्राओं में सभी लोग बाहर खुले में रहते थे, सो इसका कुछ

मूल्य तो था ही। लोगों का समय अच्छा बीतता था और वे अपनी बुनियादी ज़रूरतों की आपूर्ति स्वयं करना भी सीखते थे।

कुछ ही समय में वह भी इन यात्राओं की लय में बह गई। "हम छोटे बच्चों द्वारा स्कूल परिसर में तम्बुओं में रात गुज़ारने का प्रस्ताव क्यों न रखें? उन्हें काफी बुरा लगता है क्योंकि वे सप्ताह भर की यात्रा के लायक बड़े नहीं हुए हैं," उसने सुझाव दिया। यह विचार उत्प्रेरक था। सभी नन्हों ने सदल-बल प्रस्ताव स्वीकारा।

सो प्रति वर्ष जून के प्रारम्भ में स्कूल में इन छोटे बच्चों के लिए एक रात का कैम्प आउट आयोजित किया जाने लगा। जल्दी ही नन्हों को सडबरी वैली शैली की कैम्पिंग की आदत हो गई। और कुछ ही समय बाद वे इतने बड़े भी हो जाते कि दूसरों के साथ बाहर जा सकें।

और मार्ज को अब बुरा भी नहीं लगता है। वह समझने लगी है कि उसने उन नन्हों के पक्ष को मज़बूत किया है ताकि शायद वे बाद के वर्षों में वास्तविक अर्थों में बाहर खुले में समय गुज़ारने वाले बन सकें।

* * *

27

समितियाँ तथा क्लर्क

स्कूल के रोज़मर्रा के प्रशासन की बारीकियों को स्कूल बैठक उन लोगों को सौंप देती है जो 'क्लर्क' कहलाते हैं, और कभी-कभार किसी समिति को। जब पतझड़ में स्कूल खुलता है तब इनका चुनाव साल भर के लिए किया जाता है।

जो चीज़ हम कतई नहीं चाहते थे वह थी लगातार बढ़ती नौकरशाही जो अन्ततः हर चीज़ का दम घोंट देती है। सो हमने अपना काम-धन्धा ठेठ सडबरी वैली शैली में प्रारम्भ किया। जब भी रोज़मर्रा के काम उभरते जिन्हें करना ज़रूरी होता, स्कूल बैठक उन्हें परिभाषित करती, उनका वर्णन करती और तब उन्हें करने के लिए किसी को चुन लेती। कोई स्थाई व्यक्ति नहीं बल्कि हम में से कोई भी – विद्यार्थी या स्टाफ का सदस्य – जो साल भर के लिए अपनी पारी पूरी करता।

क्या फोन पर दिए गए सन्देशों की निगरानी ज़रूरी है? आने-जाने वाली डाक का निपटारा हो रहा है? दफ्तर में चीज़ों का प्रावधान है? फाइलें सही तरह से रखी जा रही हैं? हमने इस काम के लिए एक कार्यालय क्लर्क का पद रचा। स्कूल की भौतिक स्थितियाँ कायम रखनी हैं? हमारे पास भवन रखरखाव क्लर्क है जो भवनों की देखभाल करता है, और एक परिसर क्लर्क है जो मैदानों, परिसर आदि की देखभाल करता है।

बड़े कामों के लिए, जहाँ ढेरों हाथों और मतों की ज़रूरत हो, समितियाँ

हैंः एक जो स्कूल का लेखा-जोखा सम्हालती है, एक आन्तरिक डिज़ाइन के लिए और एक जनसम्पर्क के वास्ते। क्लर्कियाँ आती-जाती रहती हैं, जैसे-जैसे काम पुनर्परिभाषित होते हैं, जब उनका महत्व कम हो जाता है या जब नए काम उभरते हैं। मेरे लिए उस स्कूल बैठक में भागीदारी वास्तव में बेहद सन्तोषजनक होती है जिसमें कोई क्लर्की हटाई जाती है। नौकरशाही के सामने घुटने न टेकने के प्रति हमारी कटिबद्धता की यह वास्तविक पुष्टि है।

उदाहरण के लिए, स्कूल खोलने तथा बन्द करने वाला क्लर्क हुआ करता था ताकि यह सुनिश्चित हो कि सुबह स्कूल सही तरीके से खोला और हर शाम बन्द किया जाए। स्कूल की चाबियों की उपलब्धता भी इसी क्लर्क की ज़िम्मेदारी होती थी। कुछ साल गुज़रे। स्कूल खोलने व बन्द करने की चैकलिस्टें विकसित हुईं, साथ ही चाबियों की निगरानी की एक सरल-सी प्रणाली भी विकसित हुई; बिलकुल सरल, मूलतः सिर्फ एक सूची कि किसके पास कौन-सी चाबी है। इसके बाद खास काम बचा ही नहीं। सो यह क्लर्की गायब हुई और उसके बचे छुटपुट काम किसी दूसरे के काम के वर्णन में जोड़ दिए गए।

एक मेहमानों का क्लर्क हुआ करता था जो लगातार स्कूल देखने आने वालों से निपटता था। कई सालों तक यह एक बड़ा भारी काम था। हमें एक ऐसा तरीका तलाशना पड़ा कि हम आगन्तुकों के लिए यथा-सम्भव खुलापन तो बरतें, पर उनमें ही तल्लीन न हो जाएँ। जैसे-जैसे एक के बाद दूसरे क्लर्क इसकी व्यवस्था करते गए, काम आसान, बेहद आसान बनता गया। इससे सम्बन्धित कार्य जनसम्पर्क समिति को सौंप दिए गए और क्लर्की खत्म कर दी गई।

समय के साथ कुछ नए काम भी उभरे। कुछ वर्षों बाद हमें एहसास हुआ कि हमारे कई पूर्व विद्यार्थी थे जो सम्पर्क में रहना चाहते थे। उनमें से कई मिलने आते और हमें बेहद खुशी होती। आखिर हमारी चेतना में यह बात उतरी कि हमें स्कूल और पूर्व विद्यार्थियों में आपसी संवाद आसान बनाने के लिए कुछ करना चाहिए। स्कूल बैठक ने इस काम के लिए एक पूर्व-विद्यार्थी क्लर्क की नियुक्ति की।

दरअसल यह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि किसी सिद्धान्त को

उसकी अति तक कैसे पहुँचाया जा सकता है। हमें स्कूल बैठक की ओर से पूर्व विद्यार्थियों से निपटने के लिए एक औपचारिक अधिकारी नियुक्त करने में कम से कम पाँच वर्ष लग गए थे। इसके पहले हम इन मामलों से अनौपचारिक या अर्ध-औपचारिक तरीके से निपटते थे, जिसमें किसी भी व्यक्ति से बिना पद-शीर्षक के यह काम करने का अनुरोध किया जाता था। जब कई पूर्व विद्यार्थियों ने 'सडबरी वैली के मित्र' नामक एक संगठन बना डाला ताकि उनकी ओर से सम्पर्क किया जा सके, तो हम शंकालु दृष्टि से कुछ साल यह देखते रहे कि वे इसे कैसे आगे बढ़ाते हैं। आखिरकार कई सालों की जाँच और इन्तज़ार के बाद जाकर कहीं हमने एक आधिकारिक सम्पर्क व्यक्ति के पद की रचना की। पार्किन्सन का नियम हम पर लागू नहीं हुआ!

कुछ बिरले अवसर ऐसे भी आए जब हमें क्लर्की को दो भागों में बाँटना पड़ा। ऐसा करना हमें नापसन्द है, पर यदाकदा हमें क्लर्की को बाँटने या क्लर्क की चीर-फाड़ हो जाने के बीच चुनाव भी करना पड़ता है।

सबसे लम्बे अर्से तक हमारे पास एक नामांकन क्लर्क रही है जो किसी विद्यार्थी के नामांकन सम्बन्धी सभी काम करती थी। यह क्लर्क साक्षात्कार, कागज़ी कार्रवाई और ट्यूशन फीस लेने के लिए ज़िम्मेदार होती थी। हमारा सोचना था कि यह सब एक ही प्रक्रिया है।

पर वास्तव में ऐसा था नहीं। क्लर्क को यह जल्दी ही पता चल गया। प्रवेश के लिए साक्षात्कारकर्ता के रूप में वह नए लोगों के लिए स्कूल की ओर से प्रथम सम्पर्ककर्ता थी। आम तौर पर नए विद्यार्थी और उनके अभिभावक उसे एक मित्र मान उससे अपनी समस्याओं, चिन्ताओं, और सारे सवालों की चर्चा करते जाते।

पर जब बीच में पैसा आ जाता है तो सब कुछ बदल जाता है।

किसी मित्रता को सबसे जल्दी और पूरी तरह खण्डित करने का काम उतनी अच्छी तरह कोई भी नहीं करता जितनी अच्छी तरह पैसों को लेकर कोई बहस कर सकती है। किसी एक दिन दो व्यक्ति जीवन में दो साथियों की तरह हाथ थामे चलते हैं। तब किसी बिल पर झगड़ा होता है और अगले दिन वे जानी दुश्मन बन जाते हैं।

ट्यूशन फीस के भुगतान की ज़िम्मेदारी उठाने वाली नामांकन क्लर्क एक खुला लक्ष्य बन गई। कल दोस्ताना आचरण करने वाले विद्यार्थी और पालक आज आसानी से जानी दुश्मन बन सकते थे। इसमें कुछ अधिक करने की ज़रूरत नहीं थी। अक्सर सिर्फ यह याद भर दिलाना पड़ता था कि पैसा चुकाया जाना है। "पैसा? आप पैसे के लिए मेरे पीछे पड़ी हैं? आप कितनी घटिया हैं! हमने सोचा था कि आप भली हैं, स्थितियाँ समझती हैं। अब समझ आया।"

अठारह साल बीत गए और इस्पात की स्नायुओं वाली एक क्लर्क टूटने के कगार पर पहुँच गई, पर अन्ततः तब हमें कुछ सूझ गया। हमने नामांकन क्लर्क को हटाया और एक प्रवेश क्लर्क तथा एक रजिस्ट्रार की रचना की। अब प्रवेश क्लर्क स्थाई रूप से भला व्यक्ति बना रह सकता है। और रजिस्ट्रार? वह एस्पिरिन की गोलियों और समय पूर्व सेवानिवृत्ति के बीच चुनाव कर सकता है...

फिर सफाई क्लर्क की एक गाथा भी थी। पर उसके लिए एक पूरा अध्याय ज़रूरी होगा।

* * *

28
साफ-सफाई

बीते वर्षों में किसी भी समस्या ने स्कूल का इतना ध्यान नहीं खींचा जितना कि सफाई ने।

प्रारम्भ से ही हमें यह उचित लगा था कि अपनी साफ-सफाई के लिए हम स्वयं ही ज़िम्मेदार हों। यह मसला पसन्द का था। स्कूल हमारा 'नीड़' है, और अगर हम उसे गन्दा करते हैं तो उसे पुनः व्यवस्थित भी हमें ही करना चाहिए।

प्रारम्भ के महीनों में जो लोग स्कूल में थे वे स्टाफ के सदस्य थे जो स्कूल को तैयार कर रहे थे। इसका अर्थ यह था कि अन्य दायित्वों के साथ स्टाफ के सदस्य ही नियमित सफाई भी करते थे।

जब स्कूल पहले-पहल खुला तो हम विद्यार्थियों से यह उम्मीद नहीं रख सकते थे कि वे फौरन चीज़ों की लय पकड़ लेंगे। सब लोग व्यवस्थित हों और सडबरी वैली के विचारों को समझें, इसके लिए समय की ज़रूरत थी। इसका अर्थ यह था कि स्टाफ के सदस्य ही नियमित साफ-सफाई करते रहें।

मेरा मतलब 'नियमित' है। हर शाम स्कूल बन्द होने के बाद हम अपने झाड़ू और कचरा पात्र, पोंछे और बालटियाँ उठाते और स्कूल की एक कोने से दूसरे कोने तक सफाई करते, और परिसर में बिखरा कचरा बीनते। यह निरीह-सी नज़र आने वाली गतिविधि, जिस पर हमें गर्व था, हमें इस विषय पर पहले बड़े विवाद की ओर ले गई।

प्रारम्भिक 'विद्युत छड़' दिनों के कई अभिभावक क्षेत्र के प्रतिष्ठित कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से जुड़े विद्वान थे। उन्हें अपने पेशे पर गर्व था। अध्यापन का कार्य उनकी दृष्टि में महान था।

पोंछा लगाने से तो कहीं ज़्यादा महान।

"आप खुद को अपने विद्यार्थियों की नज़रों में नीचे गिरा रहे हैं। स्वयं सफाई कर आप बच्चों की नज़र में बौद्धिक गतिविधि का मूल्य घटा रहे हैं," एक ने टिप्पणी की।

"आप बच्चों के लिए खराब आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं," दूसरे ने कहा। "उन्हें आपके उदाहरण से प्रेरणा लेनी चाहिए। हम नहीं चाहते कि बड़े होकर हमारे बच्चे द्वारपाल बनें।"

"हैरानी की बात नहीं कि आप लोग हमारे बच्चों को पढ़ाने पर इतना कम समय लगाते हैं," उन अन्य लोगों ने कहा जो विद्यार्थियों की पहल पर आधारित सीखने के हमारे दर्शन से उकता रहे थे। "आप सफाई करने में बहुत ज़्यादा समय लगाते हैं।"

हम सोचते रहे कि सफाई के बारे में उनके क्या सुझाव हैं। ज़ाहिर था कि इस काम के लिए माता-पिता की सेवाएँ देने का प्रस्ताव तो वे रखने नहीं वाले थे... और वे बखूबी जानते थे कि मानदेय देकर किसी सफाई करने वाले को रखने के लिए हमारे पास पैसे नहीं थे।

उनके दिमाग में क्या चल रहा है उसे जानने में ज़्यादा समय नहीं लगा। हमारे कई अभिभावक साठ के दशक की राजनीति में सक्रिय थे। उनके महान मुद्दों में एक था वंचित अल्पसंख्यकों की स्थिति सुधारना। इस अभियान में उन्हें जो अनुभव हुए थे उसके आधार पर उन्होंने हमारी समस्या का समाधान प्रस्तावित किया।

उनके नेताओं में से एक, एक दिन स्कूल बैठक में उत्तेजित और संकल्पित-सी आईं। "सफाई समस्या का समाधान मेरे पास है," वे बोलीं, "ऐसा समाधान जो सबके लिए फायदेमन्द होगा। स्टाफ के सदस्यों को किराए के मज़दूर बनने से बचना चाहिए।" "हमारे यहाँ गरीब अल्पसंख्यक विद्यार्थी नहीं हैं," वे बोलती गईं। "हम एक ही तीर से दो निशाने साध सकेंगे। आप शहर के बीचों-बीच

बस्ती में रहने वाले बच्चों को पूरी ट्यूशन का वज़ीफा दें, और बदले में वे सफाई का काम करें।"

बैठक में भारी हंगामा हुआ।

स्टाफ के सदस्य पहले से भी अधिक दृढ़ता के साथ सफाई का काम करते रहे।

विरोध करने वाले अभिभावक जल्दी ही चिढ़कर स्कूल छोड़ गए।

यह हमारी बहसों में पहली बहस थी। कुछ महीनों बाद स्टाफ को लगा कि इस काम में समूचे स्कूल को भागीदारी करनी चाहिए। स्टाफ द्वारा आदर्श प्रस्तुत करने के काल के बाद समुदाय की भागीदारी का युग आना चाहिए जिसमें विद्यार्थी और स्टाफ के सदस्य समान रूप से जुड़ें।

हमने एक स्वैच्छिक प्रणाली स्थापित करने की कोशिश की। गतिविधि का समन्वय करने और आवश्यक सामग्री की खरीदारी के लिए एक सफाई क्लर्क नियुक्त किया गया। हमारा भवन काफी बड़ा है और उसकी देखभाल के लिए अनेक प्रकार की सफाई गतिविधियों का समन्वय करना पड़ता है।

कुछ वर्षों तक क्लर्क बड़े साहस के साथ जूझता रहा। कुछ लोगों ने आगे बढ़कर स्वैच्छिक योगदान की पहल की, सौंपे गए कामों से जूझे और तब क्रमशः दूर होते गए। सफाई का काम दिन में एक बार की बजाय सप्ताह में एक बार किया जाने लगा।

जल्दी ही स्टाफ और विद्यार्थियों में से मुठ्ठी भर महारथी ही बचे रह गए जो हर सप्ताह पूरा काम करते थे। "जो कूड़ा-कचरा करते हैं उन्हें कूड़ा-कचरा करने दो, और जो सफाई करते हैं उन्हें साफ करने दो," जैक ने कहा था। उसके विचार मानो पूरे प्रतिशोध के साथ हावी होते जा रहे थे।

अतः स्कूल बैठक में एक नई बहस शुरू हुई। जब सारे उपाय असफल हो जाएँ तो लोकतंत्र आवश्यक सेवाओं की पूर्ति के लिए क्या करते हैं? वे एक मसौदा लागू करते हैं। सडबरी वैली ने तर्क और बहस की और आखिरकार हताश होकर हमने एक अनिवार्य सफाई व्यवस्था स्थापित की। सभी को, आयु के बन्धन के बिना, एक सत्र तक सफाई का काम करना ही होगा।

सफाई क्लर्क का काम अब दोगुना मुश्किल हो गयाः एक तो उसे काम की व्यवस्था करनी पड़ती; दूसरा, उसे अनिवार्य रूप से चयनित श्रमिकों से सन्तोषजनक काम निकलवाना पड़ता। ज़बरदस्ती बेगार करने वाले आखिर कामचोरी के लिए प्रसिद्ध भी तो हैं। हमारे श्रमिक भी अपवाद नहीं थे।

कुछ साल गुज़रे। कुछ क्लर्कों की ऊर्जा चुक गई। स्कूल गन्दा नज़र आने लगा।

सफाई की समस्या पुनः ड्रॉइंगबोर्ड पर थी। इस समय तक हैरी ने, जो अपने शुरुआती सालों में भयंकर आदर्शवादी था, ज़बरदस्ती सफाई के नियम को हटाने की पैरवी शुरू कर दी थी।

“हम चाहते हैं कि काम ईमानदारी से हो,” उसने तर्क किया, “तो फिर हमें उसका सम्मानजनक मेहनताना भी देना चाहिए। हम स्कूल में ही सफाईकर्मियों को जुटाने का प्रबन्ध करें। कई विद्यार्थी होंगे जिन्हें अतिरिक्त पैसों की दरकार होगी।”

कई लोगों को यह विचार सही नहीं लगा। एक समुदाय को भला उस काम के लिए धन क्यों खर्च करना चाहिए जो वैसे भी सबको स्वेच्छा से करना ही चाहिए? परन्तु और सारे उपाय असफल हो चुके थे। हैरी का विचार स्कूल बैठक ने स्वीकार किया और उसे सफाई क्लर्क चुना गया ताकि एक छोटे पर पर्याप्त बजट की मदद से इस विचार को अमल में लाया जा सके।

वह पूरे उत्साह से काम में जुटा। शीघ्र ही हैरी की सफाई सेवा के पास एक ‘दफ्तर’ था (एक कमरे के कोने में एक मेज़) और विस्तृत लेखा-जोखा प्रणाली थी। वह प्रत्येक व्यक्ति को औपचारिक पर्ची देता जिसमें पूरा किया गया काम, अनुमोदन व पुष्टि दर्ज होती थी। इसके अलावा वह कार्यों की पेचीदा समय सारणी रखता था और उसने एक प्रशिक्षण सेवा भी शुरू कर दी।

प्रशिक्षण सेवा हैरी के लिए गर्व और आनन्द का स्रोत थी। वह स्वयं एक से अधिक बार अपना खर्चा निकालने के लिए पेशेवर सफाई दलों के साथ काम कर चुका था और उसने धन्धे के तमाम गुर सीख लिए थे। उसके प्रत्येक नए ‘कर्मी’ को झाड़ू-पोंछे का काम पाने के पूर्व सावधानीपूर्वक किए गए निरीक्षण के तहत विभिन्न प्रशिक्षण सत्र पूरे करने पड़ते थे।

यह एक बढ़िया प्रयोग था। परेशानी यह थी कि वह कारगर नहीं हुआ।

केवल बेगार का काम करने वाले ही कामचोरी नहीं करते। मेहनताना पाने वाले भी अपना शत-प्रतिशत नहीं देते जब उन्हें रोज़ एक-सा उबाऊ काम करना पड़े, जिसे करने के लिए कोई उत्साह उनके मन में न हो...

स्कूल धीरे-धीरे फिर से गन्दा नज़र आने लगा। हम वापस ड्रॉइंगबोर्ड पर लौटे।

अन्ततः सभी को इस बात पर शर्मिन्दगी का एहसास हुआ कि स्थिति इस हद तक आ गई थी। स्कूल तो आखिर सबका ही था, और हम सबको लगा कि उसे साफ रखने में सबको योगदान करना ही चाहिए।

तमाम उतार-चढ़ाव आते रहे हैं जिनके साथ स्कूल बैठकों में घण्टों लम्बी बहसें और आत्म-मन्थन भी होता रहा है। इसके बाद लोग नए उत्साह और संकल्प के साथ आत्मसम्मान कायम रखने के निश्चय तक पहुँचते हैं। अब तक स्वैच्छिक व्यवस्था की परम्परा आत्मसात की जा चुकी है। बीच-बीच में भारी सफाई के लिए हम सप्ताह के अन्त में सफाई अभियान आयोजित करते हैं, जिसमें अभिभावक भी आमंत्रित किए जाते हैं। उनमें से कई नियमित रूप से जुड़ते हैं। आजकल तो अकादमिक लोग भी आते हैं। समय बदलता जो है।

क्लर्की भी बदलती है। स्कूल बैठक ने सफाई क्लर्क का पद हटा दिया। वह भरे जाने के लिए खास लोकप्रिय पद था भी नहीं।

स्वैच्छिक सफाई करने वालों का प्रबन्ध करने का काम सौन्दर्य व स्कूल उपयोग समिति को दे दिया गया। यह शीर्षक अधिक उचित व सुरुचिपूर्ण लगता है!

* * *

29

चमत्कारिक बजट

सफाई का काम ही ऐसा अकेला काम नहीं था जिसके लिए हमारे पास धन नहीं था। खाली खज़ाना प्रारम्भ से ही सडबरी वैली की खासियत रही है।

जब पहले-पहल 1996 में हमने अपने विचारों को अमलीजामा पहनाना शुरू किया तो हमने शिक्षा के क्षेत्र की जानकारी रखने वालों से पूछा था, "एक स्कूल प्रारम्भ करने के लिए हमें तकरीबन कितनी राशि की ज़रूरत होगी?" "कम से कम 2,50,000 डॉलर की," जवाब मिला था। यही न्यूनतम जवाब था जो हमें मिला था। पर जहाँ तक हमारा सवाल था, यह राशि 25,00,00,000 डॉलर भी हो सकती थी।

स्कूल के संस्थापकों के पास अपनी व्यक्तिगत साख को पूरा खींचने के बाद भी सब कुछ के लिए कुल मिलाकर 40,000 डॉलर की राशि थी। और हम संकल्पित थे कि इसी राशि से काम चलाएँगे।

साल भर की तलाश के बाद हमें दस एकड़ के परिसर में भवनों के साथ शताब्दी भर पुरानी नैथेनियल बाओडिच एस्टेट का पता चला। इसकी कीमत 80,000 डॉलर थी जिसमें से 20,000 डॉलर तत्काल और शेष ऋण के रूप में चुकाए जाने थे। इससे हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता पूरी हुई और उपलब्ध राशि में से आधी निपट गई। शेष राशि मुख्य भवन की मरम्मत कर उसे भवन निर्माण के नियमों के अनुरूप बनाने, मेज़-कुर्सियाँ खरीदने, अन्य सामग्रियों

की खरीद और स्कूल के प्रचार-प्रसार में खर्च हुई। स्कूल खुलने तक हम पूरी तरह कंगाल हो चुके थे।

आपको इस बात पर हैरानी हो सकती है कि हमें अपना परिसर इतनी कम कीमत पर कैसे मिल गया। हम भी खूब हैरान थे, पर हमारी सारी जाँच-पड़ताल में कोई पेंच सामने नहीं आया।

कब्ज़ा लेने के कुछ महीनों बाद हमें कारण पता चला। हमें यह परिसर एक तालाब और मिट्टी से बने चक्की बाँध समेत मिला था – और हाल ही में बाँध को इंजीनियर कोर ने कण्डम घोषित कर दिया था। अनुबन्ध के कागज़ातों के अनुसार मालिक होने के नाते हमें बाँध की मरम्मत करवानी थी। पूर्व मालिकों ने इसी से बचने के लिए सम्पत्ति बेच डाली थी।

मरम्मत के खर्च का सबसे अच्छा अनुमान जो हमें मिल पाया वह 50,000 डॉलर का था। हमारा उद्यम तब तक सर्वनाश की ओर जाता नज़र आ रहा था जब तक कि हमारे मित्र मैल स्टॉकर, जो उस समय फ्रेमिंग्हैम के सबसे प्रतिष्ठित ठेकेदारों में से थे, ने यह न कहा, "मैं अपने मज़दूर लेकर आऊँगा और हम यह काम चन्द हज़ार डॉलरों में कर डालेंगे।" मैल अपने वादे के पक्के निकले। चार हज़ार डॉलरों में काम बन गया। हम उनके आभारी थे – और ऋणी भी।

कहने की ज़रूरत नहीं है कि ऐसी शुरुआत ने हमें कम खर्च करने और बजट सीमा में रहने की आवश्यकता के प्रति और सचेत बनाया। कोई भी खर्च, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, हमारी पैनी समीक्षा से बचा न रहता था। हमने जल्दी ही सीख लिया कि दरअसल कितनी कम चीज़ों से काम चलाया जा सकता है, अच्छे सौदे कैसे किए जा सकते हैं, इस्तेमाल किए गए उपकरण कैसे पाए जा सकते हैं, कैसे मुफ्त में चीज़ें प्राप्त की जा सकती हैं। और इस सबसे भी अधिक हमने यह सीखा कि किसी चीज़ के बिना कैसे काम चलाया जा सकता है और उसकी एवज़ में कोई अन्य वस्तु कैसे इस्तेमाल की जा सकती है। सडबरी वैली में आवश्यकता अनेकानेक आविष्कारों की जननी रही है।

यह स्थिति हमारी विचारधारा से और भी जटिल हो गई। पहली बात तो यही थी कि हालाँकि (या शायद क्योंकि) हम में से कई स्कूल प्रारम्भ करने

के पहले सफल अनुदान व्यवस्था करने वाले रह चुके थे, हम अपने ही बलबूते स्कूल चलाने पर दृढ़ थेः हम किसी भी तरह का सरकारी या संस्थागत वित्तीय अनुदान नहीं लेना चाहते थे। हम स्वेच्छा से दिए गए उपहार लेने को तैयार थे, परन्तु हमारा लक्ष्य यह था कि ट्यूशन की राशि से ही काम चलाएँ।

सिर्फ इतना ही नहीं, हम दुनिया को यह भी दिखाना चाहते थे कि हम एक महँगा, आर्थिक रूप से सम्पन्न वर्गों के लिए विशिष्ट प्राइवेट स्कूल बने बिना भी सफल हो सकते हैं। इसका अर्थ था कि सिद्धान्ततः हम शुल्क यथासम्भव कम रखेंगे। वाजिब शुल्क तय करने के लिए हमने पब्लिक स्कूलों के प्रति विद्यार्थी व्यय को जाँचा और तय किया कि हम उतने ही या उससे कम स्तर पर रहेंगे। इससे बच्चों को सडबरी वैली में भेजने का खर्च स्थानीय पब्लिक स्कूलों में भेजने से अधिक नहीं आएगा। हमारा सोचना था कि अगर हम इसमें सफल होते हैं तो पब्लिक स्कूलों को भी नज़र आने लगेगा कि जो हम कर रहे हैं वह उनकी पहुँच के परे नहीं है।

सो हमने अनुदान के बगैर व थोड़ी-सी पूँजी और कृत्रिम रूप से कम आय के साथ शुरुआत की।

प्रति वर्ष स्कूल बैठक बसन्त के प्रारम्भ में ही वार्षिक बजट पर काम शुरू कर देती। यह प्रक्रिया सरल और सम्पूर्ण थी। वित्तीय भाषा में इसे 'शून्य आधारित बजट' कहते हैं। प्रत्येक क्लर्क, समिति तथा निगम सावधानीपूर्वक अपनी तमाम गतिविधियों को सिरे से देखकर यह तय करते कि आगामी वर्ष में वे क्या करना चाहते हैं। तब वे यह अनुमान लगाते कि व्यय कितना आएगा और स्कूल बैठक में अपने प्रस्ताव प्रस्तुत करते।

इसके बाद कई बजट सत्रों में प्रस्तावों की समीक्षा की जाती। बिरले ही बैठक में बजट वृद्धि के अनुरोध स्वीकारे जाते। चन्द वर्षों के अभ्यास के बाद यह भी बिरले ही होता कि प्रस्तावित राशि घटाई जाती।

इस समूची प्रक्रिया में तकरीबन छह सप्ताह लगते हैं और पिछले कुछ समय से वह बिना अड़चनों के पूरी कर ली जाती है। इसके नतीजे कौतुकपूर्ण हैं।

उदाहरण के लिए, 1969-1984 के पन्द्रह वर्षों के दौरान संयुक्त राज्य के जीवन-निर्वाह व्यय सूचकांक में लगभग तिगुनी वृद्धि हुई। देश भर के स्कूलों

का औसत व्यय लगभग चौगुना हो गया।

इसी अवधि में सडबरी वैली में कार्यात्मक बजट दुगने से भी कम बढ़ा और ट्यूशन शुल्क भी। जैसे-जैसे समय गुज़रता गया हमारी ट्यूशन दर पब्लिक स्कूलों के प्रति विद्यार्थी व्यय से और भी कम होती गई। और प्राइवेट स्कूलों की तुलना में तो यह औसत शुल्क औसतन एक तिहाई ही रहा।

स्कूल बैठक सभी व्यय अनुरोधों पर कड़ी नज़र गढ़ाए रहती है। एक उदाहरण यह स्पष्ट करेगा कि व्यावहारिक रूप से इसका क्या मतलब होता है।

स्कूल भवन पत्थरों से बना विशाल भवन है जिसे तेल जलाकर गरम किए गए पानी की व्यवस्था द्वारा गरम रखा जाता है। इसलिए भवन को गरम रखने के खर्च को कम करना हमेशा से उच्च प्राथमिकता रही है।

1969-1984 की अवधि बहुत कुछ स्पष्ट करती है। तेल निर्यातक देशों के संगठन ओपेक (O.P.E.C.) पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबन्धों तथा ऊर्जा संकटों के कारण तेल की कीमत इस अवधि में छह गुना बढ़ी। हमारे लिए इसका अर्थ था कि भवन को गरम रखने के व्यय को कम करने के विविध उपायों की अथक तलाश।

हमने थर्मोस्टेट को 70 डिग्री से 65 डिग्री पर कर दिया जैसा शेष सभी को भी करना था। तब हमने उसे 63 डिग्री किया, जब हमने पाया कि तापमान के इस स्तर पर सब आराम से रह सकते हैं। (आखिरकार हम में से ज़्यादातर मज़बूत न्यू इंग्लैंडर जो हैं।)

हमने गर्मियों की छुट्टियाँ कम कीं और सर्दियों में क्रिसमस-नव वर्ष की छुट्टियाँ दो सप्ताह तथा फरवरी में एक सप्ताह की कर दीं।

हमने स्वचालित थर्मोस्टेट खरीदे जो रात को तथा सप्ताहान्त में तापमान को स्वतः ही कम कर देते।

हमने भवन को तापमान रोधी बनाया। फिर और भी ज़्यादा तापमान रोधी बनाया।

हमने ऊर्जा की बचत करने वाले श्रेष्ठ तेल बर्नर खरीदे। और समूची तापमान नियंत्रण व्यवस्था को हमेशा कार्यकुशल बनाए रखा।

इन प्रयासों के फलस्वरूप चर्चित पन्द्रह वर्षों की अवधि में हमारा तेल पर आने वाला व्यय दुगने से कुछ ज़्यादा भर हुआ।

यही कहानी व्यय के बाकी क्षेत्रों में नियमित तौर पर दोहराई जाती रही।

ऐसा नहीं है कि हम कभी खर्च करते ही नहीं हैं। ज़रूरत भर का खर्च हम हमेशा करते हैं और पैसे बचाने के लिए जितना खर्च करना पड़ता है वह हम ज़रूर करते हैं।

जब हमने स्कूल शुरू किया था, लोगों ने हमसे कहा था, "सम्भव है आप अनुशासन व कार्यक्रम की दृष्टि से एक लोकतांत्रिक स्कूल चलाने में सफल हो जाएँ पर वित्तीय अर्थों में कभी सफल नहीं हो सकते। अगर आपने पैसों के मसलों पर भी सबको एक-एक वोट दे डाला तो कुछ ही समय में आपका दिवाला निकल जाएगा।"

वे कितना गलत कह रहे थे। बूढ़े और बच्चे, सभी, हर वर्ष तथा आने वाले वर्षों में स्कूल को सफल बनाने तथा वित्तीय रूप से स्थिर रखने के प्रति समान रूप से संकल्पित रहे हैं। मुझे कोई भी दूसरा मसला नहीं सूझता जिस पर स्कूल में इतनी सहमति हो।

प्रत्येक परम्परा के पास चमत्कारिक भलाई की अपनी किंवदन्तियाँ होती हैं। धर्म, प्राचीन इतिहास, बच्चों की परीकथाएँ, सभी कहती हैं कि किस तरह अचानक जादू से दीयों, गुफाओं, पत्थरों व तमाम तरह के असम्भव स्रोतों से पैदा हुए साधनों से ज़रूरतों की पूर्ति हुई।

सडबरी वैली में हमारी भी एक परम्परा है। हर साल एक चमत्कारिक बजट अवतरित होता है जिसके मार्फत हमारी सारी आवश्यकताएँ हमारे पास उपलब्ध साधनों से पूरी हो जाती हैं।

परन्तु सबसे बड़ा चमत्कार रहा है हमारा स्टाफ।

* * *

30

स्टाफ

स्कूल के पहले साल बारह लोगों ने पूर्णकालिक रूप से अवैतनिक काम किया। एक या दो नहीं, पूरे बारह लोगों ने।

हम में से अधिकांश उस वर्ष से पहले एक-दूसरे को नहीं जानते थे। हम किसी राजनैतिक आन्दोलन में साथी नहीं थे, न किसी सामाजिक समुदाय में साथ-साथ रहे थे। स्कूल के शैक्षिक आदर्शों के प्रति हमारे समर्पण ने ही हमें इकट्ठा किया था।

स्कूल के सबसे प्रारम्भिक संस्थापकों ने समुदाय में सडबरी वैली के विचार की घोषणा 1967 में की थी। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सौ से अधिक लोग इस घोषणा से प्रभावित हो स्कूल में काम करने के विचार को परखने के लिए प्रस्तुत हुए।

इनमें से दर्जन भर साल भर टिके रहे। हमारे मन में प्रारम्भ से ही कोई शंका नहीं थी कि वेतन के लिए कोई धन उपलब्ध नहीं होगा।

प्रथम वर्ष में शिक्षकों के लिए ऐसे प्रतिमान स्थापित हुए जो अब तक बने रहे हैं।

पहला था समूह का नाम 'स्टाफ'। इस पर हमने विस्तार से चर्चा की थी। स्कूलों में शिक्षक, प्रशासक, रखरखाव कर्मचारी, सचिव, सफाईकर्मी,

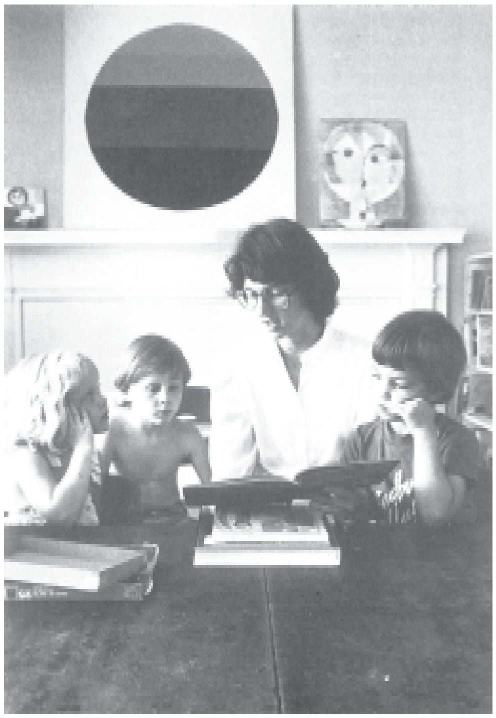

आदि-इत्यादि होते हैं। शिक्षा की दुनिया में तमाम शीर्षक और ऊँचे-नीचे पद होते हैं।

हम मानक संगठनात्मक तालिका को नकारने को लेकर पूर्णतः एकमत थे। जहाँ तक हमारा मानना था, हमारे सभी कामों का वर्णन एक ही तरह से किया जा सकता थाः "आवश्यकता हैः ऐसे लोगों की जो सडबरी वैली स्कूल की अवधारणा के प्रति कटिबद्ध हों और इस अवधारणा को अमलीजामा पहनाने के लिए जो भी करने की ज़रूरत हो वह करने को तैयार हों।" बस यही सब कुछ कह डालता था। हम स्कूल का 'स्टाफ' थे, हम सभी। हमारे बुनियादी काम में कोई अन्तर नहीं था।

कोई घड़ियाँ नहीं थीं जिनके अनुसार हमारे आने-जाने का समय दर्ज किया जाता। हम जल्दी आते थे और स्कूल बन्द होने तक रहते और तब जो कुछ करना ज़रूरी होता उसे खत्म करते। प्रारम्भ में हर शाम स्टाफ की बैठक होती जिसमें दिन की समस्याओं और उन पर हमारी प्रतिक्रियाओं पर चर्चा होती। बाद में, हम तब मिलते जब ज़रूरत होती, सप्ताह में एक या दो बार और फिर माह में एक या दो बार।

हम अपने विद्यार्थियों के लिए आदर्श प्रस्तुत करने के लिए सफाई करते, जो बाद में इस काम में शामिल होने वाले थे। हम ही खरीद करने वाले, बढ़ई, कार्यकारी सचिव, ज़मीनी कार्यकर्ता, व्याख्याता, पढ़ाने वाले थे। कुछ भी और सब कुछ।

हमने विद्यार्थियों को बिना उनके माँगे न 'देना' सीखा। हमने पीछे रहना सीखा, प्रत्येक विद्यार्थी के आन्तरिक विकास में हस्तक्षेप न करना सीखा। फिर चाहे उसकी आयु या विकास का स्तर कुछ भी क्यों न हो। यही सबसे कठिन पाठ था जिसमें सर्वाधिक आत्मानुशासन की ज़रूरत पड़ती थी, और अब भी नए सदस्यों को पड़ती है।

स्कूल के संस्थापकों में से एक, हान्ना ग्रीनबर्ग ने इस बात का इस प्रकार वर्णन किया:

कुछ न करने की कला

"आप कहाँ काम करती हैं?"
"सडबरी वैली स्कूल में।"
"आप क्या करती हैं?"
"कुछ नहीं।"

सडबरी वैली में कुछ नहीं करने के लिए काफी ऊर्जा और अनुशासन और कई वर्षों के अनुभव की आवश्यकता पड़ती है। मैं हर साल इसमें बेहतर होती जाती हूँ, और मुझे स्वयं को और दूसरों को हमारे भीतर अपरिहार्य रूप से उभरने वाले आन्तरिक द्वन्द्व से जूझते देख मज़ा आता है। यह संघर्ष लोगों के लिए कुछ करने की, अपने ज्ञान को बाँटने की, अनुभव से अर्जित अपनी समझ को दे डालने की भावना, तथा इस एहसास के बीच होता है कि बच्चों को स्वयं अपने बल पर, अपनी ही गति से सीखना होता है। उनके द्वारा हमारे उपयोग को उनकी इच्छाएँ तय करती हैं, न कि हमारी इच्छाएँ। हमें उस वक्त उनके लिए उपलब्ध होना होता है जब वे हमसे कहते हैं, तब नहीं जब कि हमें लगे कि हमें उपलब्ध होना चाहिए।

पढ़ाना, प्रेरणा देना और सलाह देना, ये सभी संस्कृतियों व स्थानों के वयस्कों की नैसर्गिक गतिविधियाँ हैं जो बच्चों के इर्द-गिर्द की जाती हैं। इन गतिविधियों के बिना हरेक पीढ़ी को नए सिरे से सब कुछ ईजाद करना पड़ता, पहिए से लेकर दस आज्ञाओं तक, धातुकर्म से लेकर खेतीबाड़ी तक। इन्सान

पीढ़ी दर पीढ़ी अपने युवाओं को अपना अर्जित ज्ञान सौंपता है, घर में, समुदाय में, कार्यस्थल में – और तथाकथित रूप से स्कूलों में। दुर्भाग्य से आज के स्कूल विद्यार्थी को यह ज्ञान देने का जितना प्रयास करते हैं, उतना ही अधिक नुकसान वे बच्चों को पहुँचाते हैं। यह वक्तव्य स्पष्टीकरण की माँग करता है, क्योंकि अभी-अभी जो मैंने कहा है यह उसके विरुद्ध है। मैंने कहा था कि वयस्क हमेशा से यह सीखने में बच्चों की सहायता करते रहे हैं कि वे इस जगत् में कैसे प्रवेश करें और उसमें उपयोगी बनें। जो बात मैंने वर्षों में बहुत धीरे-धीरे और काफी कष्ट झेलकर सीखी वह यह है कि बच्चे अपने महत्वपूर्ण फैसले स्वयं ऐसे तरीकों से करते हैं जिनका पूर्वानुमान या कल्पना तक वयस्कों ने नहीं की होगी...

सो अब मैं स्वयं को कुछ नहीं करना सिखा रही हूँ, और इसको जिस हद तक मैं कर पाती हूँ, उतना बेहतर मेरा काम होता जाता है। कृपया यह निष्कर्ष न निकालें कि स्टाफ अनावश्यक है। आप यह कह सकते हैं कि बच्चे तो स्कूल को लगभग स्वयं ही चलाते हैं, सो स्टाफ के इतने लोगों की क्या ज़रूरत है जो बस बैठे रहें और करें कुछ भी नहीं। सच्चाई यह है कि स्कूल तथा विद्यार्थियों को हमारी दरकार है। हम यहाँ इसलिए हैं ताकि हम एक संस्था के रूप में स्कूल की देखरेख कर सकें और उसे पोषित कर सकें, और व्यक्तियों के रूप में विद्यार्थियों को।

स्व-निर्देशन की प्रक्रिया या स्वयं अपना मार्ग प्रशस्त करना, बल्कि कहें कि महज़ समय काटने के बनिस्बत अपना जीवन जीना, स्वाभाविक तो है पर हमारी संस्कृति के बड़े होते बच्चों के लिए स्वतः स्पष्ट नहीं है। उनका मस्तिष्क इस स्थिति में पहुँचे, इसके लिए उन्हें एक ऐसे वातावरण की ज़रूरत पड़ती है जो परिवार के समान हो, एकल परिवार से अधिक विस्तृत परिवार के समान, पर जो सहयोगी तथा सुरक्षित हो। क्योंकि वे निर्देश नहीं देते तथा दबाव नहीं डालते, पर फिर भी उनका ध्यान रखते हैं और उनकी परवाह करते हैं, इसलिए स्टाफ के सदस्य बच्चों को अपनी आन्तरिक आवाज़ सुन पाने का साहस व प्रेरणा देते हैं। बच्चे यह जानते हैं कि हम वयस्कों के रूप में उनका मार्गदर्शन करने की काबिलीयत रखते हैं, पर ऐसा करने से इन्कार करना शिक्षाशास्त्रीय औज़ार है जिसका सक्रिय उपयोग हम उन्हें यह सिखाने के लिए करते हैं कि वे केवल अपने आप को ही सुनें, दूसरों को नहीं, क्योंकि

दूसरे, श्रेष्ठतम परिस्थितियों में भी, उनके बारे में केवल आधे-अधूरे तथ्य ही जानते हैं।

विद्यार्थियों को क्या करना चाहिए, जब हम यह बताने से स्वयं को रोकते हैं तो वे इसे किसी चीज़ का अभाव, एक तरह का खालीपन नहीं मानते। बल्कि प्रोत्साहन के रूप में देखते हैं कि वे खुद अपनी राह बनाएँ, हमारे मार्गदर्शन में नहीं बल्कि हमारे हिफाज़ती और सहयोगी सरोकार के तहत। क्योंकि जो कुछ वे अपने लिए करते हैं उसमें मेहनत और साहस की दरकार होती है। उसे एकान्त के शून्य में नहीं किया जा सकता, बल्कि वह एक जीवन्त व पेचीदा समुदाय में ही सम्भव होता है जिसे स्टाफ के सदस्य स्थिरता देते हैं और कायम रखते हैं।

पहले साल के अन्त तक, गर्मियों और पतझड़ की मुठभेड़ों में से गुज़रकर हम अनुभवी बन चुके थे।

हम वर्ष '2' की चर्चा करने इस सन्तुष्टि के साथ बैठे कि हम सब तथा स्कूल इस बातचीत के लिए अब तक मौजूद थे। पिछले वर्ष जितनी राशि उपलब्ध थी उससे अधिक इस वर्ष भी हमारे पास नहीं थी।

"हम एक साल और बिना वेतन के काम कर सकते हैं," एक व्यक्ति ने कहा।

"नहीं," किसी ने ध्यान दिलाया, "पहले साल यह एक अद्‌भुत कोशिश थी। परन्तु दूसरे वर्ष यह बासी पेय-सा लगेगा।"

हमें पता था कि वह व्यक्ति सही कह रहा था। लोगों को ऐसी मुफ्त सहायता का आदी बनाने में कोई गुण नहीं था जिसे वे जब चाहें माँग सकते थे। हम सब श्रम के सम्मान और इस सिद्धान्त में विश्वास रखते थे कि लोगों को उनकी मेहनत की कमाई का भुगतान होना चाहिए।

इस असमंजस का समाधान सम्भव नहीं लगता था। यह सही था कि हम सबको उचित वेतन दिया जाना चाहिए था। पर हमें भुगतान करने के लिए धन था ही नहीं।

समाधान प्रेरणा के एक क्षण में उभरा।

हम सब एक सम्मानजनक राशि पर अनुबन्ध के तहत रखे जाएँगे, पर स्कूल भुगतान करने की बजाय इस राशि का कर्ज़दार होगा। किसी सामान्य ऋण की तरह नहीं – क्योंकि इससे तो स्कूल की कर्ज़ सम्बन्धी साख ही बरबाद हो जाएगी – बल्कि एक सशर्त कर्ज़ की तरह जो उस समय चुकाया जाएगा जब स्कूल के पास खर्च से अतिरिक्त राशि बची हो।

यह हमारी 'वेतन अनुदान योजना' थी। इसे कानूनी भाषा में लिखने के लिए वह प्रयास करना पड़ा जो किसी मध्ययुगीन दार्शनिक के दिल को खुश कर देता। परन्तु व्यवहार में यह विचार बेहद सरल हैः स्टाफ को वह पैसा दिया जाता है जो सभी ज़रूरतों को पूरा करने के बाद बच जाता है। अदा की गई राशि तथा अनुबन्धित वेतन के बीच का अन्तर वह कर्ज़ है जो अनिश्चित भविष्य में स्टाफ को अदा किया जाएगा।

दूसरे वर्ष स्टाफ के पूर्णकालिक सदस्य वर्ष भर के काम के लिए कई सौ डॉलर का वेतन पा सके। पन्द्रहवें वर्ष तक हमारे किफायती बजट ने यह सम्भव बना दिया कि स्टाफ के पूर्णकालिक सदस्य 12,000 डॉलर पा सकें। यह राशि लगातार बढ़ती रही है।

जब न्यू इंग्लैंड स्कूल व कॉलेज संघ की समिति सडबरी वैली को देखने पहली बार 1975 में आई तो उन्होंने यह समझने के लिए काफी जद्दोजहद की कि हम क्या कर रहे हैं। समिति के सभी सदस्य अन्य प्रतिष्ठित प्राइवेट स्कूलों के शिक्षाविद् थे। उनके अनुभव ने उन्हें उसके लिए तैयार नहीं किया था जो उन्होंने यहाँ देखा-पाया।

प्रारम्भ से ही मान्यता पाना हमारे लिए महत्वपूर्ण रहा था। हम न केवल अपने तौर पर सफल होना चाहते थे बल्कि शैक्षणिक जगत् में एक 'जायज़' उद्यम के रूप में स्वीकृति भी चाहते थे।

संघ हमें देखने आए इसके लिए हमें कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। पहले तो उन्होंने हमारे औपचारिक अनुरोधों की उपेक्षा की और चाहा कि हम भी शेष वैकल्पिक स्कूलों की तरह गायब हो जाएँ। पर हम पीछे पड़े रहे और आखिरकार उन्हें झुकना पड़ा।

एक सुबह मैं समिति के अध्यक्ष के साथ मुख्य भवन की ओर चल रहा था।

उन्होंने एक अनुभवी स्कूल प्रशासक की नज़र से हमारे सुन्दर भवन को देखकर पूछा, "आप इस पुराने भवन को सही हालत में भला कैसे रखते हैं? स्लेट से बनी उस छत की मरम्मत कर उसे अच्छी हालत में रखने में ही भारी खर्च आता होगा।"

"हमने दृढ़ संकल्प किया है," मैंने उत्तर दिया, "कि हम स्कूल को चालू रखने के लिए हर सम्भव प्रयास करते रहेंगे।" "पर पैसा कहाँ से आता है?" "हमारे स्टाफ के वेतन से," मैंने जवाब दिया। "स्कूल की ज़रूरतें पहले आती हैं। जो बचता है वह स्टाफ को मिलता है। इस विषय पर हम सब एकमत हैं।"

"ठीक यही तो हमारे बीच अन्तर है," उन्होंने कुछ कसक के साथ कहा। "हमारे स्कूल में स्टाफ की ज़रूरतें पहले आती हैं, चाहे कुछ भी हो जाए। चाहे छत टूट जाए या भवन चरमरा जाए – वह समस्या मेरी है। अपनी संस्था के प्रति सडबरी वैली के स्टाफ के जैसा समर्पण भाव तो नितान्त अनूठा है।"

समिति ने सर्वसम्मति से हमें पूर्ण मान्यता दे दी।

इतने कामों, वेतन को लेकर इतनी समस्याओं, इतनी अनिश्चितता के बावजूद हमारे स्टाफ के सदस्य आश्चर्यजनक रूप से स्थिर रहे हैं और, साथ ही, नए लोगों के आगमन से फले-फूले भी हैं।

"अनिश्चितता?" आप पूछ सकते हैं, "कैसी अनिश्चितता?" सडबरी में स्थाई पद होते ही नहीं। स्टाफ को स्कूल संचालन के अपने दायित्व के तहत स्कूल बैठक नियुक्त करती है। हर साल बसन्त में आगामी वर्ष के स्टाफ का चयन होता है। जो भी अपनी सेवाएँ देना चाहता है वह अपना नाम नामांकित करवाता है।

स्कूल बैठक में स्कूल की स्टाफ सम्बन्धी आवश्यकताओं पर वाद-विवाद होता है और प्रत्येक प्रत्याशी पर चर्चा की जाती है। चुनाव के दिन स्कूल में सभी को गुप्त मतदान से मत देने का अवसर मिलता है।

यह तथ्य हम सबको सचेत रखता है।

यदाकदा किसी को मतदान द्वारा निकाल दिया जाता है। अक्सर नए आवेदक चुने जाते हैं। पुराने और नए खून का अच्छा सम्मिश्रण स्टाफ में रहता है।

तकरीबन दो दशकों से हमारे छह मूल लोग स्टाफ दल में बने हुए हैं। एक सेवानिवृत्त हुए हैं, दो को वोट द्वारा निकाल दिया गया है और तीन दूसरी जगहों पर चले गए हैं।

हमारा सौभाग्य है कि हमारे स्टाफ में विभिन्न हुनरों और पृष्ठभूमियों से आए लोग हैं। हमारे स्टाफ के सदस्यों की प्रतिभा का विस्तार हमसे पाँच गुना बड़े स्कूल को भी गौरवान्वित करता। हमारे यहाँ पीएच.डी. धारी और हाई स्कूल स्नातक, कलाकार और बुद्धिजीवी, पेशेवर व शिल्पकार हैं। बड़े-बुज़ुर्ग और नौजवान हैं, स्त्रियाँ और पुरुष हैं। हमारे स्कूल के ही कई स्नातक बाद में स्कूल के स्टाफ के रूप में लौटे हैं।

आज भी हम किसी राजनैतिक, धार्मिक या सामाजिक दल के साथी नहीं हैं, जैसे हम 1968 में नहीं थे। हमारा साझा बन्धन वही है जो हमेशा से रहा हैः सडबरी वैली को फलते-फूलते देखने के प्रति कटिबद्धता।

* * *

31

नन्हे-मुन्ने

ऑफिस में फोन की घण्टी बजती है। आठ वर्षीय डेबी फोन उठाती हैः "सडबरी वैली स्कूल; क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूँ?" फोन करने वाला, शंकालु ढंग से, स्कूल के बारे में जानकारी चाहता है। "कृपया एक मिनट इन्तज़ार करें," डेबी कहती है। "आपकी मदद के लिए मैं किसी को बुलाती हूँ।" क्षण भर में वह स्टाफ के किसी सदस्य को तलाश कर फोन पर बात करवाती है। फोन पर बातचीत पूरी होती है। परन्तु एक शब्द का आदान-प्रदान होने से भी पहले फोन करने वाला हमारे बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात जान लेता हैः सडबरी वैली में सभी लोग समान रचे जाते हैं, छोटे बच्चे भी।

चार छह वर्षीय बच्चे रसोई में मार्गरेट के साथ कुकी बना रहे हैं। धीमी गति से, बिना अवरोध, ये कुकी सम्पूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं, और रसोई अस्तव्यस्त होने की ओर।

"चलो, अब जगह की सफाई कर लें," मार्गरेट दृढ़ आवाज़ में कहती है। निश्चित ही उसका नौसेना का अनुभव बेकार नहीं जाएगा।

सभी जुट जाते हैं। एलिस सिंक के पास कुर्सी लाकर रखती है, उस पर खड़ी हो जाती है, और सारे बरतन धोती है जो मॉली उसे लाकर देती जाती है। जेकब और एरिक टेबल पोंछने और फर्श की सफाई का काम करते हैं।

"उस कोने को भी साफ करना!" मार्गरेट की आवाज़ गूँजती है। वह बची

सामग्रियों को उनकी जगह पर रख रही है। एरिक गन्दे कोने की दिशा में जाता है, जेकब डस्टपैन लिए उसके पीछे भागता है।

बीस मिनट बाद कुकी बनाना और रसोई की सफाई, दोनों काम पूरे हो जाते हैं। सब ने इस उद्यम में अपने हिस्से का काम पूरा किया है। छोटे बच्चों की 'नाज़ुकता' के नाम पर उन्हें कोई छूट नहीं दी जाती है।

वयस्कों के साथ आठ वर्षीय बच्चे भी बिजली से चलने वाला टाइपराइटर काम में लेते हैं – बशर्ते कि उन्होंने उसे इस्तेमाल करना सीखा हो और उन्हें तसदीक किया जा चुका हो (यह बात वयस्कों पर भी लागू होती है)। दस वर्षीय बच्चे भी बढ़ईगिरी के सारे उपकरण काम में लेते हैं। नौ साल के बच्चे चाक पर मिट्टी के भाण्ड बनाते हैं। हर आयु के बच्चे नॉब-स्कॉट पिज़्ज़ा, या स्टेट पार्क, या गोल्फ कोर्स में पेशेवर दुकान तक पैदल चलकर जाते हैं।

वर्षों से व्याप्त शैक्षणिक बकवास के प्रभाव के चलते हम इस प्रश्न से जूझते रहे हैं, "क्या नन्हे बच्चों को विशेष बरताव की आवश्यकता नहीं है?" वे स्कूल बैठक के सदस्य थे, उनको मताधिकार था, उन पर वे सारे नियम लागू थे जैसे दूसरों पर। पर फिर भी क्या वे कुछ खास नहीं थे? क्या उन्हें अतिरिक्त देखभाल की ज़रूरत नहीं थी?

स्कूल बैठक ने इस सवाल पर कई घण्टे बिताए, इसे कई सालों तक छोड़ दिया, तब उस पर वापस लौटी। एक बार फिर उसे छोड़ दिया, फिर उस पर चर्चा की। पर हमारे तमाम प्रयासों के बावजूद हमें कोई ऐसा तरीका नहीं सूझा जिसमें हम अपने बरताव में किसी एक उम्र और दूसरी में फर्क करें। हमारे सिद्धान्त इसकी अनुमति नहीं देते थे और स्कूली जीवन की वास्तविकताएँ इसका समर्थन नहीं करती थीं।

हालाँकि असलियत यह है कि सबसे छोटे और सबसे बड़े विद्यार्थियों में अन्तर का सबूत हर रोज़ हमारे सामने आता है। कुल मिलाकर, जो सबसे छोटे हैं वे ज़्यादा स्वावलम्बी, ज़्यादा साधन-सम्पन्न, ज़्यादा कल्पनाशील, ज़्यादा मेहनती और ज़्यादा व्यस्त होते हैं। खासकर यदि आप उनकी तुलना उन विद्यार्थियों से करें जो ज़्यादा बड़ी उम्र में हमारे स्कूल में आए।

नन्हों को फुरसत ही नहीं होती। वे बोलने, खाने, स्थिर बैठने तक के लिए

बेहद व्यस्त रहते हैं। वे कभी चलते नहीं; वे दौड़ते हैं। वे थकते नहीं। जब तक घर न पहुँच जाएँ।

वे वयस्कों को सीधे उनकी आँखों में देखते हैं, खुलकर बोलते हैं, कभी भी डरते या झिझकते नहीं। वे नम्र, आत्मविश्वासी व मुखर होते हैं। जो वयस्क पहली बार स्कूल आते हैं उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं होता।

"आपने इन विद्यार्थियों के मामले में दूध से मलाई निकाल ली है," वे कहते हैं। "ये सब इतने तेजस्वी और जीवन्त हैं।" हम स्पष्ट करते हैं कि हमारी प्रवेश नीति खुली है। कोई भी आ सकता है। कोई भी आता है। आम तौर पर लोग सोचते हैं कि हम शायद झूठ बोल रहे हैं। जो बच्चे ऐसा आचरण करते हैं वे 'कोई भी' कैसे हो सकते हैं।

इन नन्हों की सबसे अच्छी बात वह होती है जो वे दूसरों के लिए करते हैं।

पाँस द लिओन ने अपना सारा जीवन यौवन के सोते को तलाशने में लगा दिया। उसे यह ज़हमत उठाने की ज़रूरत ही नहीं थी। उसे बस इतना करना चाहिए था कि वह अपना कुछ समय बच्चों के साथ गुज़ारता।

छोटे बच्चे सबसे खड़ूस वयस्कों तक को पुनरुज्जीवित कर सकते हैं, या तुनकमिज़ाज किशोरों के चेहरों पर मुस्कान ला सकते हैं।

स्कूल में वे किशोरों को बाध्य करते हैं कि वे उनकी ऊर्जा और जीवन्तता पर गौर करें। ऐसा वे उन्हें परेशान करके नहीं करते, यह तो उनके होने से ही हो जाता है। कुछ समय बाद आप नए किशोरों को नन्हों को पढ़कर सुनाते, उनके साथ काम करते या उनके साथ खेलते पाते हैं। पुराने बच्चे तो इस तरह की अन्तर्क्रिया को आम बात मानते ही हैं।

बच्चों के लिए लिखी गई सर्वाधिक लोकप्रिय किताबों में से एक है, *विनि-द-पूह*। अपनी आत्मकथा में लेखक ए.ए. मिल्ने ने बताया कि उन्होंने इसके पहले या बाद में बच्चों के लिए कभी कोई किताब नहीं लिखी, और यह भी यूँ ही मज़े-मज़े में इसलिए लिख डाली कि शायद कुछ अतिरिक्त पैसे कमा सकें। क्योंकि उन्हें बच्चों के लिए खास तरह से लिखने का अनुभव नहीं था, उन्होंने यह किताब ऐसे लिखी मानो वे ऐसे वयस्क पाठकों को सम्बोधित कर रहे हों जो अपना मनोरंजन करना चाहते हों।

किताब तत्काल सफल हुई, और हमेशा के लिए बेस्टसेलर बन गई। मैं इसे कुछ सालों बाद दुबारा पढ़ लेता हूँ, जो मैं आठ साल की उम्र से करता आ रहा हूँ। यह मेरे भीतर बसे बच्चे को ठीक उसी तरह लुभाती है जैसे बच्चों में बसे वयस्क को।

लगता है कि सडबरी वैली स्कूलों का विनी-द-पूह है, जहाँ हम नन्हे बच्चों से वयस्कों जैसा आचरण करते हैं। और स्कूल का वातावरण हम ढलान पर उतर रहे वयस्कों के लिए अपने भीतर छिपे बच्चे को प्रतिदिन ऊर्जावान बनाना सम्भव करता है।

* * *

32

'अच्छे बच्चे' और 'गड़बड़ करने वाले'

बड़े बच्चों की कहानी बिलकुल अलग है। वे हमारे पास विभिन्न तरीकों से आते हैं, और वे विभिन्न तरह की अजीबोगरीब चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं।

उनमें से कुछ तो अपना समूचा जीवन स्कूल में ही रहे हैं। अन्य, शायद अधिकांश, दूसरे स्कूलों से तबादला लेकर आते हैं। अमूमन तबादला लेकर आने वाले बच्चे दो समूहों में बाँटे जा सकते हैं: वे जो अन्य स्कूलों में सफल थे ('ए' विद्यार्थी) पर प्रसन्न नहीं थे, और वे जो अपने पुराने स्कूलों के साथ लड़ाई छेड़ चुके थे ('शैतान बच्चे')। कभी-कभार ऐसे भी विद्यार्थी होते हैं जो दोनों हों।

इन दोनों तरह के विद्यार्थियों में से आप किसको पसन्द करेंगे? अनुभव ने हमें कुछ विचित्र पाठ पढ़ाए हैं।

सैम सोलह वर्ष की आयु में सडबरी वैली में आया; दुनिया से उसका कोई तालमेल न था। साल भर वह धुएँ और निष्क्रियता की धुन्ध में घिरा बैठा रहा। जो लोग उसे जानते थे वे यह सोचा करते थे कि किस तरह का स्कूल उसे दाखिला देगा।

कुछ समय बाद वह आन्तरिक रूप से स्थिर हो गया और अपने जीवन का लेखा-जोखा रखने लगा। अपने दूसरे वर्ष के अन्त तक वह स्कूल स्नातक बन कॉलेज चला गया। कई साहसिक कारनामों के बाद, जिसमें वह कुछ समय दुर्लभ रत्नों का आयातक भी रहा, उसने कॉलेज पूरा किया और काइरोप्रैक्टिक

चिकित्सा स्कूल में प्रवेश लिया। अब वह सफल काइरो-चिकित्सक है जिसकी निजी प्रैक्टिस फल-फूल रही है।

सडबरी वैली से पहले सैम जितने भी स्कूलों में गया वहाँ वह बुरी खबर ही था। हमारे साथ, अपने पहले वर्ष तक में, वह हमेशा खुशमिज़ाज था। जैसे-जैसे उसकी आँखों की चमक लौटी, उसने स्कूली जीवन को बेहतर बनाने और अन्य विद्यार्थियों को तालमेल बैठा पाने में मदद के कई तरीके निकाले।

चौदह वर्ष की आयु में रॉबर्ट एक ठेठ पस्त व खस्ताहाल इन्सान था। शराबी, हमेशा अधिकारियों के साथ परेशानियों में उलझा हुआ – जो कोई उसे जानता था भविष्यवाणी करता था कि उसका जीवन दुखद होगा और वह जल्दी मर जाएगा।

उसने हमारे साथ चार वर्ष क्रमशः अपने जीवन को फिर से गढ़ते हुए गुज़ारे। वर्ष गुज़रने के साथ उसने बोलना, स्वयं को अभिव्यक्त करना सीखा, और कई बार तो इतने विस्तार से कि हम हैरान रह जाते। वह पढ़ने लगा, खेलने लगा और अपनी सम्भावनाओं से अधिक आश्वस्त हुआ। धीमे-धीमे उसने अपने शरीर के साथ अत्याचार कम किया और अन्ततः अपने स्वास्थ्य की साज-सम्हाल करने लगा।

स्कूल छोड़ने तक रॉबर्ट सेवा कार्य को चुन चुका था, विशेष कर अर्ध-चिकित्सा के क्षेत्र को। काफी प्रशिक्षण लेने के बाद वह एक अर्ध-चिकित्सकीय बचाव दल का मुखिया बना। बाद में, उसने नर्सिंग कॉलेज में प्रवेश लिया और पंजीकृत नर्स बन गया।

स्कूल में रॉबर्ट हमेशा ज़िन्दादिल, हमेशा खुला व्यक्ति रहा। शून्य में ताकने और स्वयं में सिमटा-सा रॉबर्ट समय गुज़रने के साथ क्रमशः सामाजिक और दोस्ताना बनता गया। उसने हमारे लिए कभी कोई परेशानी पैदा नहीं की।

साल दर साल, वे आते रहे, समाज के आवारा और बिगड़ैल बच्चे, बच्चे जिनसे लगभग सभी नाउम्मीद हो चुके हों। कार चोर, गड़बड़ी करने वाले, नशेड़ी, शराबी, स्कूल से नफरत करने वाले, हर किस्म के समाज विरोधी, जिन्हें या तो उनके पूर्व स्कूलों ने निकाल फेंका था या फिर वे हिंसक रूप से किसी भी स्कूल में जाने के विरुद्ध होते। इन सभी के साथ सडबरी वैली में

एक-सा व्यवहार किया जाता है। उन्हें अपनी आज़ादी वापस मिल जाती है, और अपनी नियति को नियंत्रित करने की भारी ज़िम्मेदारी भी। उन्हें रोकने वाला कोई नहीं होता।

यह सन्देश जल्दी ही उनके अन्दर पैठ जाता है। आज़ादी, खुला वातावरण, व्यापक मित्रता का भाव, विभिन्न आयु के लोगों का मिश्रण, ये सभी उनके लिए वास्तविकता में लौटना आसान बना देते हैं। जब स्कूल प्रारम्भ हुआ ही था तब इस प्रक्रिया में लम्बा समय लगता था, अक्सर साल या दो साल। पर समय गुज़रने के साथ बड़े किशोरों की पीढ़ी दर पीढ़ी ने यह बात फैलाने में मदद की, और वे नए विद्यार्थियों के समावेशन के उपकरण बने। अब खुद को खोजने की प्रक्रिया जल्दी प्रारम्भ हो जाती है और तेज़ी से बढ़ती है।

सबसे बड़ा उदाहरण सम्भवतः स्टैला का रहा है जो चौदह वर्ष की उम्र तक अपने स्कूल में एक ऐसी मुसीबत बन चुकी थी कि उसके कस्बे की स्कूल कमेटी ने सडबरी वैली में पढ़ने का उसका खर्चा देना तय किया, हालाँकि यह राज्य के नियमों के विरुद्ध था। वे जल्द से जल्द उससे छुटकारा चाहते थे। हर साल एक शिष्ट मण्डल उसके कस्बे से यह देखने आता कि हमारा अस्तित्व अब भी कायम है या नहीं, और वह भी स्कूल में उपस्थित होती है या नहीं।

इस काम में कुछ समय ज़रूर लगा, पर जल्दी ही स्टैला ने स्वयं का सामना किया। जब तक उसने स्कूल छोड़ा, वह कॉलेज की भावी ऑनर्स छात्रा बनने, मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर अध्ययन करने, व सफल कहानीकार बनने के पथ पर अग्रसर हो चुकी थी।

हमारे लिए सभी स्टैलाएँ, रॉबर्ट व सैम एक नमूने का हिस्सा हैं। मुझे स्कूल के शुरुआती दिन याद आते हैं जब एक स्कूल बैठक के दौरान 'ए' टाइप विद्यार्थियों के एक गुट ने बाकी विद्यार्थियों की खूब शिकायत की, कहा कि वे ऐसे खराब नागरिक हैं जिन्हें स्कूल में होना ही नहीं चाहिए। "हम स्कूल आते हैं, हर तरह से मदद करते हैं; आपको हमारे जैसे विद्यार्थियों की ज़रूरत है। वे दूसरे विद्यार्थी बदतमीज़ी करते हैं, पूरा दिन निठल्ले बैठे रहते हैं, तथा नागरिक दायित्वों से बचते हैं।" मुझे याद है कि मैंने गहरी साँस खींचकर उन्हें शिद्दत के साथ कहाः "वे 'बुरे लोग' स्कूल के बारे में तुम लोगों से ज़्यादा

जानते हैं। वे अपनी ज़िन्दगियों से जूझ रहे हैं, और, फिलहाल, उनके लिए यह काम पर्याप्त है। तुम सब दूसरों को खुश करने में इतने व्यस्त हो कि तुमने स्वयं को जानना तक शुरू नहीं किया है।"

सच्चाई यह है कि 'परेशानी पैदा करने वालों' ने सडबरी वैली में हमेशा बढ़िया प्रदर्शन किया है, लगभग बिना किसी अपवाद के और हमेशा ही, यदि उनके अभिभावकों का सहयोग उन्हें मिला हो। इसका कारण काफी सरल-सा हैः गड़बड़ी फैलाने वाला होना इस बात का संकेत होता है कि उन्होंने संघर्ष करना छोड़ा नहीं है। लोगों ने इन बच्चों को तोड़ने की, उन्हें सुधारने की, सामान्य साँचों में ढालने की कितनी ही चेष्टा क्यों न की हो, उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा, हथियार नहीं डाले। उनमें साहस और जोश होता है। सच है कि उनकी ऊर्जाएँ अक्सर आत्मविनाश की ओर ले जाने वाली गतिविधियों पर केन्द्रित होती हैंः पर जैसे ही वे दमनकारी जगत् से लड़ने से मुक्त होती हैं, ठीक यही ऊर्जाएँ उनके आन्तरिक जगत् के निर्माण में, यहाँ तक कि एक बेहतर समाज के निर्माण में लगा दी जा सकती हैं। इन विद्यार्थियों ने, एक के बाद एक, स्कूली जीवन की गुणवत्ता सुधारने में बहुत योगदान दिया है।

पर दुर्भाग्य से, 'ए' विद्यार्थियों को ज़्यादा कठिनाइयाँ हुई हैं। वे अपने शिक्षकों को खुश रखने के इतने आदी हो चुके होते हैं कि पहले-पहल यहाँ पहुँचने पर उन्हें कुछ सूझता ही नहीं है। "यहाँ कौन है जिसे खुश किया जाए?" वे सोचते हैं। अक्सर वे स्टाफ की आज़माइश करते हैं, जो उन्हें उनके पूर्व स्कूलों के शिक्षकों जैसे दिखते हैं। पर पाँसा चलता नहीं है। यहाँ के स्टाफ के सदस्य कोई सुनहरे सितारे नहीं बाँटते। तो फिर किस ओर बढ़ा जाए?

यह तालमेल कष्टदायक होता है। और इस बात को जानने से भी कोई मदद नहीं मिलती कि स्कूल में शेष सब भी उतने ही होशियार, चौकन्ने और तेज़ अक्ल वाले हैं। सडबरी में 'कक्षा में अव्वल' होने का संघर्ष कोई मायने नहीं रखता है, इसका कोई ढाँचा ही नहीं है।

ये बच्चे, शैतानी करने वाले नहीं, दरअसल समाज के वास्तविक पीड़ित हैं। वर्षों तक बाह्य सत्ता की अनुपालना करने के कारण वे स्वयं से ही कट चुके होते हैं। उनकी आँखों से चमक गायब हो गई होती है, उनकी आत्माओं से हँसी। अगर वे विनाश नहीं करते, तो वे निर्माण करना भी नहीं जानते।

उनके लिए आज़ादी भयावह होती है। उन्हें यह बताने वाला कोई नहीं होता कि वे क्या करें।

'उपचार' कठिन होता है, और समय लेता है। वह हमेशा कारगर भी नहीं होता। अक्सर सबसे अच्छी दवा होती है ऊब की बड़ी-भारी खुराक। उनकी गतिविधियों को व्यवस्थित करने वाले कार्यक्रम निदेशक के अभाव में ये विद्यार्थी अक्सर गहन निष्क्रियता की अवस्था में डूब जाते हैं। हम उन्हें हमेशा कहते हैं कि जब ऊब असहनीय बन जाएगी, तो वे हताशा के चलते खुद को जागृत करेंगे, स्वयं अपना ढाँचा रचेंगे। देर-सबेर ठीक यही होता है, पर इन बेचारे 'अच्छे बच्चों' को अपनी पूर्व की अनुपालना की क्या कीमत चुकानी पड़ती है!

जो किशोर अपने स्कूली जीवन के प्रारम्भ से ही सडबरी वैली में रहे हैं, वे इन दोनों में से किसी श्रेणी में नहीं आते। वे ही भाग्यवान हैं, और यह आप उनके चेहरों पर तत्काल देख सकते हैं। वे स्वयं के साथ और अपने परिवेश के साथ सम में होते हैं, और वे अपने लक्ष्यों को नज़रअन्दाज़ किए बिना जीवन के उतार-चढ़ावों से निपट पाते हैं।

एक तरह से, हम कभी जीत ही नहीं सकते। एक ओर तो लोग हमारे विद्यार्थियों को काम करते देख कहते हैं, "आप तो मलाई उतार लेते हैं, हैरानी की बात नहीं कि आज़ादी ऐसे बच्चों के लिए कारगर होती ही है। पर औसत बच्चों के लिए यह बेकार रहेगी।" दूसरी ओर, लोग हमारी खुली प्रवेश नीति और स्कूल में दाखिल कुछ बच्चों को देखते हैं और कहते हैं, "यह स्कूल तो 'नाकाराओं' का है। सामान्य बच्चों के लिए यह कतई उपयुक्त नहीं है।" मलाई, तलछट, औसत...

हम जीत नहीं सकते, पर अमूमन जीतते हैं। ऐसा इसलिए हो पाता है क्योंकि हम सबसे एक-सा आचरण करते हैं, जैसा ज़िम्मेदार व्यक्तियों से किया जाता है, जो खुद अपना बोझ ढो रहे हों। हमारे पास कोई खुफिया फॉर्मूला नहीं है, न कोई उपचारात्मक युक्ति, और न ही कोई जादुई तकनीक। जीवन का सामना करने के लिए आवश्यक संसाधन सब में ही निहित होते हैं। सडबरी वैली में उन्हें तलाशने और उनका उपयोग करने की छूट बच्चों को मिलती है।

* * *

33
माता-पिता

अधिकांश स्कूलों के लिए माता-पिता सिरदर्द होते हैं। वे शिकायत करते हैं, आलोचना करते हैं, समय लेते हैं, और सबसे खराब यह है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा में हस्तक्षेप करते हैं।

सडबरी वैली में शुरू से ही माता-पिता तस्वीर का अखण्ड हिस्सा रहे हैं। हमें लगा कि अगर हमें सफल होना है तो हमें अपने विद्यार्थियों के परिवारों का पूर्ण सहयोग पाना होगा। वैसे भी शिक्षा माता-पिता का प्राथमिक दायित्व होता है। वे बच्चों को दुनिया में लाते हैं, और उनको स्वावलम्बी बनाने तक उनका पालन-पोषण करना माता-पिता का पवित्र कर्तव्य है। स्कूलों का अस्तित्व इसलिए है ताकि इस काम को करने में उनकी मदद की जाए, न कि उन्हें इससे बाहर कर दिया जाए। कम से कम इस देश में तो यही होना चाहिए, जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा की जाती है।

साथ ही बच्चे केवल तब ही सम्पूर्ण व्यक्ति हो पाते हैं जब उनका पारिवारिक जीवन और परवरिश उनके आत्म के साथ सामंजस्य में हो। बेशक पीढ़ियों के बीच संघर्ष व्यापक स्तर पर फैला हुआ है, पर यही कैंसर और हृदय रोग के बारे में भी कहा जा सकता है; कोई भी इन्हें वांछनीय कह इनका अनुमोदन तो नहीं करता।

इसके अन्य विचारणीय पक्ष भी हैं। माता-पिता ही स्कूल की फीस भरते हैं, और हमारी एक कहावत भी है जिसने 1776 की क्रान्ति को ताकत दी थीः

प्रतिनिधित्व नहीं, तो कर (टैक्स) भी नहीं। वे प्रतिदिन अपने बच्चों को स्कूल छोड़ने आते हैं – हमारा स्कूल दिवस स्कूल है जहाँ रोज़ आना-जाना पड़ता है; यहाँ कोई आवासीय विद्यार्थी नहीं हैं – अतः हम उनसे स्कूल की खातिर दैनिक रूप से एक बड़ा भारी प्रयास करने को कहते हैं।

आप चाहे जिस भी कोण से देखें, माता-पिता हमारे साथ खड़े मिलेंगे, हमारे सहयोगियों व मददगारों के रूप में। हम स्थिति को ऐसे ही देखते हैं, और हमने स्कूल को ठीक इसी रूप में बनाया था।

माता-पिता सडबरी वैली स्कूल, इनकॉर्पोरेटेड के मतदाता सदस्य हैं (जैसे विद्यार्थी और स्टाफ भी हैं)। मैं 'सदस्य' इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि स्कूल एक अलाभकारी निगम है और इसलिए इसके शेयरधारक नहीं हैं; इसकी बजाय, इसका संचालन निगम के सदस्य ही करते हैं।

सदस्य समूह को 'सभा' कहा जाता है। इसकी बैठक वर्ष में एक बार होती है और यह सभी मुख्य नीतियाँ बनाती है। इन नीतियों में ट्यूशन दर तथा स्कूल बैठक द्वारा प्रस्तावित बजट का अन्तिम अनुमोदन शामिल है। जब मुख्य नीतियाँ बन जाती हैं तो स्कूल बैठक वर्ष भर स्कूल का रोज़मर्रा संचालन करती है।

स्कूल में माता-पिता के अधिकार कानूनी अधिकारों से अधिक हैं। वे जब चाहें स्कूल में आ सकते हैं, पढ़ाने में मदद कर सकते हैं, काम में हाथ बँटा सकते हैं। इन सब चीज़ों का स्कूल द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया जाता है। वर्ष में कई बार विशाल सामाजिक आयोजन होते हैं – भोज, पिकनिक, नीलामी, नृत्य आदि, जिनमें माता-पिता भी अन्य लोगों के साथ हिस्सा लेते हैं।

माता-पिता के साथ जिस घनिष्ठ सम्बन्ध की स्कूल कामना करता है, वह प्रवेश साक्षात्कार के साथ ही प्रारम्भ हो जाता है। जो विद्यार्थी अठारह वर्ष से कम आयु के हैं, उनके लिए हमारा आग्रह रहता है कि वे माता-पिता के साथ ही साक्षात्कार के लिए आएँ – सम्भव हो तो दोनों के साथ। शुरू से ही उन्हें उनके बच्चे को शिक्षित करने के काम में अत्यावश्यक साझेदारों के रूप में जोड़ा जाता है।

असल में, साक्षात्कार के मुख्य लक्ष्यों में एक है माता-पिता की समझ को हासिल करना। हमारा साक्षात्कार मुख्यतया छँटनी या चयन का उपकरण नहीं है। बल्कि हम यह समय – अक्सर कई-कई घण्टे – उन्हें अपना दर्शन और तौर-तरीके समझाने में, उनके प्रश्नों के उत्तर देने में, और एक सतत सम्बन्ध बनाने की तैयारी करने में लगाते हैं।

हमारे स्टाफ के मूल बारह सदस्यों में से छह स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता थे। बिरले ही ऐसे सदस्य रहे हैं जिनके बच्चे अन्य स्कूलों में जाते हों।

विगत वर्षों में कई माता-पिता सडबरी वैली से इस कदर जुड़ गए कि अन्ततः उन्होंने भी स्टाफ में शामिल होने के लिए चुनाव लड़ा।

स्कूल में माता-पिता को शामिल करने के कारण स्कूल में एक समुदाय होने का भाव मज़बूत हुआ है। समय के साथ, पूर्वी मैसाच्युसेट्स के चार कोनों से आए अजनबी एक-दूसरे से परिचित होते हैं, साझी रुचियाँ पहचानते हैं और एक-दूसरे की मौजूदगी का मज़ा उठाते हैं।

सडबरी वैली में हर दिन परिवार का दिन होता है। इससे अलग कोई स्थिति हम चाहते भी नहीं।

* * *

34

आगन्तुक

हर दिन आगन्तुकों का दिन भी होता है। या कम से कम कई बार तो यही लगता है।

जब मैं साठ के दशक के प्रारम्भ में स्कूलों की स्थिति का जायज़ा लेने लगा तो मैं इस बात से हैरान हो गया कि कितने ही स्कूल सत्र के दौरान स्कूल में लोगों का आना लगभग असम्भव बना देते थे। बेशक मुझे यह सदमा अपने भोलेपन के कारण पहुँचा था। मैं सोचता था कि शिक्षाविद् अपने काम में बाहरी लोगों की रुचि बढ़ाना चाहते होंगे। पर स्थिति यह थी कि तथाकथित 'मुक्त स्कूल' भी अपने दरवाज़े बाहरी लोगों के लिए बन्द रखते थे।

हम निश्चय कर चुके थे कि हम सडबरी वैली को व्यापक समुदाय के लिए यथासम्भव खुला रखेंगे। हम चाहते थे कि हम जो कर रहे हैं उसे लोग देखें, हमसे बहस करें, शायद अन्त में हमसे सहमत होने के लिए ही। हमारी रुचि अनोखा बनने या बने रहने में नहीं थी। हमारे कार्यक्रम की जितनी अधिक प्रतिकृतियाँ या विभिन्न स्वरूप अस्तित्व में आते, उतनी ही अधिक प्रसन्नता हमें होती।

हमारे लिए मेहमानों का आना जनसम्पर्क का सबसे अच्छा तरीका था जो हम सोच सकते थे। कहावत है कि "देखने पर ही विश्वास होता है।" हम चाहते थे कि विश्वास करने वाले पैदा हों।

इस बात पर कोई गफलत न होः सडबरी वैली देखने आना आगन्तुकों के लिए कोई आसान अनुभव नहीं होता।

वे इसलिए आना तय करते हैं क्योंकि उन्होंने एक 'अलग' प्रकार के स्कूल के बारे में कुछ सुना होता है। और यही देखने की उम्मीद वे रखते हैं।

मुश्किल यह है कि शब्द सबके लिए समान अर्थ नहीं रखते। हमारे लिए 'स्कूल' का मतलब है सडबरी वैली। परन्तु अधिकांश लोगों को यह शब्द एक मुकम्मल तस्वीर सम्प्रेषित करता है – कक्षाएँ, मेज़-कुर्सियाँ, बच्चे और शिक्षक जो कक्षा में बैठे हों, भोजन कक्ष, घण्टियाँ, आदि-इत्यादि।

सो आगन्तुक सडबरी वैली के पार्किंग स्थल पर पहुँचते हैं, और जो पहली चीज़ उन्हें नज़र आती है वह है हर ओर बच्चे, दौड़ते-भागते, खेलने में व्यस्त।

"हम मध्यावकाश में आ गए हैं," वे कहते हैं।

वे भवन की ओर आते हैं और कार्यालय का पता पूछते हैं। दस में से नौ बार कोई नन्हा-सा विद्यार्थी मैत्रीपूर्ण ढंग से उनका स्वागत करता है और उन्हें दफ्तर तक पहुँचा देता है।

"आश्चर्यजनक नन्हा बच्चा," वे कहते हैं। "अपनी उम्र से सयाना है। ज़रूर यहाँ का कोई असामान्य बच्चा होगा।"

कार्यालय में कोई वयस्क हो सकता है या नहीं भी हो सकता है। लोग अन्दर-बाहर आ-जा रहे हैं। तीन दस वर्षीय बच्चे एक टाइपराइटर को घेरे, लघु-रचना तैयार करते नज़र आते हैं।

"प्रभारी भला कौन है?" वे सोचते हैं।

आखिरकार उनका सम्पर्क उस व्यक्ति से होता है जो उस दिन आगन्तुकों के लिए ज़िम्मेदार है। यह वयस्कों की मान्यता है। वे कुछ आश्वस्त होते हैं।

सच तो यह है कि अल्प समय के लिए आकर सडबरी वैली को समझना कुछ कठिन है। हम में से ज़्यादातर लोग ठीक वही देखते हैं जो हम देखना चाहते हैं, फिर चाहे हमारे सामने कुछ भी क्यों न हो। जब हम अजनबी परिस्थितियों में होते हैं तो हम उन्हें अपने सन्दर्भ ढाँचे के अनुरूप रूपान्तरित

करते जाते हैं, और निशाने से और दूर चले जाते हैं। ऐसा होना अपरिहार्य ही है।

जैसा भी वह होता है, 'अभिमुखीकरण' के बाद आगन्तुक को स्कूल में घूमने, उसे खुद देखने-समझने के लिए मुक्त छोड़ दिया जाता है। यह मान लिया जाता है कि सामान्य बुद्धि और शिष्टाचार लोगों के साथ उनके सम्पर्क-संवाद का मार्गदर्शन कर देंगे।

अधिकतर आगन्तुकों का आना आनन्ददायक होता है, फिर चाहे वे कितने ही उलझन भरे क्यों न लगें। पर यदाकदा कोई बदतमीज़ भी आ धमकता है।

"तुम कौन-सी कक्षा में हो?" जनाब बदतमीज़ एक नौ वर्षीय बच्चे से पूछते हैं।

"किसी कक्षा में नहीं।"

"तुम पढ़ क्या रहे हो?"

"कुछ भी नहीं।"

"क्या तुम पढ़ना जानते हो?"

"हाँ।"

"क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें सामाजिक अध्ययन सीखना चाहिए?"

नाराज़गी भरा मौन छा जाता है। यह आदमी कौन है?

"अगर पढ़ोगे नहीं तो कॉलेज में कैसे जाओगे?"

नौ वर्षीय बच्चे के पास कोई तैयार जवाब नहीं है। जनाब बदतमीज़ भाषण देना शुरू कर देते हैं। बच्चा बातचीत छोड़कर अपनी गतिविधि फिर से शुरू कर देता है, यह सोचते हुए कि ना जाने किसने इस घटिया इन्सान को स्कूल में आने दिया है।

मैंने दर्जनों बार इस वार्तालाप के विविध संस्करण सुने हैं। हम ऐसा होने पर बेहद चिढ़ जाते थे। अब नहीं। गुस्से की जगह अब अरुचि तथा कन्धे उचकाने ने ले ली है।

कुछ आगन्तुक स्कूल में ताज़ी हवा का झोंका लाते हैं। वे बात तेज़ी से

पकड़ लेते हैं, गाँठें खोल पाते हैं, और अपने आपको वास्तव में इस अनुभव का *लुत्फ लेने देते हैं*।

कभी-कभार प्रवेश साक्षात्कार के समय कोई ऐसा इन्सान टकराता है जिसके साथ निम्न वार्तालाप होता हैः

"आपने स्कूल के बारे में पहले-पहल कब सुना?" हम पूछते हैं।

"ओह, सालों पहले मैं एक आगन्तुक के रूप में आया था। शिक्षा (बी.एड.) की एक कक्षा के साथ जो स्कूल देखने आई थी।"

"आपको इतने समय बाद भी हम याद रहे?"

"उस यात्रा के दौरान मैंने बहुत अच्छा समय गुज़ारा था। यह जगह मुझ पर हावी रही। जब मेरा बच्चा स्कूल जाने की उम्र का हुआ तो मुझे यहाँ लौटना ही पड़ा।"

कई बार लोग स्वेच्छा से अपनी सेवाएँ देने भी आते हैं, या स्टाफ का सदस्य बनने की इच्छा से।

स्टाफ के लिए गम्भीर उम्मीदवारों को अधिक समय गुज़ारने के लिए आमंत्रित किया जाता है, अगर उन्होंने स्वयं ही यह सुझाव न रखा हो। इसके लिए एक लम्बा दौरा करना पड़ता है जो कुछ सप्ताहों या उससे भी अधिक का हो सकता है।

एक दिन से अधिक लम्बे दौरों का निर्णय स्कूल बैठक लेती है जो उन्हें स्वीकृत करती है। सामान्यतः यह स्वीकृति आम मामला होता है। जो आगन्तुक एक अर्से तक रहते हैं उनसे अधिकांश मामलों में स्कूल समुदाय के सदस्यों-सा बरताव किया जाता है। वे पूरी आज़ादी से सबसे सम्पर्क-संवाद करते हैं, खेलते हैं, पढ़ाते हैं, मदद करते हैं। उन्हें हमें जानने में या हमें उन्हें जान लेने में अधिक समय नहीं लगता।

स्टाफ का हर नया सदस्य इस प्रक्रिया से गुज़रता है। ज़्यादातर लोग स्कूल को इस प्रबलता के साथ अनुभव किए बिना ऐसी प्रतिबद्धता के बारे में सपने में भी कल्पना नहीं कर सकते जो यहाँ काम करने के लिए ज़रूरी होती है।

पर ऐसा भी होता है कि कभी-कभार लम्बे समय तक रुकने के बावजूद आगन्तुक हैरान करने वाली मूढ़ता बनाए रखते हैं। वे मुझे उन ब्रितानी उपनिवेशवादियों की याद दिलाते हैं जो अपने शौकीनी सूट और गाउन पहने अफ्रीका के उष्ण कटिबन्धीय मैदानी इलाकों में चाय पीते बैठे रहते थे। इस बात से अनभिज्ञ कि वे दरअसल कौन हैं।

"मैं अच्छा शिक्षक हूँ," ऐसे ही एक चरित्र ने मुझसे कहा। "मैं बच्चों में बेहद लोकप्रिय हो जाऊँगा, जैसे हमेशा होता हूँ।" उसने बच्चों के मनोरंजन की एक विस्तृत ृंखला प्रारम्भ की, उसकी सूचना बुलेटिन बोर्ड पर लगाई। वह उत्साह और उत्तेजना से भरा था, वह जो उत्पादित की जाती है, जिसके बारे में सोचा जाता है कि वह बच्चों को उत्तेजित करेगी। सालों से हमारे बच्चों ने ऐसे किसी बन्दे को देखा नहीं था। कुछ के लिए तो यह पूरी तरह नया अनुभव था। परिसर में एक नई प्रजाति का अवतरण हुआ था।

पहले सत्र के लिए कुछ बच्चे आए। "मैं तुम सबको एक मज़ेदार नया खेल दिखाऊँगा," शिक्षाशास्त्री जी ने ख़ुशमिज़ाजी से घोषणा की। बेशक यह खेल ऐसा था जिसके 'शैक्षणिक' लाभ होने वाले थे; इस दृष्टान्त में अंकगणित सम्बन्धी। हम में से स्टाफ के कुछ सदस्यों ने भयभीत हो यह देखा; हम डर गए कि जल्दी ही यह इन्सान हमारा साथी बनने वाला है। "ज़रूर बच्चे इस चक्कर में फँस जाएँगे," हमें फिक्र हुई। "इससे कैसे निपटा जाए यह उन्हें सूझेगा ही नहीं।"

सप्ताह भर बाद वह चिढ़कर स्कूल छोड़ गया। उसे लगा कि उसका उचित मूल्यांकन नहीं हुआ है। बच्चों को यह समझने में समय नहीं लगा कि उन्हें बेवकूफ बनाया जा रहा है। इस घटना ने मुझे बहुत पहले हमारे सबसे बड़े बच्चे के साथ हुए मेरे अनुभव की याद दिला दी। वह तीन साल का था। मैंने सोचा कि मैं उसे गाजर खाने को लुभा सकता हूँ। मैंने एक गाजर उठाई और मैं उसे भूखे अन्दाज़ में खाने लगा, और अपनी जीभ तथा होठों से ऐसी आवाज़ें निकालने लगा जैसे मुझे भयंकर मज़ा आ रहा हो। "वाह," मैंने कहा, "यह तो बड़ी स्वादिष्ट है।" "मुझे गाजर पसन्द नहीं है," उसने जवाब दिया। और बात खत्म कर दी।

हम जितना सोचते हैं बच्चे उससे कहीं अधिक चतुर होते हैं।

कई मायनों में, ज़्यादातर वयस्कों से कहीं अधिक चतुर।

सडबरी वैली में आत्म की भावना को विकसित करने का अवसर उन्हें मिलता है। हमारे अधिकांश विद्यार्थी नाज़ुक नहीं हैं, ना तो भावनात्मक रूप से ना ही शारीरिक रूप से।

अतः आगन्तुकों का स्वागत अब भी होता है, और अब हम यह चिन्ता भी नहीं करते कि हमारे रोज़मर्रा के जीवन पर उनका क्या असर होगा। कभी-कभार आए अशिष्ट मेहमानों को लौट जाने को कह दिया जाता है। जो अच्छे होते हैं उनमें से कुछ हमेशा के लिए भी टिक जाते हैं।

* * *

35

सबके लिए आज़ादी और न्याय

किसी भी समाज में न्याय पाना कठिन है। स्कूलों में तो यह अक्सर असम्भव ही है।

मैं वह समय कभी नहीं भूलूँगा जब मैं ग्यारह साल का था और बीजगणित की कक्षा में बैठा ऊब रहा था और नींद से लड़ रहा था। खुद को जगाने के लिए मैंने अपनी बाँहें सिर के ऊपर तान लीं। दुर्भाग्य से मेरी चेतना के परे हमारे शिक्षक – जो कर्कश इन्सान थे – कक्षा पर गरज-बरस रहे थे और ठीक उसी क्षण चिल्लाकर पूछ चुके थे, "तो तुम में से चतुर-सुजान भला कौन है?" मेरी ऊपर तनी बाज़ुओं से लगा कि मैं ही वह व्यक्ति था। मुझे तीन दिनों तक स्कूल के बाद रुकने की सज़ा मिली।

हम में से ज़्यादातर को कुछ ऐसे ही अनुभव हुए होंगे। मैं स्कूल में बारह वर्षों तक शिक्षकों तथा प्रशासकों की निरंकुश सत्ता से भयभीत रहा था, जिनके विरुद्ध बिरले ही अपील की जा सकती थी। हम सब ने तय किया था कि सडबरी वैली में स्थितियाँ भिन्न होंगी।

ऐसा है भी।

जब स्कूल शुरू हुआ था, किसी को भी पता नहीं था कि ऐसी प्रणाली कैसे बनाई जाए जिसमें न्याय के साथ व्यवस्था कायम रखी जा सके। एकमात्र स्कूल जिसके बारे में हम यह जानते थे कि उसने इस समस्या में कुछ

सफलता पाई है, वह था ए.एस. नील का समरहिल। यहाँ वे विवादों को सामुदायिक बैठकों में सुलझाते थे।

अतः हमने भी स्कूल बैठक में चीज़ों से निपटने की कोशिश की। घोषणाओं के बाद हमारी कार्यसूची पर दूसरे स्थान पर था 'शिकायत सत्र', जिसमें समस्याएँ निपटाई जाती थीं।

जैसा कि होना ही था, जैसे-जैसे सप्ताह गुज़रते गए शिकायत सत्र लम्बे से लम्बे होते गए। जल्दी ही वे शेष सभी कामों पर हावी हो गए। हमने पाया कि हम तीन और चार घण्टे लम्बी बैठकें कर रहे हैं, फिर सप्ताह में दो या उससे भी अधिक बार मिल रहे हैं। ज़्यादातर समय हमें इस विद्यार्थी ने क्या किया, या उन बच्चों ने किया होगा, या उस व्यक्ति ने कहा कि वह करेगा जैसी अनन्त शिकायतें सुनने में बिताना पड़ता था।

समय की बरबादी से अधिक बुरा था हमारी हताशा का एहसास। हम कोशिश करते थे कि हम न्यायपूर्ण हों, पर क्या हम इसमें सफल हो रहे थे? शिकायत सत्रों में आरोप व प्रत्यारोप होते, अक्सर आवेगपूर्ण, हमेशा चित्रात्मक विवरण के साथ। जब तक कि हम उस पर भारी समय न लगाते, हमें बिरले ही यह महसूस होता था कि हम मसले की जड़ तक पहुँच रहे हैं। स्थिति अपने चरम पर तब पहुँची जब प्रथम वर्ष की पतझड़ में स्कूल अपनी अग्निपरीक्षा में से गुज़रा। तीन दिन तक चले शिकायत सत्र से ही समस्या सुलझ सकी!

कुछ करना ज़रूरी था। हम कुछ समय से आगे बढ़ने का कोई सुराग तलाश रहे थे। कोई भी सन्तोषप्रद आदर्श हमारे सामने नहीं था।

अन्ततः हमें समझ आया कि हमारी समस्या ठीक वैसी ही थी जैसी किसी भी समुदाय की होती है। और समुदायों ने समाधान तलाशने में हज़ारों साल और अकूत समय-शक्ति खर्च की थी। कई सदियों के दौरान विभिन्न संस्कृतियों ने ऐसी न्याय व्यवस्थाएँ विकसित कर ली थीं जिनसे शिकायतों का न्यायपूर्ण निपटारा किया जा सके।

हमने अपनी राष्ट्रीय परम्परा को करीब से देखा और उसकी प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन किया। जल्द ही हमने स्कूल की न्याय प्रणाली के तत्व एकत्रित कर लिए।

संक्षेप में, ये तत्व काफी सरल हैंः सभी आरोपों की पूरी और निष्पक्ष जाँच होगी, और प्रत्येक आरोप के सम्बन्ध में यह तय किया जाएगा कि कौन-सा नियम तथाकथित रूप से तोड़ा गया है; समस्तरीय लोगों की ज्यूरी के समक्ष न्यायपूर्ण सुनवाई होगी जिसमें अभियुक्त के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की जाएगी और प्रमाण के नियमों का ध्यान रखा जाएगा; साथ ही दण्ड व्यवस्था न्यायपूर्ण होगी। इस सबके दौरान हमारे देश में प्रत्येक वयस्क नागरिक को दिए गए व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा भी सुनिश्चित की जाएगी, चाहे सर्वोच्च न्यायालय ने यह कहा है कि संयुक्त राज्य अमरीका के संविधान के ये अधिकार नाबालिगों पर लागू नहीं होते।

यह न्याय व्यवस्था हमारे पहले वर्ष की सर्दियों के प्रारम्भ में बनाई गई थी। यह पूरी तरह स्कूल बैठक के निरीक्षण में है। समय के साथ इसमें बदलाव व समायोजन किया गया है पर इसकी बुनियादी रूपरेखा स्थिर रही है।

सडबरी वैली की न्याय व्यवस्था हमारे लिए गर्व और आनन्द का विषय है। यह सुचारू रूप से चलती है और साल में सौ से अधिक शिकायतों का निपटारा करती है, कभी-कभार तो सप्ताह में दस या बीस का, बिना किसी रुकावट के, साल दर साल। इसके न्यायपूर्ण होने को लेकर स्कूल समुदाय के किसी भी सदस्य ने शायद ही कभी आलोचना की है।

इस व्यवस्था का हृदय है वह समूह जो जाँच करता है। इसे न्याय समिति कहा जाता है। इसमें हर आयु के बच्चे जुड़े होते हैं जो सारे स्कूल का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनके नाम लॉटरी से निकाले जाते हैं; प्रत्येक बैठक में स्टाफ के किसी एक सदस्य को भी चुना जाता है। समिति की अध्यक्षता न्याय क्लर्क करता है जिसे स्कूल बैठक द्वारा वर्ष में चार बार चुना जाता है।

न्याय समिति की बैठक सप्ताह में कई बार होती है। इसका काम उस शिकायत से प्रारम्भ होता है जो किसी के द्वारा लिखी जाती है और जो आरोप लगाती है कि किसी ने कोई नियम तोड़ा है।

हर सम्भव तरीके से न्याय समिति शिकायत की जाँच-पड़ताल करती है। वह गवाहों को तलब करती है, विरोधाभासी बयानों की तुलना करती है, जब तक उसे जो घटा था उसका सबसे सही रूप न मिल जाए।

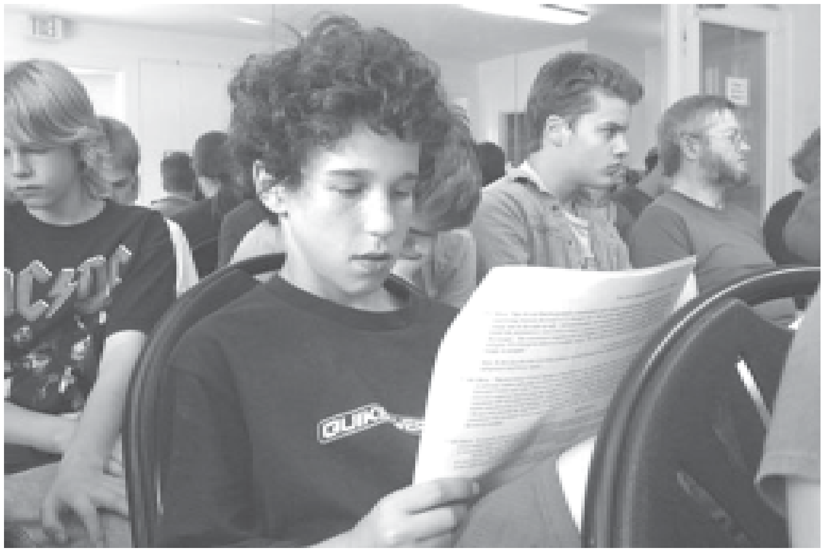

क्योंकि सभी इस प्रक्रिया का हिस्सा होते हैं, सडबरी वैली में न्याय सब के लिए होता है। इसके व्यावहारिक नतीजे होते हैं जिन्हें हर रोज़ देखा जा सकता है। लोग न्याय समिति के समक्ष जानबूझकर बिरले ही झूठ बोलते हैं, हालाँकि जो घटा वे उसके एक-दूसरे से बहुत भिन्न रूप प्रस्तुत करते हैं। आम तौर पर सभी सहयोग देते हैं।

सबसे रोचक बात यह है कि बच्चों ने समाज की आवश्यकताओं और व्यक्तिगत मामलों में अन्तर करना सीख लिया है। सभी यह जानते हैं कि संस्था के रूप में काम करने के लिए स्कूल सभी लोगों द्वारा स्कूल बैठक के ज़रिए पारित नियमों की अनुपालना पर निर्भर है। यह उसका कामकाजी पक्ष है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए इसका मतलब यह है कि सभी को कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद करनी होगी, न्यायपूर्ण फैसले करने होंगे और ईमानदार बयान देने होंगे, उस मामले में भी जिसमें कोई दोस्त लिप्त हो। जब आधिकारिक न्याय प्रक्रिया समाप्त हो जाती है, तब व्यक्तिगत पक्ष हावी हो जाता है। दोस्तियाँ पूर्ववत बनी रहती हैं, बिना व्यवधान के।

मैंने अनेक बार घनिष्ठ दोस्तों को न्याय समिति के किसी मामले में कटुता से भिड़ते देखा है; पर जैसे ही वे सत्र से निकलते हैं, वे साथ-साथ खेलने

लगते हैं या काम करने लगते हैं, मानो कुछ हुआ ही न हो। नए विद्यार्थियों के लिए, खासकर जो अन्य स्कूलों से तबादले के बाद आए हों, सडबरी वैली के इस पक्ष को स्वीकारना सबसे कठिन होता है। उन्हें 'हम बनाम वह' वाली सोच की आदत पड़ चुकी होती है, जिसके अनुसार जो कोई भी साथी विद्यार्थी के विरुद्ध गवाही देता है उसे 'विश्वासघाती' माना जाता है। नए बच्चों को इस स्थिति से समझौता करने में समय लगता है, पर अन्त में लगभग सभी यह कर पाते हैं। दूसरा कुछ हो भी नहीं सकता।

न्याय समिति के लिए शिकायत लिखने को स्कूल की बोली में 'किसी को ऊपर लाना' कहा जाता है। हम में से किसी को याद नहीं कि यह जुमला कैसे पैदा हुआ, हालाँकि इस बारे में कई सिद्धान्त हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि यह उन दिनों में गढ़ा गया होगा जब न्याय समिति की बैठक दूसरी मंज़िल में हुआ करती थी, और उसके सामने पेश होने के लिए लोगों को ऊपर ले जाया जाता था।

कुछ समय पहले एक पाँच वर्षीय बच्चे ने एक दूसरे बच्चे से, जो स्कूल में नया था, कहा, "अगर तुम यह करना बन्द नहीं करोगे तो मुझे तुम्हें ऊपर ले जाना होगा।" "तब मैं फौरन नीचे चला आऊँगा," तुरन्त जवाब आया।

स्कूल में जो अनपढ़ हैं उन्हें अपनी शिकायत लिखवाने के लिए किसी अक्षरनवीस को जुगाड़ना पड़ता है जो सुनकर लिख सके; यह प्रथा शेष दुनिया में भी अभी समाप्त नहीं हुई है। अमूमन बड़े विद्यार्थी मदद करते हैं, पर इस सेवा के लिए हमेशा ही स्टाफ के सदस्य भी उपलब्ध रहते हैं।

कभी-कभार कोई व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए न्याय उपकरणों का दुरुपयोग करने की कोशिश करता है। ऐसा वे किसी के विरुद्ध एक के बाद एक कई शिकायतें दर्ज करवाकर करते हैं – इसे उत्पीड़न कहा जाता है। न्याय समिति को यह भाँपने में ज़्यादा वक्त नहीं लगता। कोई विद्यार्थी अगर बार-बार 'ऊपर लाया जाए' तो इसके दो ही कारण हो सकते हैंः या तो वह विद्यार्थी भारी शैतान है या उसे परेशान किया जा रहा है। न्याय समिति अपने साथियों को परेशान करने वालों से दृढ़ता से निपटती है।

कई बार बच्चे भावना की गर्मी में तब शिकायत दर्ज कर देते हैं जब कोई बहस हो जाए या कोई तनावपूर्ण खेल हुआ हो। पर जब तक जाँच शुरू होती

है सबके मिज़ाज ठण्डे हो जाते हैं। तब न्याय समिति आसानी से मामले में मध्यस्थता कर लेती है या उसे खारिज कर देती है। अक्सर लोग शिकायत लिखना पूरा होने से पहले ही ठण्डा हो जाते हैं। मैंने हाल ही में ऐसे ही एक सत्र को दर्ज किया था जो कतई असाधारण नहीं हैः

"जब तुम छोटे थे..."
एक सच्ची कहानी

"क्या आप एक शिकायत लिखने में हमारी मदद करेंगे?" मैं दफ्तर के बाहर काउच पर बैठे अपने दिवास्वप्न से चौंककर जागा। मेरे सामने, मुझे कुछ झिझक से घूरते हुए, एवरी (आयु 9) व शैरॉन (7) खड़े थे। "शायद हमें मार्ज को ढूँढ लेना चाहिए।"

मैंने पल भर उन्हें देखा। "किसलिए?" मैंने पूछा। "स्किप (13) और माइकल (8) शान्त कक्ष में हमारी गतिविधि में खलल डाल रहे थे," जवाब मिला। यह सोचते हुए कि शायद मुझे उनके विरुद्ध शिकायत दर्ज करनी चाहिए कि वे शान्त कक्ष में गतिविधियाँ कर रहे हैं, मैंने जवाब दिया, "बेशक," और हम खाली दफ्तर में चले आए।

दोपहर के डेढ़ बजे थे। स्टाफ के लगभग सभी सदस्य नव-सज्जित स्टीरियो कक्ष में बन्द थे जहाँ वे ग्यारह बजे से विद्यार्थियों के साथ कक्ष के भावी उपयोग पर निर्णय लेने के लिए बैठक कर रहे थे। उनकी तुलना में मेरा काम अदना-सा था। फिर भी मैं कार्यालय की मेज़ पर कलम थामकर बैठ गया, और मैंने यथासम्भव आधिकारिक लगने की कोशिश की। एवरी मेरी दाहिनी ओर पास ही खड़ा था, शैरॉन बाईं ओर से मेज़ पर झुकी थी; दोनों मेरी हरेक हरकत को, मेरे द्वारा लिखे प्रत्येक शब्द को ध्यान से देख रहे थे। यह गम्भीर मामला था।

सामने शिकायत प्रपत्र रखकर मैं एवरी की ओर मुड़ा और बोला, "शुरू से बताओ। बिलकुल शुरू से।"

"शायद मुझे उन्हें गालियाँ नहीं देनी चाहिए थी," एवरी ने कुछ चिन्तित होकर कहा। "शायद वह गलती थी।"

"शुरू से बताओ। हुआ क्या?"

"जिम (8) और मैं खलिहान में अकेले खेल रहे थे। स्किप और माइकल आए और डेनिस (12) को छेड़ने लगे।"

"डेनिस भी वहाँ था?" मैंने जानना चाहा।

"वह अन्दर आया। तब वे आए। मैंने डेनिस को बचाने के लिए उन्हें गालियाँ दीं। मैंने उसकी मदद करने के लिए ऐसा किया।"

यह सोचते हुए कि भला डेनिस को एवरी के बचाव की ज़रूरत क्यों हुई मैंने उससे कहानी जारी रखने को कहा।

"तब उन्होंने हमारा पीछा किया। स्किप ने मेरी टोपी ले ली और हम खलिहान से बाहर भागे। डेनियल (7), जिम और मैं बच निकले।"

"डेनियल भी वहाँ था?" मैंने कहानी को एक बार फिर से लिखते हुए पूछा।

"डेनिस, माइकल और स्किप ने हमारा पीछा किया। मैं बच निकला और मैंने अपनी टोपी छीन ली। तब स्किप ने मुझे उठा लिया और मुझे खलिहान में वापस घसीट लिया, पर हम सब बच निकले।"

"एक मिनट," मैंने टोका, क्योंकि जो कुछ हुआ उसकी थोड़ी-बहुत समझ भी मैं खोता जा रहा था। "डेनिस भी तुम्हारा पीछा क्यों कर रहा था, अगर तुम उसका बचाव कर रहे थे?

"मुझे पता नहीं," एवरी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। अब शब्द एक उत्तेजक वर्णन के रूप में झरे आ रहे थे। उसकी आँखें चमक रही थीं। उसे रोका नहीं जा सकता था।

"तब हमने मुख्य भवन की ओर भागने की कोशिश की और उन्होंने जिम को खेल अलमारी में बन्द कर दिया और डेनियल दौड़ा और उसने मुझे बताया और मैं जिम को बचाने गया। मैंने यों ढोंग किया मानो मैं उसे बन्द करने में उनकी मदद कर रहा हूँ, पर मैंने असल में ऐसा नहीं किया और वह भाग निकला और मैं अन्दर था, पर मैं निकल गया।"

इस पल जिम दफ्तर में घुसा और शैरॉन के पास खड़ा हो गया। वह प्रसन्न और शान्त था। मुझे वह कतई ऐसा व्यक्ति नहीं लगा जो कष्टदायक अनुभव से गुज़रा हो।

एवरी अपनी रौ में था। मैं उसकी ओर मुड़ा और पूछा, "क्या तुम्हें मज़ा आया?" वह खिलखिलाकर हँसा। "हाँ," उसने कहा। "और तुम्हें?" मैंने जिम से पूछा। "हाँ। मैं कोई शिकायत नहीं लिखना चाहता।"

"पर उन्होंने हमारी गतिविधि में रुकावट डाली थी," एवरी ने विरोध किया।

"कौन-सी गतिविधि?" मैंने पूछा।

"मैजिक शो।"

मैंने उस दिन किसी जादू के खेल की बात नहीं सुनी थी। यह जानते हुए कि मैं खुद को फँसा रहा हूँ, मैंने भोलेपन से पूछा "कौन-सा मैजिक शो?"

"शैरॉन और सिंडी (7) का," एवरी ने जवाब दिया।

इस बीच डेनियल भी आ चुका था। वह प्रसन्नचित था। शैरॉन जो पूरे समय चुप पर चौकन्नी थी, उसका नाम सुन सजग हो गई। "हमने उन्हें लतियाकर कमरे से निकालने की कोशिश की, पर वे जाते ही नहीं थे," उसने उत्तेजना से भरकर कहा। "तब हमने उन्हें धक्का दिया।" "और मैंने उन्हें भगाने की कोशिश की," एवरी ने सुर मिलाया। डेनियल मुस्कुरा रहा था। जिम संजीदा था।

"क्या मैं शिकायत फाड़ सकता हूँ?" जिम ने पूछा।

शैरॉन ने खीसें निपोरीं। डेनियल मुस्कुराया। मैंने एवरी से पूछा, "शिकायत बनी रहे तो क्या होगा?"

"वे ऐसा करना बन्द कर देंगे," उसने स्कूल की न्याय व्यवस्था के प्रभावकारी होने में भारी आस्था जताते हुए कहा।

"क्या तुम चाहते हो कि वे ऐसा करना बन्द कर दें?" मैंने पूछा।

"नहीं," उसने ज़ोर से हँसते हुए कहा।

जिम ने शिकायत फाड़ डाली। सब सन्तुष्ट थे। तब बाहर निकलने की तैयारी करते हुए एवरी मेरी ओर चौड़ी मुस्कान के साथ मुड़ा और उसने मुझसे पूछा, "जब आप छोटे थे, तो क्या आपने भी ऐसे कारनामे किए थे?"

जब से न्याय व्यवस्था स्थापित हुई है, केवल एक ही विद्यार्थी को खराब आचरण के लिए स्कूल बैठक द्वारा स्कूल से निकाला गया है। व्यवस्था की सफलता के विषय में कोई दूसरा आँकड़ा इतनी प्रभावी गवाही नहीं दे सकता। सच यह है कि सडबरी वैली में सबको न्याय मिलता है। किसी को सत्ता का डर नहीं, किसी को वयस्कों, या शिक्षकों, या किसी दूसरे से डरने की ज़रूरत नहीं। लोग स्कूल समुदाय के समस्तरीय सदस्य की तरह एक-दूसरे की आँखों में झाँक सकते हैं। सबको यह विश्वास है कि यहाँ आज़ादी ऐसी न्याय व्यवस्था द्वारा सुरक्षित है जो आयु, लिंग या पद के प्रति अन्धी है। कोई भी दूसरी चीज़ स्कूल से सम्बन्धित होने पर मुझे इतना गर्वित नहीं करती।

* * *

36

विषय का मर्म

जब सब कुछ कह दिया जाए और कर दिया जाए, जब सारे शब्द पढ़ लिए जाएँ और चित्रों का अध्ययन कर लिया जाए, यह सवाल तब भी बना रहता है: सडबरी वैली दरअसल कैसा है? वह लगता कैसा है? वहाँ दरअसल होता क्या है?

पहली नज़र में यूँ ही देखने वाले को भी कई बातें नज़र आती हैं। यहाँ हर ओर बच्चे हैं। यही उस 'सतत मध्यावकाश' की छवि बनाता है जिसके बारे में हम अक्सर सुना करते हैं। बच्चे स्वतंत्र, सक्रिय और जीवन्त हैं, और शोरगुल करते हैं।

यहाँ की स्थितियाँ इन छवियों को और मज़बूत करती हैं। स्कूल एक पुरानी जागीर के परिसर में है जो गृहयुद्ध के अन्त में बनाई गई थी। ज़्यादातर इमारतें अभी भी अपनी मूल अवस्था में हैं। दीवारें ग्रेनाइट की हैं, जो सेलम एंड रोड पर स्थित स्थानीय फ्रेमिंग्हैम खान से निकाले गए थे। यह खान कब की बन्द हो चुकी है। इस इलाके में ग्रेनाइट के भवन बिरले हैं, और ये असाधारण मज़बूती की छाप छोड़ते हैं – यह छाप स्कूल की आत्मा में अन्दर तक समाई हुई है।

पसरे मैदान, पेड़, झाड़ियाँ, जंगली फूल, तालाब, बाँध और चक्की भवन, खलिहान और अस्तबल – सभी ग्राम्य सौन्दर्य की छटा में अपना योगदान देते हैं। आखिर फ्रेमिंग्हैम एक व्यस्त कस्बा है जहाँ बड़ा उद्योग, व्यापार, विशाल

शॉपिंग मॉल, आवासीय परियोजनाएँ, राज्य मार्ग और चुंगी नाके हैं – शहरी और अर्धशहरी जीवन के सभी लक्षण। यह वास्तविकता स्कूल पर छाई रहती है, उसे घेरती है; पर स्वयं स्कूल कस्बे के उस कोने में बसा है जिसे प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेने के लिए सावधानी से सुरक्षित रखा गया है। स्कूल परिसर से सटा एक राजकीय पार्क है और स्थाई न्यास द्वारा संरक्षित एक विशाल भूखण्ड भी; ये स्कूल के स्वाभाविक प्राकृतिक सौन्दर्य में योगदान देते हैं।

पर हम इंग्लैंड के किसी महल या न्यूपोर्ट के किसी विशाल भवन में नहीं हैं। हमारा माहौल दिखावटी और भारी धन-सम्पत्ति का नहीं है, जिसे ऊपरी तबके की भव्यता को बनाए रखने के लिए सावधानी से संरक्षित किया गया हो। नैथेनियल बाउडिच, मैसाच्यूसेट्स का प्रसिद्ध नाविक, जिसकी तालिकाएँ और मार्गदर्शिकाएँ आज तक नाविक किंवदन्तियों का हिस्सा हैं, रोज़मर्रा की दुनिया का व्यक्ति था। उसकी यह सम्पत्ति एक सक्रिय फार्म थी, किसी कुलीन का एकान्त स्थल नहीं। यह जगह सहज ढंग से बुढ़ाई है, पर यह एक साधारण मज़दूर की तरह बुढ़ाई है न कि किसी राजकुमार की तरह। टूट-फूट के अपरिहार्य लक्षण यहाँ नज़र आते हैंः दीवारों और छतों पर दरारें, घिसी हुई टाइलें – ऐसी चीज़ें जो अच्छे रखरखाव से बचाई नहीं जा सकतीं, उसी तरह जैसे बुढ़ापे की झुर्रियों वाली चमड़ी क्रीमों और लेपों से बच नहीं पाती। भवन गरिमा के साथ बूढ़ा हुआ है, पर फिर भी बूढ़ा तो है ही, और एक ऐसा वातावरण उसमें फैला रहता है जैसे कि उसका इस्तेमाल किया गया हो, ठीक उसी तरह जैसे वास्तविक दुनिया में वास्तविक लोग रहते हैं।

इस प्रभाव को बढ़ाती है इसकी साज-सज्जा, जो बिलकुल बुनियादी और घरेलू-सी हैः मेज़ें, कुर्सियाँ, काउच, हत्थेदार कुर्सियाँ, सभी वे चीज़ें जिनकी उम्मीद किसी घर से रखी जाती है। और सब कुछ ऐसा है जो इस्तेमाल में लाया गया है। हाँ, बिलकुल ऐसा, इसलिए भी क्योंकि उसे या तो इस्तेमाल के बाद खरीदा गया है या वह किसी के द्वारा हमें दिया गया है। अतः एक बार फिर यह इन्सानी उपयोग के संकेत देता है। इसके फलस्वरूप यहाँ की भौतिक स्थितियाँ हम में से उन लोगों में जो स्कूल में समय बिताते हैं, दो भिन्न पर परस्पर पूरक भावनाएँ जगाती हैंः सहजता, क्योंकि हम अपने परिवेश की चीज़ों के उपयोग को लेकर पूर्णतः सहज हैं, जिनका उपयोग रोज़मर्रा की

चीज़ों की तरह होता है जो कि वे हैं; और सावधानी, क्योंकि हम समझते हैं कि इन चीज़ों का मज़ा हम तब ही ले सकते हैं जब उनका उपयोग हम उनका खयाल रखते हुए करें।

सहजता और सावधानी, सडबरी वैली के मानक। यहाँ लोग आराम से हैं, नाराज़, तनावग्रस्त या चिन्तित नहीं। उनकी भौंहें तनी हुई नहीं, सपाट होती हैं, आँखें धूमिल नहीं, साफ हैं। बिरले ही लोग आँखें चुराते हैं। और सब परवाह करते हैं। वे दूसरों की परवाह करते हैं – अपने दोस्तों की, सहपाठियों की, स्टाफ की, माता-पिता की, आगन्तुकों की। चाहे कोई भी क्यों न हो, ज़रूरत पड़ने पर सब मदद को आगे आते हैं। उन्हें स्कूल की परवाह है, उसे जीवित और कार्यरत रखने की, उसकी आवश्यकताएँ पूरी करने में मदद करने की।

जो भी स्कूल में आता है इन भावनाओं से अनभिज्ञ नहीं रह सकता। वे हर जगह हैं, और फौरन नज़र आती हैं।

हर चीज़ पर निलम्बित समय का भाव मँडराता है। लोग व्यस्तता से आते-जाते दिखते हैं, पर कोई ताबड़तोड़ जल्दी में नहीं होता। घड़ियाँ कम हैं, गुज़रते घण्टों का एहसास करवाने वाला कुछ नहीं है।

लोग मर्ज़ी से आते-जाते हैं, जल्दी या देर से। अगर उस समय आना चाहते हैं जब कोई नहीं होता, तो उन्हें स्कूल की चाबी मिल जाती है, उस खज़ाने की चाबी जो यह स्थान उनके लिए बन चुका है। कोई भी यह सोचने को रुकता नहीं कि प्रत्येक चाबी भरोसे का प्रतीक है।

विश्वास भी हर जगह है, और हर जगह नज़र आता है। सबकी चीज़ें बिना चौकीदारी के रहती हैं, दरवाज़ों पर ताले नहीं लगते, सभी उपकरण असंरक्षित व सब के लिए उपलब्ध होते हैं। कैसी पागल जगह है यह, हमारा सडबरी वैली! खुला प्रवेश – कोई भी दाखिल हो सकता है। और दहलीज़ पार करते ही उस ऊष्मा और विश्वास का तत्काल हिस्सा बन सकता है जो यह स्कूल है।

कई मायनों में स्कूल एक समुदाय है, बावजूद इस तथ्य के कि यह आवासीय स्कूल नहीं है, न ही किसी घनिष्ठ समूह का उत्पाद। दूर-दराज़ के सदस्य अजनबियों की तरह आते हैं। वे मित्रों की तरह ठहरते हैं। क्रमशः, अपनी ही गति से, हमारे द्वारा उकसाए या प्रोत्साहित किए बिना, माता-पिता

एक-दूसरे से परिचित होते हैं और दोस्तियाँ बनती हैं। बच्चे स्कूल के परे भी एक-दूसरे का साथ तलाशते हैं, ऐसे रिश्ते गढ़ते हैं जो कइयों के लिए जीवन भर कायम रहेंगे।

स्कूल काफी कुछ गाँव की तरह है – अतीत का और भविष्य का गाँव। सम्बन्ध स्वतंत्रता से बनाए जाते हैं, सभी गतिवान हैं, पर जड़ें गहरी हैं, जो तब तक पोसती हैं जब तक हम ज़िन्दा रहें। स्नातक पाँच, दस, पन्द्रह साल बाद लौटते हैं, हमेशा सहजता से, हमेशा गरमागरम स्वागत के बीच। वे हमारा हिस्सा बने रहने की उम्मीद रखते हैं, और हमारी यही उम्मीद होती है। इसमें कुछ भी अटपटा या विचित्र नहीं होता।

स्कूल के आवासियों की सामूहिक चेतना में भूत, वर्तमान और भविष्य साथ-साथ पिघलकर घुलमिल जाते हैं। बच्चे पूर्व के कारनामों के किस्से सुनते हैं और एक दिन वह नायक मिलने चला आता है, और सीधे उनके दिलों में उतर जाता है। "आप फलाँ-फलाँ हो, जिसके बारे में मार्ज ने हमें इतनी कहानियाँ सुनाई हैं?" वे साथ बैठ, पुरानी स्मृतियों के बदले वर्तमान के किस्से सुनते हैं, तब लौट जाते हैं, नैसर्गिक धारा में मुक्त रूप से बहते हुए।

फिर भी, स्कूल का हिस्सा बनने के लिए किसी व्यक्ति में कोई बुनियादी बदलाव की दरकार नहीं पड़ती। किसी प्रकार की स्वामिभक्ति की माँग नहीं की जाती; किसी प्रकार की अनुरूपता नहीं चाही जाती; सार्वजनिक आवश्यकताओं के नाम पर किसी निजी सपने का समर्पण नहीं। सडबरी वैली इस बात का ज़िन्दा प्रमाण है कि मुक्त लोग, जब वे स्वेच्छा से मिलें, और उन्हें अपने सहकर्मियों के सहयोग और सम्मान के साथ अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को हासिल करने का मौका दिया जाए, तो वे ऐसे रिश्ते, ऐसी प्रतिबद्धताएँ और ऐसी मित्रताएँ बनाएँगे जो उतनी ही मज़बूत हों जितनी किसी भी व्यक्ति ने कभी भी जानी हों। नुस्खा बड़ा आसान हैः एक भाग आज़ादी, एक भाग सम्मान, एक भाग ज़िम्मेदारी, एक भाग सहयोग, सब को मिलाकर रख दो और तैयार होने तक पड़ा रहने दो। कोई भी रसोइया इसी सफलता से इसकी नकल कर सकता है।

क्या अब आपको स्कूल का बेहतर एहसास हो सका है?

* * *

उपसंहार

खीर का प्रमाण

सब के लिए आखिरकार वह समय आता है जब वे सडबरी वैली छोड़कर अपने बलबूते दुनिया में निकलते हैं। उनके जीवन में बाद में जो कुछ घटता है उससे उनके स्कूली शिक्षण के प्रभावकारी होने का संकेत मिलता है।

कई विद्यार्थी चाहते हैं कि जब वे अन्ततः जाएँ तब उनके हाथ में हाई स्कूल का प्रमाणपत्र हो। स्कूल खुलने के बाद हमें साल भर से अधिक यह तय करने में लगा कि यह डिप्लोमा दिया कैसे जाए।

हम डिप्लोमा को साधारण मानदण्डों पर आधारित नहीं कर सकते थेः ग्रेड, पाठ्यक्रम, अंक, तथा सफल स्कूली काम में बिताए वर्ष। इस प्रकार की उपलब्धियों की यहाँ माँग ही नहीं की जाती; ना स्कूल ना ही विद्यार्थी इनके किसी खास समूह को मूल्यवान समझते थे।

डिप्लोमा की अवधारणा ही हमें अपने आदर्शों के विरुद्ध लगती थी। डिप्लोमा स्कूल द्वारा दिया गया आधिकारिक प्रमाणन होता हैः क्या यह एक तरह का मूल्यांकन नहीं है, जिससे हम बचना चाहते हैं?

आखिरकार हमें एक सन्तोषजनक समाधान मिल ही गया। केन्द्रीय विचार सरल थाः हमारा मुख्य लक्ष्य था बाहर की दुनिया में ऐसे विद्यार्थी भेजना जो एक मुक्त समाज में जीवन की चुनौतियों से पूरी ज़िम्मेदारी से निपट सकें।

डिप्लोमा प्रदान करने के लिए हमने इसी लक्ष्य को संस्थागत रूप दिया।

स्नातक होने का औपचारिक प्रमाणपत्र चाहने वाले विद्यार्थियों को स्कूल समुदाय के सामने खड़े होकर इस तर्क का बचाव करना पड़ता है कि व्यापक समुदाय में ज़िम्मेदार नागरिक बनने के लिए वे तैयार हैं। उन्हें ऐसी प्रस्तुति करनी पड़ती है जो सूझबूझ भरी हो और उनकी पीढ़ी के लोगों और सहकर्मियों को वाजिब लगे। यह वे कैसे करें, यह उन पर छोड़ दिया जाता है; अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए वे जैसी मदद चाहें माँग सकते हैं।

अपनी प्रस्तुति करने के बाद, बैठक में उन्हें सुनने के लिए आए लोगों द्वारा उन्हें चुनौती दी जा सकती है। ये चर्चाएँ काफी आवेगपूर्ण हो सकती हैं। सत्र खत्म होने के बाद, यदि विद्यार्थी को लगता है कि उसकी प्रस्तुति जायज़ है तो वह डिप्लोमा के लिए आवेदन दे सकता है।

स्कूल को अपने अनुमोदन का मत देना पड़ता है। क्या यह किसी प्रकार का मूल्यांकन है? बेशक यह है। यह ऐसा मूल्यांकन है जिसकी विद्यार्थी ने स्वयं साफ-साफ माँग की है, तथा उस क्षेत्र से सम्बन्धित है जिससे निपटने की इच्छा हम रखते हैं।

डिप्लोमा की प्रक्रिया कठिन है। पहली कुछ प्रक्रियाओं से गुज़रने के बाद स्टाफ के कई सदस्यों ने एक-दूसरे से कहा, "मुझे खुशी है कि मुझे इससे गुज़रने की ज़रूरत नहीं है।" कुछ विद्यार्थियों ने इस चुनौती को अपने लिए तब चुना जब वे महज़ सोलह साल के थे, पर अधिकतर सत्रह या अठारह वर्ष के विद्यार्थी ही इसकी कोशिश करते हैं। इतने सालों में केवल एक ही व्यक्ति ने धोखा देकर डिप्लोमा पाने की कोशिश की। स्कूल ने उसके छल को भाँप लिया और उसे बिना डिप्लोमा ही निकलना पड़ा। दस वर्ष बाद उसने हमें धन्यवाद दिया कि हमने उसे स्वयं को छलने में सफल नहीं होने दिया था।

कई विद्यार्थी बिना डिप्लोमा के ही दुनिया में निकल पड़ते हैं। हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि स्कूल में बिताए समय ने उनके आन्तरिक संसाधनों को इतना सम्पन्न बना दिया है कि सार्थक जीवन जी पाने की उनकी तैयारी पूर्ण हो गई है।

वैसे, अब तक तो अपने पूर्व विद्यार्थियों के कारण स्कूल का अच्छा-खासा

रिकॉर्ड भी है।

इनमें से कई कॉलेजों में और अन्य प्रकार के उच्चतर प्रशिक्षण के लिए जा चुके हैं। एक भी ऐसा विद्यार्थी नहीं है जो किसी कॉलेज में दाखिला चाहता हो पर पाने में असफल रहा हो; अधिकांश को अपनी प्राथमिकता सूची के पहले स्थान वाले कॉलेज में ही प्रवेश मिल जाता है। जैसा कि हमने सोचा था ठीक उसी के अनुरूप, उनकी अपरम्परागत शिक्षा-दीक्षा ने कॉलेज प्रवेश अधिकारियों की दृष्टि में उन्हें नुकसान पहुँचाने की बजाय उनका फायदा ही किया है। यह बात विद्यार्थी के पास डिप्लोमा हो या न हो, दोनों ही स्थितियों में लागू रही है।

अन्य विद्यार्थी स्कूल से निकल सीधे किसी धन्धे में जा लगे हैं। वे कई तरह के काम कर रहे हैंः वे प्रशासक, मेकैनिक, संगीतकार, शिल्पकार, विक्रेता, तकनीकविद्, डिज़ाइनर आदि हैं। जिन लोगों ने अध्ययन जारी रखा वे भी कई तरह के पेशों में चले गए हैं। हमें कुछ भी आश्चर्यचकित नहीं करता।

उस समय बड़ा सन्तोष होता है जब अपने किसी स्नातक को, जिसकी विशेषता भू-परिदृश्य हो, बुलाकर हमारे घरों या स्कूल के लिए काम करने को आमंत्रित किया जाए। या जो स्नातक काइरो-चिकित्सक हो उससे उपचार का समय लिया जाए। शायद जल्दी ही हम में से किसी को मृतक संस्कार विशेषज्ञ की ज़रूरत भी पड़े।

स्कूल की विरासत की एक खासियत है पूर्व विद्यार्थियों में आम तौर पर अपने जीवन में आगे बढ़ने के बावजूद अहंकार का न होना। स्कूल ने हमेशा सायास किसी भी काम के ऊँचा या नीचा होने का आभास नहीं दिया है। यहाँ कोई 'ट्रैक' नहीं हैं, कोई नहीं है जो कहे कि कॉलेज अध्ययन की तैयारी सर्वश्रेष्ठ है, कि व्यापार का प्रशिक्षण उससे एक पायदान नीचे है, या कि व्यावसायिक प्रशिक्षण बुद्धुओं के लिए है। स्कूल में सब कुछ हमारे इस विश्वास का एहसास करवाता है कि कोई भी मानवीय रुचि मूल्यवान प्रयास है, फिर चाहे केवल इसलिए ही क्यों नहीं कि उसे स्वतंत्रता से चुना गया है और सच्ची आन्तरिक इच्छा से अपनाया गया है। हम जो अन्तर करते हैं वह सतही रुचि और गहन रुचियों में है, 'सार्थक' और 'निरर्थक' के बीच नहीं।

इसके परिणामस्वरूप स्कूल में सभी सामंजस्यपूर्ण वातावरण में साथ-साथ जीते हैं, फिर चाहे वे कुछ भी क्यों न करते हों। और यह नज़रिया हमारे विद्यार्थियों के साथ आजीवन रहता है और उन्हें दूसरों के साथ सहज बनाता है, फिर चाहे उन्होंने कोई भी पथ क्यों न चुना हो।

हमारे पूर्व विद्यार्थियों पर अध्ययन किए गए हैं, और समय गुज़रने पर और भी किए जाएँगे। ये अध्ययन बताते हैं कि हमारे पूर्व विद्यार्थी, मोटे तौर पर स्वतंत्र समेकित व्यक्ति हैं जिनमें आत्म का एहसास है जो उन्हें जीवन में लक्ष्य प्रदान करता है।

पर जो साझा सूत्र उन सबको जोड़ता है वह यह एहसास है कि उनके विकास के वर्ष उनसे छीने नहीं गए थे। सडबरी वैली में वे अपने बचपन को उतनी देर तक बरकरार रख सके थे जितनी देर तक उन्होंने उसे रखना चाहा था, और उसे उन्होंने उन अद्‌भुत नमूनों में बुना जो केवल बच्चे ही रच सकते हैं। हमने उन्हें जो सबसे बड़ी सौगात दी, वह यह थी कि हमने उन्हें अकेले छोड़ा। जो सच में उनका था उसे न चुराने के कारण हमने प्रत्येक के लिए उससे कहीं अधिक किया जो 'मददगार' लोगों की पूरी फौज भी नहीं कर सकती थी।

जिन बड़ों ने अपना बचपन हमारे साथ बिताया उनके लिए यही हमारी विरासत है।

टिप्पणी

सम्बन्धित व्यक्तियों की निजता सुरक्षित रखने के लिए सडबरी वैली के सभी विद्यार्थियों के जो नाम पुस्तक में दिए गए हैं, वे बदले हुए नाम हैं।

* * *

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास व शाहपुर (बैतूल) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्कः books@eklavya.in
एकलव्य फाउंडेशन फॉर्च्यून कस्तूरी के पास जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)

अब हम आज़ाद हैं

सडबरी वैली स्कूल

1968 में कुछ अभिभावकों और शिक्षकों ने मिलकर मैसाच्यूसेट्स, अमेरिका के फ्रैमिंग्हैम नामक कस्बे में एक अनोखा प्रायोगिक स्कूल शुरू किया। इस स्कूल का नाम है सडबरी वैली स्कूल और इसमें 4 वर्ष से लेकर 19 वर्ष की उम्र के बच्चे आते हैं। स्कूल में स्टाफ है, पुस्तकालय है और वो सब साज़ो-सामान है जो बच्चों के पढ़ने या सीखने के लिए ज़रूरी होता है। पर न तो कोई पाठ्यक्रम है, न पाठ्यपुस्तकें हैं और न ही कोई निर्धारित समयसारिणी है।

यहाँ बच्चों को अपनी गति से पढ़ने-सीखने के लिए छोड़ दिया जाता है। वे चाहें तो पढ़ें, या फिर चित्र बनाएँ, या कम्प्यूटर के आगे बैठें, या स्कूल के तालाब में मछली पकड़ें, या पेड़ों पर चढ़ें, या वर्कशॉप में बढ़ईगिरी या ऐसा ही कोई और काम करें, या किसी संगीत वाद्य को बजाना सीखें। स्कूली वर्षों में उन्हें क्या करना है, यह बच्चों को खुद ही तय करना होता है और अध्यापक उनकी मदद के लिए उपलब्ध रहते हैं; पर वे तब ही उनकी मदद करते हैं जब बच्चे मदद माँगते हैं। कोई विषय अनिवार्य नहीं। फिर भी बच्चे किसी एक या एकाधिक विषयों का गम्भीर अध्ययन करने के बाद ही इस स्कूल से निकलते हैं।

स्कूल के एक अध्यापक द्वारा लिखी यह प्रसिद्ध पुस्तक इसी स्कूल की कहानी कहती है।

ISBN: 978-93-81300-71-8

9 789381 300718

एकलव्य

मूल्य: ₹ 100.00

A0201H

parag SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित